पंडित श्रीकांतिविजयजी विरचित

शील सत्त्व माहात्म्यमय

श्री महाबल मलया सुंदरीनो रास.

यथामति शुद्ध करीने

सम्यक् दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थे

श्रावक भीमसी माणकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्यें

शान्ति सुधाकर प्रेसमां छपावी

प्रसिद्ध कर्यो छे.

(आवृति बीजी)

संवत् १९६३ महासुद १ सने १९०७

॥ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ पंडित श्रीकांतिविजयजी कृत ॥
॥ श्री महाबल मलयसुंदरीनो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुख संपदा, पूरण परम उदार ॥ आदीसर आनंद निधी, प्रणमु प्रेम अपार ॥ १ ॥ फणी मणि मंडित नील तनु, करुणारस भरपूर ॥ पारस जलधर पल्लवो, बोध बीज अंकूर ॥ २ ॥ शासन नायक साहेबो, गिरुउ गुण विलसंत ॥ हरिलंछन हियमे धरुं, महावीर भगवंत ॥ ३ ॥ गणधर मुख संरूप व से, अविहड महिमा जेह ॥ अंतर तिमिर विनासिनी, समरुं सरसति तेह ॥ ४ ॥ चउमंगल वरत्यां हवे, प्रगट्यो वचन प्रकाश ॥ निज इछा पूर्वक पणे, भाषुं वारु भास ॥ ५ ॥ धर्म सहित कौतुक कथा, कवि ता कहेतो सार ॥ निज जीहा पावन करे, विकसे मति परिचार ॥ ६ ॥ ॐकार धुर संठव्यो, चउवेदा चोसाल ॥ तिम पुरुषारथ धुर धरयो, धर्म एक सु र साल ॥ ७ ॥ दुरगति पडता जीवने, धारणथी ते ध

नुसम्पद भूमिका, ते साधे हो चक्री गोपाल ॥ जं० ॥ २ ॥
ता रूण नाग चंद्रावती, नगरी तिहां हो गाजे निकलं
संवे ॥ अलकापुरि ऊपर गई, लंकावली हो सायर जस
नायक ॥ जं० ॥ ३ ॥ विस्तर चहुटा चिहुं दिसें, चोरा
। १। हो चावा जिहां खास ॥ सायर तजी जल दूध
॥ , जाणे लखमी हो तिहां कीधो निवास ॥ जं० ॥
११ ४ ॥ फटिक रतनमय सौधनी, रुचि उज्जल हो प
नगरे अभिराम ॥ अंधारें पख पण नहीं, तिणे रहेवा
१२। क्षण तिमिरनो गास ॥ जं० ॥ ५ ॥ किहां कणें
॥ सर चंद्रकांतनां, प्रतिबिंबे हो तिहां चंद्र मरीच ॥ अ
॥१३वल जल परनालना, वरसालो हो परगट करे सी
॥ ता ॥ जं० ॥ ६ ॥ गयणंगणतल पूरती, अटारी हो
१४ ंची कैलाश ॥ गोखें गोखें रहे गोरडी, जाणे अपछर
सुणा करे रंग विलास ॥ जं० ॥ ७ ॥ मरकत विद्रुम
ांचने, कै रचिया हो मंदरना जाल ॥ दिसि दिसि तेज
शी ।लामके, होये दिन दिन हो सुर धनुष अकाल ॥
स॥ जं० ॥ ८ ॥ कुंकुम मृगमद वासीया, जलपूरें हो
जोगगें प्रनाल ॥ भमर भमे रसीया परें, रस लंपट
े दोइ करता ढक चाल ॥ जं० ॥ ९ ॥ गढविंटी चिहु
व नहुसि पुरी, परिपूरी हो सुखी ए सविलोग ॥ डुखिया

आलंबन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवला जोग ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो विषहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, मंकदीजे हो सुर मंदिर गाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो केसें ठव्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥ ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल जरयां, के दर्प्पण हो दिसिनां मनुहार ॥ जोगी जमर जीले घणा, घण महके हो कमलोनो सार ॥ जं० ॥ १३ ॥ वनवासी आरामनी, उबि नीली हो अरुती चिहुं उर ॥ स्वर्गपुरी जीतण जणी, कसी जीड्यो हो बखतर हठ जोर ॥ जं० ॥ १४ ॥ अतुलबली बली नृप समो, रिपुमृगने हो त्रासन जे सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुणवंत अबीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या, रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूंज ॥ वनफल जखी निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥ ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख एहने हो सरसती विलसंत ॥ विण आदर रहवो किशो, जस कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० १७ ॥ हेलें धनुष नमाडतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहां, करे राजा हो निज राज संन्नाल ॥ जं० ॥ १७ ॥ देशावर नृप नेटणा, बहु आवे हो हय गय रथ कोमि ॥ चतुरंगी सेनाधणी, नवि आवे हो तेहनी कोइ जोमि ॥ जं० ॥ १ए ॥ कोमल चंपक दल जिसी, घर राणी हो रतिने अनुहार ॥ चंपकमाला तेहने, शीलादिक हो गुण मणि नंमार ॥ ॥ जं० ॥ २० ॥ बीजी कनकवती अछे, सोहागिण हो नृप प्रेम निधान ॥ विलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो बे चढते वान ॥ जं० ॥ २१ ॥ पुर वर्णनी परगमी, इम कांते हो कही पहेली ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी करी, आगल बे हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पालें प्रजा, निज संतति परें तेह ॥ दुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥ एक दिन चिंतातुर थइ, बेठो तेह नूपाल ॥ अतिहिं आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आदर नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ बोमी ठय लें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जांखुं थयुं, दुरबल थयुं शरीर ॥ चिंता मायणी आगलें, धीरज कुंण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता मायणि

मनवसी, क्षण क्षण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी जे संचीउं, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ता प्यो घणुं, न सुणे केहनी वात ॥ अन्न उदक रुची परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपकमाला पे खीउं, इणे अवसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणे ति हां, सभ्रम चर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उन्नी रही, धरती राग विशेष ॥ करजोमी बोली प्रिया, इ णीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोमी मंत्रि कहे ॥ ए देशी ॥

॥ करजोमी राणी कहे, अरज सुणो महाराज हो प्रीतम ॥ पूछुं छुं छंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १ ॥ बोलो नहीं मन मेलवी, खोलो नहीं सदभाव हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ २ ॥ थइबेठा अण उलखू, न धरो कांइ सने ह हो ॥ प्री० ॥ वारी जाउं लखवार हूं, मुजरो ल्यो गुण गेह हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ३ ॥ दासी हुं पा यें पडुं, थें म्हारा सिरना मोड हो ॥ प्री० ॥ थें जी वणरी उषधी, कुंण करे तुमची होड हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ४ ॥ किम सरसे बोल्या विना, प्रगटे छे अ

म ताप हो ॥ प्री० ॥ मौन लीउं केणे कारणे, चिं
तातुर थइ आप हो ॥ प्री० कर० ॥ ५ ॥ केणे तु
म कथन कीउं नहीं, कुणे डुहव्या महाराय हो ॥
प्री० ॥ के कांता कोइ दिल वसी, चिंतो तास उपा
य हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ६ ॥ के कोइ अरिअण
जागीउं, चिंता पेठी तास हो ॥ प्री० ॥ के जोगी
जंगम मल्यो, कीधा तेणे उदास हो ॥ प्री० ॥ क
र० ॥ ७ ॥ के कोइ बाधा उपनी, अंगे जीवन प्रा
ण हो ॥ प्री० ॥ के इणे वेला सांचरयो, अरिअण
वयरी पुराण हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ८ ॥ कवण अ
बे ते राजीउं, जे बांधे तुमसुं तेग हो ॥ प्री० ॥ पं
चायण गिरि गाजते, मृग नासे करे वेग हो ॥ प्री०
॥ कर० ॥ ए ॥ के केणे डुरजने चाखीउं, अणहूंतो
अम दोष हो ॥ प्री० ॥ के किणहिक अपहरि
लीउं, नवलो लखमी कोश हो ॥ प्री० ॥ कर०
॥ १० ॥ के मनमान्यो सांचरयो, परदेशी कोइ मित्त
हो ॥ प्री० ॥ सुरत समयनुं बोलकुं, के खटक्यो को
इ चित्त हो ॥ प्री ॥ कर० ॥ ११ ॥ के मारग सं
वेगनो, जेदाणुं सरवंग हो ॥ प्री० ॥ मनमेलु साचुं
कहो, आशय एह अनंग हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥

१२ ॥ यद्यपि न जांजे अम थकी, चिंता मोटी कांय हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें विंहचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुण्या धरणी धवे, हृदयें स्त्रीना बोल हो ॥ प्री० ॥ सरिसा मन जेदन जला, मधुरा अमृतनें तोल हो ॥ प्री० ॥ ॥ कर० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रतें, ए थइ बीजी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन ते त्रिया, जे लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी उद्वेग जर, बोल्यो तव जूपाल ॥ चिंता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥ जे तें पूब्या विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥ शुद्ध स्वजावे सर्वथा, तिण वातें निश्चिंत ॥ २ ॥ ए मुज चिंता उमटी, अकस्मात बलवंत ॥ मूल थकी मांकी कहूं, सुपरें सवि विरतंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धिगधिग विषय विटंबना ॥ ए देशी ॥

॥ इण पुरमां व्यवहारिया, निवसे ढे गुणवंतो रे ॥ लोजनंदी लोजाकरा, बे जाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धिगधिग लोज विटंबना, लोजे लक्षण जाय रे, लोजे नर पीमा लहे, लोजे डुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

बांधव नेह धरे घणुं, सांहो मांहे वेहो रे, जेद न पामे ए कदा, खीर नीर परें तेहो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ लोत्नाकरने सुत थयो, नाम दीर्ध गुणवर्म्मा रे ॥ सोत्ननंदी परण्यो फरी, पण सुत नही पूरव कर्म्मा रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ एक दिवस बेठा मली, हाटें व हु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, आयो तेथ तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जड प्रकृति जलो रह्यो, तेहने को न पिढाणे रे ॥ दीठो शेठें एकलो, उत्तम पुरुष प्रमाणे रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ बोलाव्यो गौरव पणे, आगत स्वागत कीधो रे ॥ आदरसुं आगल जलो, आसण बेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूढे शेठ किं हां रहो, किम आव्या इण गामे रे ॥ जात किसी ढे तुमतणी, नीकलिया किणे कामे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ कहे पंथी क्षत्रि अबुं, परदेशी असहायो रे ॥ देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां आयो रे ॥ धि० ॥ ए ॥ शेठें निजघर तेडीर्ध, जोजन जगत जलेरी रे ॥ कीधी वली केइ दिन लगें, राख्यो जातो घेरी रे ॥ धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हलि मलि रह्यो, अंतर कांइ न राखे रे ॥ देश विदेश तणी घणी, वात जली ज ली जाखे रे ॥ धि० ११ ॥ अन्य दिवस कहे पंथी

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पाछी देजो शेठजी, जिण दिन फरी मागीजे रे ॥ धि० ॥ १२ मुखमुद्रा गाढी करी, शेठ तणे कर दीधी रे ॥ ऊंची बांधी तुंबडी, हाट मांहे तेणे सीधी रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ बे साइने तेणे कह्यो, करजो एहनी संभाल रे ॥ ते कहे हुं जीव न समो, एह छे तुमचो माल रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ चतुर विदेशी चूकीउ, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय कहे ढाल ए, त्रीजी थइ अनुकूल रे ॥ धि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, अवर वस्तुनो आकरो ॥ वाध्यो रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥ तुंबीमांथी रस गली, हेठ बंधाये बंद ॥ लोह कोश नीचें पडी, सिंचाणी निरमंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु छांडीने, हेम हूउं द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो, मोड्यो तिमिर तदंत ॥ ३॥ दृष्टि पड्यो दो सेठने, सोवन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउं, जाण्यो रसनो संग ॥ ४ ॥ अतिलोभें आंधा हूआ, तुंबी ले निस्संक ॥ गुपत पणें मूकी गृहे, न गण्यो काल कलंक ॥ ॥ ५ ॥ मायावी मन हरखीया, लोभें वाह्या लुंक ॥ कुलवट वहेती मूकीने. कीधो कारज रंक ॥ ६ ॥ अ

ति उब्बक पंथी थयो, साचो चालण संच ॥ तुंबी मा
गी ते कन्हें, विनय वचन परपंच ॥ ७ ॥ मायावी मृदु
वचनसुं, बोल्या बे दुरबुद्धि ॥ व्यग्रपणे तुज तुंबिनी,
कीधी कांइ न सुद्धि ॥ ८ ॥ बहूत उंदर आफले, ग
म गाम प्रचंड ॥ काढ्यो बंधण तुंबिका, पली थइ श
तखंड ॥ ए ॥ कोइक दिन तसु कटकडा, दीठा पड्या
अनेक ॥ अम दिलमें अति दुःख हुउं, चिंताये व्यति
रेक ॥ १० ॥ समसगरां करी साचज्युं, कृतिम करे दुःख
भार ॥ अपर तुंबीना खंड ले, देखाड्या तेणी वार ॥
॥ ११ ॥ वैदेशिक विलखो थयो, खोइ सघली आय॥
हाहा दैव किशुं कीयो, भूमि पड्या बे हाथ ॥ १२ ॥
दक्ष पणे जाण्यो तेणे, ए नहीं तेहना खंड ॥ जिम
तिम तुंबी उलवी, सम काढे बे लंड ॥ १३ ॥ किहां
जाउं केहने कहुं, किशो करुं हुं सूल ॥ दगो दिउ दुष्टें
बुरो, लीधो तुंब अमूल ॥ १४ ॥ कहुं कदाचित राय
ने, तोमण रस ले तेह ॥ चिंति चुंपे चित्तमें, इम बोले
गुण गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ बिंभियानी देशी ॥

॥ मोरी तुंबी दीउ शेठजी, हुंतो कहुंबुं गोद बि
छाय रे ॥ काम न कीजें कांइ तेहवो, जेणे मान महा

तस जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ अरे परदेशीनुं ठेलवी, एह जीवन लीधो मुज्ज रे ॥ जण वीससीआ नीसा सभो, दुःख होसे सही तुज्ज रे ॥ मो० ॥ २ ॥ वली तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित माठां काम रे ॥ तो संतति विना जू लोकमां, सत्य रहेवानो कुंण ठाम रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहीं आकरो, ते म हिमा बे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सुर सानि ध करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम स त्य राखण जणी, निज प्राण करे कुरबाण रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए घर खोयानुं ठा म रे ॥ पठतावो होसे तुम मने, इण वातें खोसो मा म रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूठा सम खातां थकां, ना ठी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम हाम वहे न ही, करतां जूंठां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे लोज वसें लहेता नथी, एह वावो ठो विष वेलि रे ॥ तुम अनरथ फल देसें घणा, हुं कहुं छुं लज्जा मेलि रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ विहुं शेठ कहे सुण पंथिया, कांइ सुद्धि गइछे तुज्ज रे ॥ जग वाफि न चोरे चीजरुां, दिल बूज विचारि अबूज रे ॥ मो० ॥ ए ॥ इम जूठो दोष

चढावीने, तुं खोवे कां निज ठाम रे ॥ किहां सुणिया शाह शिरोमणी, ए करतां चुंका काम रे ॥ मो० ॥ १० ॥ फिट लाजे नहीं कां बोलतो, अणहुंति एम गमार रे ॥ जो होंस होये राउल तणी, तो जइ आवीयें ए वार रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ अति काठो उत्तर इम दी ठे, शेठें करी कपट जिवार रे ॥ ते पंथिक निरास प णो ग्रही, कोप्यो अति जोर तिवार रे ॥ मो० ॥ १२ ॥ कांइ साची सीखामण द्युं हवे, इम बोल्यो तेणीवार रे ॥ एक विद्या ठोकी थंजणी, ते थंन्या घरने बार रे ॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ तव संधे संधे बंधित थया, न खिसे त्यांथी तिल मात रे ॥ बिहुं चित्र लिखित परें थिर रह्या, मन मांहे घणुं अकुलात रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ तेह ऊठी चल्यो परदेशियो, ऊःखजाल बंधाणा बेह रे ॥ इहां चोथी ढाल सोहामणी, इम कांतिविजय कही एह रे ॥ मो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ सोचें सूधा शेठ, बेहु जणा बारणे ॥ दैवें दीधी वेठ, पेट मसली पीका करी ॥ १ ॥ आव्या लोक अ नेक, थंन जिशा थिर देखीने ॥ ठेतरिया ठल ठेक, इम बोले अचरिज तरया ॥ २ ॥ सुणतां लोक सुजाण ॥

शेठ कहे संकट पड्या ॥ करुणा करी को जाण, अ
मने ठोरे इहां थकी ॥ ३ ॥ असे न जाण्यो एह, आ
पद पडसे आकरी ॥ डुःखनर दाधी देह, प्राण हुआ
डे प्राहूणा ॥ ४ ॥ कीजे कवण उपाय, मरतांने मा
रया दिवें ॥ जो किम तूट्यो जाय, तो कास न कीजे
एहवो ॥ ५ ॥ लोक हसे लख कोडि, कै रोवे कै कूक
ए ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥
॥ ६ ॥ हुर्ज ते हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणे ॥ वा
त तणो विस्तार, जाण्यो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥
दोहा ॥ गुणवर्म्मा इणे अवसरे, ग्रामांतरथी गेह ॥
आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पि
ता पिताबांधव बेहु, द्वारे थंभ्या देखि ॥ लाज्यो
मनमांहे घणो, डुःख पाम्यो सविशेष ॥ ए ॥ कु
मर कहे सुणो तातजी, म करो चिंता कांय ॥ विधि
सुं तुम ठोडण जाणी, करसुं कोडी उपाय ॥ १० ॥
चींतातुर तव कुमर ते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न
आवी कांइ तिणे, जोवे तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥
॥ ढाल पांचमी ॥ अबला किम उवेखीये रे ॥ एदेशी ॥
॥ कुमर हवे उनमत थयो रे, सोधे नवनव ठाय
रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलवा रे, मांडे कोडि उपाय रे ॥

तातने ठोरूवा ॥ करता ढील न कांय रे, पुरमांहे फरे ॥
जोवे जुगति वनाय रे, वंधण तोरूवा ॥ पण नावे को
य दाय रे, तातने ठोरूवा ॥ १ ॥ गाम नगर पुर क
व्वमे रे, नमतो नासे रे श्राम ॥ जे श्रम तातने ठो
रूवे रे, तो मुंह माग्या धुं दाम रे ॥ ता० ॥ २ ॥ व
चन सुणी उठ्या तिसे रे, विविध वैद्यना पुत्र ॥ सिद्ध
बुद्ध श्रौषधी धरा रे, नणता निज निज सूत्र रे ॥ ता०
॥ ३ ॥ केइ जंगम केइ जोगीया रे, केइ तापस श्रवधूत ॥
जाप जपंता श्राविया रे, चाढी शीस विनूत रे ॥ ता०
॥ ४ ॥ कै कापिल कै कापमी रे, कै सन्यासी नक्त ॥
कै बांनण वली वेदीश्रा रे, कै ध्याता शिव शक्ति रे ॥
ता० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी केता मिल्या रे, केताइक श्रीपा
त ॥ केइ निरंजन पंथना रे, केइक चरक कहात रे ॥
ता० ॥ ६ ॥ केइ दिगंबर दोमीया रे, नरमाने नगवंत ॥
केइ त्रिदंमी मुंमिया रे, श्रागल कीध महंत रे ॥ ता०
॥ ७ ॥ रावल रंगे उमट्या रे, दोड्या केइ दरवेश ॥
जगने फंदे पामवा रे, करता नवनव वेश रे ॥
ता० ॥ ८ ॥ इष्टधरा श्रनिचारका रे, जतन करावे को
मि ॥ श्रावी विध विध उपचरे रे, करता होमा होम रे
॥ ता० ॥ ए ॥ एक कहे श्राहुति दियो रे, बलि द्यो एक

कहंत ॥ इष्ट मनावो कोइ कहे रे, मंगल को विरचंत रे ॥ ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूणावीयें रे, एक कहे दीजे कंत ॥ एक कहे शिर मूंडीने रे, करियें तंत्र अचंत रे ॥ ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल छांटीयें रे, मंत्री एहने अंग ॥ एक कहे ए यंत्रथी रे, थासे पहेला चंग रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा आंहिं ॥ एम अनेक शब्दे करी रे, कोलाहल हूउ त्यां हिं रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल थयां रे, कोइ न आव्यो तंत ॥ रणनी ऊखर भूमिका रे, जिम जलधर वरसंत रे, ॥ ता० ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपच रचा रे, तिम तिम वाधे पीड ॥ सायर जल उंडा जि हां रे, तिहां वडवानल भीड रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ डुर्जो न परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ ऊठी गया निज निज थले रे, साथ मनोरथ तास रे ॥ ता० ॥ १६ ॥ कुमर इस्यो मन चिंतवे रे, उठी जेहथी आग ॥ समसे तेहथी तेहने रे, आणुं उद्यम लाग रे ॥ ता० ॥ १७ ॥ उपलदक साथें लीउ रे, तव नर एक सखाय ॥ चाल्यो नर सोधण भणी रे, कुमर करी चित्त ठाय रे ॥ ता० ॥ १८ ॥ शेठ रह्या बांध्या तिहां रे, करशे कुमर सहाय ॥ ढाल कही ए पांचमी रे, कांतिविजय सुख दायरे ॥ ता० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वनगिरि गुहिर पुर नगर, निसदिन तेह ज्रमंत ॥ पग पग पूछे पंथसें, पण खबर न कोइ कहंत ॥ १ ॥ विकटपंथ श्रमथी पस्यो, मांदो तेह सहाय ॥ मूकी कोइक नगरमां, कुमर चल्यो असहाय ॥ २ ॥ पुर अटवी उल्लंघतो, पोहोतो एकण देश ॥ निरमानुष मोटो तिहां, (मनुष्यनी वस्तिविनानो) दीठो नगर विशेष ॥ ३ ॥ उंचां मंदिर जलहले, जाणे गिरि कैलास ॥ ठाम ठाम सुंनी पमी, मणिमाणिकनी रासि ॥ ४ ॥ धानपूंज पंखी चणे, वस्त्र उमामे वाय ॥ श्रीफल फोमीने वांनरां, खांत करीने खाय ॥ ५ ॥ त्रूटा ध्वज धरणी पस्यां, ढोल्या मदिरा माट ॥ फूलपगर ठावे जस्यां, सुंना दीसे हाट ॥ ६ ॥ कुमर तव विस्मित पणे, कीधो नगर प्रवेश ॥ दीठो नर तिहां एक अति, सुंदर तरुण वेश ॥ ७ ॥ बोल्यो तरुणो कुमरनें, कुण बे तुं महाज्ञाग ॥ आव्यो किहांथी किहां रहे, साचो कहे अम आग ॥ ८ ॥ कुमर कहे सुण मोहनां, हुं पंथी असहाय ॥ पंथकरी थाको घणुं, आव्यो हुं इणे ठाय ॥ ए ॥ तुं कुण दीसे एकलो, बेठो छे किण काम ॥ रुक्मिनरी सुंनी

किसें, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततक्षण नर बोल्यो इश्युं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मांडीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ढ्ठी ॥ कपूर होये अतिउजलुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए नलुं रे, स्वर्गपुरी उपमान ॥ राजासूरें शोनतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण नर सांनल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र हुआ बे सूरनें रे, जयचंद्र ने विजयचंद्र ॥ बे बांधव वाला घणुं रे, कुवलयने जेम चंद्र ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जयचंद्रने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाजे लाज्यो हुं रहुं रे, न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गे तात संधारियो रे, मुज मन बेठी चींत ॥ सघला दिन नहिं सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बांधव आणा किम वहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अनिमाने हुं नीसरयो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दिवस चंद्रावती रे, पुरी वन मांहे पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥ सोम्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीठो नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥ पीमा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ द्दी

ण अंग लागे नहीं रे, उठण सक्ति लगार ॥ सु०॥७॥ मुज मन करुणा उपनी रे, कीधा बहु उपचार ॥ थो मा दिन मांहे थयो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु० ॥ ॥ ए ॥ प्रसन्न थई मुज पुठीउ रे, नामादिक सवि तेण॥ विद्या बे दीधी नली रे, नक्ति विमोहे एण ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ थंनकरी एक वशिकरी रे, वीजी सूधी पाठ॥ विगत बताई जूजूई रे, जोमी जाचा गाठ ॥ सु०॥११॥ रस तुंबी दीधी वली रे, सेवा साची जाण ॥ चतुर तु रत इम बोलीउ रे, मुज उपर हित आण ॥ सु० ॥१२॥ गाढी खप करतां लह्यो रे, अति छुर्लन रस एह ॥ लोह थकी कांचन करे रे, तिलनर फरस्यो जेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ ते आप्यो बे तुजने रे, करजे कोमी ज तन्न ॥ फिरि फिरि लहेतां दोहिलो रे, जेहवो दिव्य र तन्न ॥सु०॥१४॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख सुजाण ॥ श्रीपरवत नेटण नणी रे, तेह गयो गुण खाण ॥ सु०॥ १५ ॥ तिहांथी हुं चाल्यो वली रे, जो वा देश विशेष॥ कौतुक रंगे नवनवां रे, अचरज दीठ अलेख ॥ सु०॥ १६॥ फिरि आव्यो चंद्रावती रे, केतेक दिवस अटंत ॥ जोग मले नवितव्यनु रे, विधिना जेह घटंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ पुरनां कौतुक निरखतो

रे, आयो मध्य बाजार ॥ लोभाकर लोभनंदीनेरे, हाट गयो सुविचार ॥ सु० ॥ १८ ॥ दक्रपणे बेहु बांधवें रे, हरी लीधो मुज मन्न ॥ हली मली तस घर हुं रह्यो रे, विश्वासें निसदिन्न ॥ सु० ॥ १९ ॥ ते तुंबी थापण धरी रे, जाणी साचा शाह ॥ केता दिवस विलंबीयो रे, पुर पेखणरी चाह ॥ सु० ॥ ३० ॥ जननी दर्शन उमह्यो रे, कीधो चालण संच ॥ पहेलो शेठे जाणीयो रे, तुंबीनो परपंच ॥ सु० ॥ ३१ ॥ तुंबी मागी ततखणे रे, करता निजपुर सिद्ध ॥ लोभअसित बे बांधवें रे, कूडो उत्तर दीध ॥ सु० ॥ ३२ ॥ कही न शकुं जोरें किस्युं रे, दीप्यो क्रोध अपार ॥ जुगतो कूडाने शीरें रे, कीधो में प्रतिकार ॥ सु० ॥ ३३ ॥ आयो इण पुर वेगशुं रे, दीठो शून्य समग्र ॥ मुज मन ताप वधारणी रे, पेठी चींता उदग्र ॥ सु० ॥ ३४ ॥ रति नाठी दुःख उमट्यो रे, विरुउं विरह निपट्ट ॥ ढाल छठी कांती कही रे, कुमर वचन परगट्ट ॥ सु० ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणवर्मा चींते इस्युं, ए नर तेहिज होय ॥ विद्याबले जेणे कोप करि, बांध्या बांधव दोय ॥ १ ॥ समग्रपरें जाणुं नहीं, ज्यां लगे सघली वात ॥ त्यां ल

गें प्रगट करुं नहीं, आतम गत अवदात ॥ २ ॥ इम निश्चयकरी चित्तसुं, पूछे वली ससनेह ॥ पछी थयो सुं साहेबा, हितकरी सर्व कहेह ॥ ३ ॥ कुमर कहे हुं दुःख नरयो, फरियो नगर अशेष ॥ विस्मय सहित कुटुंबनी, व्यापि चिंत विशेष ॥ ४ ॥ शून्यपुरी सव निरखतो, नृपकुल पोहोतो जाम ॥ राजजुवन रमणि य द्युति, उपरें चढीउं ताम ॥ ५ ॥ दीन वदन विछा य तनु, करती चिंत अपार ॥ वेठी दीठी एकली, ति हां वरू बांधव नार ॥ ६ ॥ में बोलावी हेजसुं, आ वी साहमी धाय ॥ नयणे श्रावण जरी लगी, हीयमें दुःख न समाय ॥ ७ ॥ मधुर लपा मुज आगलें, मू के बेसण पीठ ॥ वात विगत पूछण नणी, हुं तस नि कट बईठ ॥ ८ ॥ रीति कीसी एह नगरीनी, दुरवस्थि त किम आम ॥ इम पूछ्यो में ततखिणें, बोली ख्या त विराम ॥ ए ॥

ढाल सातमी ॥ मोरासाहेबहोश्रीशीतलनाथके ॥ एदेशी

॥ मोरा देवर हो सुण दुःखनी वात के, कहेतां हइ रुं थरहरे ॥ वाल्हाने हो आगें अवदात के, कह्या विण कहो किम सरे ॥ १ ॥ एक दिवसें हो इण पुर उद्यान के, तापस कोइक आवीयो ॥ रक्तांबर हो धर

सूचना

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक २५ नवम्बर १९६१ शनिवार को लाल भवन में सायंकाल ७ बजे होगा। जिसमें संघ का व संघ के अन्तर्गत चलने वाली संस्थाओं का हिसाब सन् १९६०–६१ का प्रस्तुत किया जावेगा।

अतः संघ के समस्त सदस्यों को सूचित किया जाता है कि ठीक समय पर पधारें ताकि कार्य कार्य समय पर शुरू हो सके।

दिनांक
२३–११–१९६१

गुलाबचन्द बोथरा
संघ मंत्री

गीता आर्ट प्रेस, जयपुर

सकल मूक्यो परो ॥ १० ॥ निशि आव्यो हो कर ले ई गोह के, नांखी मंदिर उपरें ॥ करी संचो हो चढी ने तव जोह के, चोर परें गृह संचरे ॥ ११ ॥ मुज पासें हो आव्यो तलकाल के, प्रारथना मांकी घणी, ॥ वीवरावे हो करतो चकचाल के, शक्ति देखामे आपणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोध्यो हो में द्रढता काज के, पाप तणा फल दाखीने, ते बोले हो विरमुं नहीं आज के, काम सिक्षा विण चाखीनें ॥ १३ ॥ इम ससलत हो करतां सवि तेह के, नृप सुणी आव्यो बारणे ॥ मुनि दीठो हो उलखीयो तेह के, घर तेड्यो जे पारणे ॥ १४ ॥ फिट पापी हो धूरत शिरदार के, काम करे तूं एहवा ॥ तुज प्रगट्यो हो ए पाप अपार के, फल पामीस हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाव्यो तेम के, राजायें सेवक कने ॥ अपराधें हो गोधाने जेम के, जीकें जूफ तेहने ॥ १६ ॥ परत्नातें हो फेरयो पुरमांहिं के, सेरी सेरी कूटता, खर चाढ्यो हो दुःख पामे त्यांहिं के, चट चट आमिष चूंटता ॥ १७ ॥ निंदितो हो राजायें जोर के, पुरजन वरग हसी जतो ॥ ताफीतो हो त्नमित चिहुं उर के, मलमूत्रें सिंची जतो ॥ १८ ॥ आक्रोस्यो हो सविलोक विफंब के, चोर मा

रें ते मारीउ ॥ वलपुरयो हो योगिणना तुंव कें, नूपें काम इस्यो कीयो ॥ १ए ॥ ते ऊपनो हो राक्स अव सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संनारी हो पूर व अपमान के, वैर जाग्यो मत उंसरी ॥ २० ॥ अ ति नीषण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा जतो ॥ वलगाड्या हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानल जाल के, पिंगल लोचन हठ नस्यो ॥ कर लीधो हो तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचरयो ॥ २२ ॥ धस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातायें तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के, तोपण जटकसुं मारियो, पापीयने हो आवी एक शा सके, नृपनो वैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा रया हो करता घणुं शोक के, पण नावी पापी दया ॥ २५ ॥ पुरुषनो हो देखी नयनूत के, नासंती मु जने ग्रही ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नडे जावे किहां वही ॥ २६ ॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग के, मत बीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

योग के, भाग्ये लहीयें भामनी ॥ २७ ॥ एम कहि हूं हो राखी तेणे जूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आ वे हो मंदिरमां रंग के, दिवसें किहां किण ते अटें ॥ २८ ॥ देवरजी हो अम एहवा हवाल के, जे जा णो ते करो हवे ॥ इम कांतें हो कही सातमी ढाल के, वात कही विजया सवे ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूछे मर्म्म विचार ॥ कि म जीतीने एहने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म्म कहे विजया हवे, सांभल शुभट पुरोग ॥ राज चिंत तुज शिर अछे, तिणे दाखुंतुं योग ॥ २ ॥ सूतां राक्ष सनां चरण, घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति निंद वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निद्रि त हुवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर भेद लहे व ली, नांखे शिस उमाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी मुख थ की, सांभली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा ल्यो हुं अभिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, भाग्य योग गुणवंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में भाखी सहु तंत ॥ ६ ॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥ वली गुणवर्म्माने इसी, अरज करे तेणे ठाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे करजोमीने रे, सांजल सुगुण सुजाण ॥ सनरा मान्या ॥ तुज दरिशण करतां हूउं रे, मानव जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिभाग्य हो सकल डुःख नाठा, नयत्राठा महारा राज अति काठा, घाठा अ रियण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियमुं हेजे गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या साजन मले रे, ते आलसमां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ स ज्जन सहेजे परगजूरे, डुखीआ वे आधार ॥ म० ॥ बलिहारी व्युं लखगमें रे, घमिया जेणे किरतार ॥ म० ॥ ३ ॥ विधि सघली डूपण धरी रे, चूको सघ ली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घमतां करी रे, चतुरा ई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजे रे, समरथ सुगुण हुवंत ॥ म० ॥ चंद्धवल जस शासतूं रे, दिन दिन ते प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सु खीया देखीने रे, संत लहे संतोष ॥ म० ॥ डूहव्या जूठे माणसे रे, पण नाणे मन रोष ॥ म० ॥ ६ ॥ तरु तटनी घण धेनुका रे, संत शशी दिणकार ॥ म० ॥ मित्त कह्या विण स्वारथें रे, करता जग उपगार ॥ म० ॥ ७ ॥ कर साहज तुं माहरो रे, थासे सु

जस अनंत ॥ म० ॥ दुरवस्थित पुर देखतां रे, कि
म तुज दुःख न वहंत ॥ म० ॥ ८ ॥ शेठ कुमर चिं
त इस्यो रे, कठण करेवो काज ॥ म० ॥ पण उपकार
कस्या पछी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ ए ॥ अंगि
कस्यो शिर चाढीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥
विनय सहित हवे शेठने रे, बोल्यो विजय कुमार ॥
म० ॥ १० ॥ राक्षसना पग मरदजो रे, घृतसुं हो
साहस धार ॥ म० ॥ सहस जपन करि मंत्रनो रे,
थंत्रावीस तेणीवार ॥ म० ॥ ॥ ११ ॥ राक्षसने हुं व
श करी रे, करसुं चिंत्यां काम ॥ म० ॥ इम विचारी
मेलवी रे, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १२ ॥ गुप्त प
णे आवी रह्या रे, मंदिरमां एकंत ॥ म० ॥ गुणव
म्मायें पहेरियो रे, विजया वेश सुतंत ॥ म० ॥ १३ ॥
रयणी पडी रवि आथम्यो रे, प्रगट्यो घण अंधार ॥
म० ॥ राक्षस रमतो आवियो रे, रंगे रमे तिणिवार
॥ म० ॥ १४ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, आज अ
ठे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी
वतो रे, करशुं तास विनास ॥ मननी० ॥ १५ ॥ प्रि
या बोले हो धरचारी रे, मनुष नारी हुं खास ॥ म० ॥
महाराज ते वासें घणुं रे, अवर नही कोई पास ॥ म०

॥२६॥ अवगणतो उद्भट पणे रे, सूतो सेजें तुरंग ॥ म० ॥ कुमर वहु मिस आवीने रे, मरदे पय निरजंग ॥ म० ॥ २७ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे, थंभन मंत्र विशेष ॥ म० ॥ ते पण नरना गंधथी रे, ऊठे करी अंदेश ॥ म० ॥ २८ ॥ जिमजिम ऊठे सेजथी रे, राक्षस मारण हेत ॥ म० ॥ तिम तिम फरस तणे सुखें रे, लोटि पडे गत चेत ॥ म० ॥ २९ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो रे, मूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर बिहुने सारवा रे, ऊठयो राक्षस ताम ॥ म० ॥ ३० ॥ थंभ्यो अनोपम मंत्रथी रे, सक्ति थइ विछिन्न ॥ म० ॥ दास थयो करजोडीने रे, भाखें एम वचन्न ॥ म० ॥ ३१ ॥ रे रे साहस संकणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥ म० ॥ मुज महिमा मंत्रे हर्यो रे, जिम घन दक्षण वात ॥ म० ॥ ३२ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र शक्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो साहिब कोइ काज ॥ म० ॥ ३३ ॥ कुमर कहे सुण तें करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल विधवा जिसी रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ ३४ ॥ मणि माणिक कण कंचणे रे, पूरण भरी घर हाट ॥ म० ॥ रचि तोरण स्वस्तिक जलें रे, सुरचित कर स

वि वाट ॥ म० ॥ २५ ॥ तहत्ति करी क्षणमें करी रे, न
गरी नवले रूप ॥ म० ॥ लोक गया दह दिशि जिके
रे, ते तेम्या सवि भूप ॥ म० ॥ २६ ॥ विजय कुम
र मलि मंत्रवी रे, थाप्यो राज सनूर ॥ म० ॥ अन
मी अरियण नामिया रे, वाध्यो जस महि सूर ॥
म० ॥ २७ ॥ विजय नृपति करशे हवे रे, थंन्या व
णिक नो सूल ॥ म० ॥ कांतिविजय पूरी करी रे, आ
ठमी ढाल अमूल ॥ म० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विजय कुमर पाले प्रजा, दिन दिन परम प्रमोद
॥ शेठ कुमर संगे चतुर, करतो रंग विनोद ॥ १ ॥ ए
क दिवस गुणवर्म्मनें, भूप कहे सदभाव ॥ राजगयुं
जे में लह्युं, ते सवि तुज परभाव ॥ २ ॥ अतिउक्क
र पणो आदरी, कीधुं मोटुं काज ॥ प्रत्युपकार करण
भणी, ल्ये द्युं बुं तुज राज ॥ ३ ॥ अवसर निरखी बोली
उं, शेठ कुमर एम वाच ॥ में धरा फिरते निरखीउं, तुं
मणि बीजा काच ॥ ४ ॥ सुगुणा तेह सराहियें, जे ज
गमांहें कृतज्ञ ॥ प्रत्युपकार करे जिके, ते सघला धुरि
विज्ञ ॥ ५ ॥ राज्य वधो दिन दिन घणो, हुं सेवक तुं
स्वामि ॥ जो मानो मुज वीनती, तो सारो एक काम

॥ ६ ॥ लोभाकर बांधव सहित, चंद्रपुरीनो शाह ॥ विद्या थंभ्यो तात मुज, ते ठोशे नरनाह ॥ ७ ॥ अविनय सहियें साहेबा, करियें ए उपचार ॥ जां जीवुं तां तुम तणो, गणसुं ए उपकार ॥ ८ ॥ विगतपणे वृत्तांत सवि, नाखे करी मनुहार ॥ करतां नृपने वीनती, रीज्यो चित उदार ॥ ए ॥

ढाल नवमी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो॥ए देशी ॥

॥ जीहो राय अचंभो पामीउ, जीहो बोल्यो शीस धुंणाय ॥ जीहो विषथी अमृत ऊपनो, जीहो अकथ कथा कहेवाय ॥ १ ॥ कुमर वारी धन धन तुम अवतार ॥ जीहो आप सहित दुःख दोहिलो, जीहो कीधो मुज उपकार ॥ कुमर० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो ते तेहवा तुं एहवो, जीहो उपकारक पवीत्र ॥ जीहो अद्भूत रचना दैवनी, जीहो दीठी आज विचित्र ॥ कुम० ॥ २ ॥ जीहो कारण गुण कारज ग्रहे, जीहो एहवुं शास्त्र प्रसिद्ध ॥ जीहो तात तणा दुरगुण विधि, जीहो पण तुज अंग न कीध ॥ कुम० ॥ ३ ॥ जीहो काम अछे ए केटलुं, जीहो करवो में निरधार ॥ जीहो पण कारण तुज हाथ छे, जीहो जेहथी न लागे वार ॥ कुम० ॥ ४ ॥ जीहो इणे पुर परिसर बाहरें, जी

हो एक सिंगगिरि नाम ॥ जीहो देवाधिष्टित छे तिहां. जीहो कूई एक सुठाम ॥ कुम० ॥ ५ ॥ जीहो गुप्त रहे गिरि कूपिका, जिहो सुरसानिध दिन रयण ॥ जीहो क्षण मले क्षण उघके, जीहो तस मुख जिम नर नयण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ जिहो सिद्धोषध जल लेहनुं, जिहो पूर्णहि लहेरां खाय ॥ जिहो काम पके त्रिया निलो, जिहो कोइक लेवा जाय ॥ कुम० ॥ ७ ॥ जिहो उत्तर साधक शिर रहे, जिहो साधक पेसे त्यांहिं ॥ जिहो जल लेइने नीकले, जीहो जो न डरें दिलमांहिं कुम० ॥ ॥ ८ ॥ जीहो ते जलनो महिमा घणो, जीहो नांजे नीरू निदान ॥ जीहो थंन्यो नर बूटे सही, जीहो जो सुत छांटे आण ॥ कुम० ॥ ए ॥ जीहो जेहने सुत नहीं आपणो, जीहो ते नर नवि बूटंत ॥ जीहो वार तीन छांटे सही, जीहो बंधन चट विघटंत ॥ कुम० ॥ १० ॥ जीहो कारण ए बूटा तणो, जीहो एहनो अन्य न कोय ॥ जीहो आरति कुमरें अनुमन्यो, जीहो डुःकर काज जोय ॥ कुम० ॥ ११ ॥ जीहो सामग्री सुसहायसुं, जीहो कुमर गयो गिरि शृंग ॥ जीहो आप कूईमां उत्तरे, जीहो जिम पंकज मांहे भृंग ॥ कु० ॥ १२ ॥

जीहो निर्जय जल तूंबी नरी, जीहो बेठो मांची संच ॥ जीहो कूई बाहिर काढीउं, जीहो नूपें त्यांथी खंच ॥ ॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो अती साहसथी रीजीउं, जीहो तव कूईनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट आवी रह्यो, जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो अश्वरूप कीधो सुरें, जीहो बे बेठा तस पीठ ॥ जीहो आव्या पुर चंद्रावती, जीहो धंन्या बेहु दीठ ॥ कुम० ॥१५॥ जीहो कुमरें जलसुं सिंचीउं, जीहो लोनाकरनो अंस ॥ जीहो जटक बूटी अलगो रह्यो, जीहो पास थकी जिम हंस ॥ कुम० ॥ १६ ॥ जीहो लोननदी बूटो नहीं, जीहो पाके मुख पोकार ॥ जीहो पुत्रविना कोण तेहने, जीहो दुःखथी ठोरूण हार ॥ कुम० ॥ १७ ॥ जीहो विजयचंद्रने वीनवी, जीहो गुणवर्म्मे ते शेठ ॥ जीहो घरमांहे पेसण दीउं, जीहो बीजा शिर रही वेठ ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद मुद्रा नणी, जीहो आमंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवी आदरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जीहो केतेक दिन पूंठें नृपें, जीहो निजपुर कीध प्रयाण ॥ जीहो विरहव्यथा हीयके वधी, जीहो कुमरसुं वांध्या प्राण ॥ कुम० ॥ २० ॥ जीहो करी सत्कार अनेक

धा, जीहो तूंबी दीधि काढि, जीहो नृपति वली पा
ठी दीए, जीहो कुमर लीए शिर चाढि ॥ कुम० ॥ २१ ॥
जीहो माया घोटक ऊपरें, जीहो बेसी विजय नरिंद ॥
जीहो निजपुर पोहोतो वेगशुं, जीहो जिम विद्याधर
इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणवर्म्मायें आवीने, जी
हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें नेटण ध
र्यो, जीहो नाख्यो सवि वृत्तांत ॥ कुम० ॥ २३ ॥ जीहो
प्राण पियारी आगलें, जीहो राखीजें सु गुज्झ ॥ प्रीयें
सुण चिंता कारण मुज्झ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो काका
नो निज तातनो, जीहो आपण मोसा दोष ॥ जीहो
कुमरें खमाव्यो मुज्झने, जीहो विनय विविध परे पोष
॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गयुं वाल्युं फरी, जीहो
वाल्युं वैर दुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
जीहो चाढी शोभ अनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
ण पणु पण आगमी, जीहो शेठ सुतें निज तात ॥
जीहो आपदमांथी उद्धर्यो, जीहो जूउ सुतनां अवदा
त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामनी,
जीहो धण कंचणनी रासि ॥ जीहो सोच दिसा पामे स
दा, जीहो पुत्र रहित आवास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
धन्य ते कृत पुण्य ते, जीहो जेहने नवला पुत्र ॥ जीहो

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री०
॥२८॥ जीहो लोचनंदी संकट सह्यो, जीहो देखी
सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो ठे
लावे अविलंब ॥ प्री० ॥२९॥ जीहो हुं जगमां निरभा
गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित
सरज्यो किस्यो, जीहो वाध्यो चिंता पोत ॥ प्री० ॥
३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उद्ध
रे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुल आपणुं, जीहो
पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसल
ता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो
ए चिंता मुज जामिनी, जीहो बीजी राव न रीस
॥ प्री० ॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो
राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्यें हवे, जीहो
घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम
बोली प्रीतम प्रत्यें, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य
जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे
रोवे लुटें, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग घम
कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेलो ग्र

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ शुजग शिखा शिर फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता आंकें परूं, हेलवी या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण ऊंचां मालियां, प्रत्य क्ष खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क ह्यो नव नाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विहुणी डुःखणी, कां स रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पूण्य किया विना, क्यां थी संतति होय ॥ सुकृत करीजें डुःख तजी, ते नणी आपण दोय ॥ ७ ॥ चींता दूरें ठेलियो, हृदय थकी हे कंत ॥ पुत्र हेतें आराधशुं, देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥ प्रसन्नथयो सुर पुरशे, वंछित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ए ॥ राय कहे सुण सुंदरी, सुंजमन नावी वात ॥ शुजदिनथी आराधशुं, कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, वली बोले इस्युं, धर ते दिलमां डुःख घणुंए ॥ वदन थयुं विछाय रे, चिंता उमटी, दीसे अंग दयामणुंए ॥ १ ॥ थरहर थरके गात्र रे, विनय विह्वल थई, चटपट लागी आकरीए ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीउं, चतुराइ पण

उसरीए ॥ २ ॥ फरके जमणी आंख रे, प्रीतम मा
हरी, कुंण जाणे से कारणेए ॥ नावि कोइ अनर्थ रे,
फरि फरि सूचवे, मुज मन न रहे धारणेए ॥ ३॥ था
शे कोइ उतपात रे, नूतादिक तणुं, दुःखदाई मुजने
सहीए ॥ अथवा विद्युत्पात रे, थाशे मुज शिरे, के
उलका परुशे वहीए ॥ ४ ॥ के जासे सर्वस्व रे, जी
वन माहरो, कुशल होजो तुमने सदाए ॥ के थाशे मु
ज रोग रे, शोक अशुन्न कर, के परुशे कांइ आपदा
ए ॥ ५ ॥ प्राण तणो संदेह रे, होशे माहरे, निश्चय
लोचन एम कहेए ॥ हुं नवि जाणुं कांइ रे, नोली
नामिनी, दैवगति ज्ञानी लहेए ॥ ६ ॥ रति नाठी मु
ज तेण रे, हइरुं कम कमे, अधृति धरुंबुं काहिलीए
॥ वीरधवल नूपाल रे, वलतुं एम वदे, कां नामिनी
दुःखमां नलीए ॥ ७ ॥ चिंता म करिस लगार रे, मु

सिंहासन जई वेसियो ए ॥ फिरिफिरि फरके नयण रे, राणीनो वली, तिमतिम थरके तस हीयोए ॥ १० ॥ मंदिरमांथी उठी रे, वनिकामां गई, अरति लहे तिण पण घणीए ॥ वनिकामांथी तेम रे, आवी मंदिरे, त्यां थी बाहिर वन जणीए ॥ ११ ॥ वनथी पुरमां आई रे, सहियर परवरी, देवकुलें जावे वलीए ॥ न लहे र ति लवलेश रे, क्लेश सहे घणु, जिम शूके जल मा छलीए ॥ १२ ॥ इम वोल्या मध्यान्ह रे, आवी निज घरें, सूती पण मन वाउलोए ॥ अल्प अल्प तव निंद रे, आवी तिणे समे, जेह थयो ते सांजलोए ॥ १३ ॥ वेगवती नामेण रे, दासी तेतलें, हाथांसुं शिर कूटती ए ॥ आंशुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा चट चूंटतीए ॥ १४ ॥ विलवंती डुःखपूर रे, आवी दोडी ने, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा शुं थयो तुज रे, सामणि माहरी, दीधुं दैव विगोवणुए ॥ १५॥ फिटरे धीठा दैव रे, इम कही ढली पडी, निरखी च क्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांए रे, राणीने पडी, हा हा सुं करवुं हवेए ॥ १६ ॥ उल्या व्याकु ल राय रे, दीनवदन थई, पूछे दासीने इस्युंए ॥ ऊठ ऊठने ऊठ रे, कहेने सुं थयुं, सूल अंतेउरनुं किस्युं

ए ॥ १७ ॥ फाटे हीयडुं मुज रे, धीरज सहुं नहीं, कहेतां वार म लावीयेए ॥ वेगवती तव ऊठी रे, रूती इम कहे, हैसुं दुःख उदलावीयेंए ॥ १८ ॥ कहेवा सर खी वात रे, नहीं हो साहेबा, कहेतां न वहे जीनडी ए, वीर शिरोमणी देव रे, हृदय कठण करो, वज्र वि षम ठे वातडीए ॥ १९ ॥ चंपकमाला देव रे, प्रभु हृदयें सरी, दाहिण लोयण फुरकंतेए ॥ वेला गालण काज रे, चिंतातुर नमी, बाहिर अंतर जत ततेंए ॥ ॥ २० ॥ लहति अरति अपार रे, मंदिर आवीने, सूती एकांते जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे, मूकी हूं पण, पान लई पाठी गईए ॥ २१ ॥ बोलावी नर हे ज रे, मुख बोले नहीं, दीठी काठ परें पडीए ॥ जीव रहित निश्चेष्ट रे, जांखी देहडी, मीचाणी दोय आं खडीए ॥ २२ ॥ के सोसी कुंण प्रेत रे, के साकिण ग्रसी, के कांइ सापणी डसी गईए ॥ अथवा उत्कृष्ट रोग रे, जीव लेई गयो, के निज हत्या करी मुईए ॥ ॥ २३ ॥ निरखी माठा सूल रे, पडियो ध्रासको, पण न कलाय ए सुं थयुंए ॥ आई दोडी एथ रे, शुद्धि स वे गई, जीवडलो ऊडी गयोए ॥ २४ ॥ वयणसुणी भूपाल रे, कडुआ विष जिस्यां, मूर्छागत धरणी ढ

ल्योए ॥ वींज्यो सीतल वाय रे, सींच्यो चंदने, कष्टें मूर्छाथी वल्योए ॥ २५ ॥ लागो दुःख अछेह रे, नेह विवस थयो, विलपण लागो एणीपरेंए ॥ ॥ रे हत्या रा दैव रे, कहेने किहां गयो, जीवन माहारुं अप हरिए ॥ २६ ॥ जो मुज देवा दुःख रे, समरथ तुं हू ते, मुने कां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा दुष्ट रे, देइने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥ जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीवडा, मन मेलूं सीधारतांए ॥ हा हा हूते संताप रे, विरहानल त णु, सुंदरी विण तुज धारतांए ॥ २८ ॥ रे रे कुलनी देवीरे, अवसर आजने, कांइ उवेखो परिथईए ॥ ते रुषीनी आसीस रे, सुकृत फलें नारी, ते पण निःफल केम गईए ॥ २९ ॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम न कही मुज, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत ए रीत रे, पहेली ताहरी, तो राखत हइडा उपरेंए ॥३० ॥ हाहा हुं अज्ञान रे, मूढ शिरोमणि, नावि आपद सांसहीए ॥ दीनवदन विछाय रे, धुरतें मुजने, हुं नारी आपद कहीए ॥ ३१ ॥ निंद्या करतो आप रे, नृपति विलपतो, परिजननें दुःखियां करेए ॥ क्षण हिरुं गति मंद रे, क्षण धरणी ढले, क्षण आंसू नय

णें नरेए ॥ ३१ ॥ क्षण बेशे मन शून्य रे, क्षण ऊठे धसी, क्षण वली करतो विलंबनाए ॥ छांमी नर मर्याद रे, धीरज हारियो, एऐ मोह विटंबनाए ॥ ३३ ॥ मलिया सचिव अनेक रे, दुःखजर जंगुरा, गदगद वचने वीनवे ए ॥ चालो हो महाराज रे, लायक साहेबा, तुरत पणे जश्यें हवेए ॥ ३४ ॥ ढील तणो नही काम रे, देवी देखीजे, कवण दिसायें आक्रमीए ॥ जो विष व्यापि होय रे, तोपण जीवको, रहे ते नाजीमां संक्रमीए ॥ ३५ ॥ करतां कोइ उपाय रे, जो जीवे कदी, तो तुज नाग्य प्रशंसीयेंए ॥ वचन सुणी जूनाथ रे, चाले वेगशुं, वींटयो परियण दासीयेंए ॥ ॥ ३६ ॥ आव्या राणी गेह रे, दीठी काठसी, दव दाधी जिम वेलमीए ॥ शब्द रहित निश्चेष्ट रे, नील वदन छवी, दंत जीमी सेजें पमीए ॥ ३७ ॥ मूर्छाणो क्षितिकंत रे, भ्रांत नयण थयां, नेह दावानल वली जग्योए ॥ सींच्यो सीतल नीर रे, ऊठयो निज प्रिया, देखी वली मूर्छा लग्योए ॥ ३८ ॥ फरी ऊठे फरी तेम रे, मूर्छे नरपति, फरी ऊठे एम दुःख लहेए ॥ मंत्री मलीने अंग रे, देखी राणीनुं, मांहो मांहे इम कहेए ॥ ३ए ॥ अंग नहीं छे कोई रे, व्रण घातादिक,

अद्भुत दीसे सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के म न पीमायें, साजी तनु केम अन्यथाए ॥ ४० ॥ मरशे निश्चें राय रे, देवी मोहियो, राज्य भंग याशे सहीए ॥ करवो कोण प्रकार रे, इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या कहीए ॥ ४ १ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे, बोल्यो तत्क्षण, काल विलंब न कीजीयेंए ॥ तो होये कोइ उपाय रे, जेहथी नृपने, मरण थकी राखीजीयेंए ॥ ४ २ ॥ मंत्री बोल्यो एक रे, वली एम चित्तधरी, कालक्षेप केणी प रें हूवेए ॥ राजा देवी मोहें रे, घाल्यो परवशें, काज अ काज नवी जूवे ए ॥ ४ ३ ॥ वली कहे मंत्री सुबुद्धि रे, विषनी विक्रिया, ठे देवी ए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोषध योग रे, विष टलशे परहो, राणी अति सुख पामसे ए ॥ ४ ४ ॥ जूठो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, क रत अकाज निवारीयेंए ॥ गुप्तमंत्री करे सर्व रे, मंत्री सर बोल्या, राजन विष उपचारियेंए ॥ ४ ५ ॥ कांइ क रो महाराज रे, निपट अधिरता, नवलां मंगल वर तशेए ॥ सांजली एम नरेश रे, विकश्वर लोचने, हर्ष सुधा नाह्यो तिसेंए ॥ ४६ ॥ करशे कोमी उपाय रे, नृपने जोलवी, मंत्रीसर मति आगला ए ॥ दशमी

ढाल रसाल रे, कांतिविजय कहे, मोहें नम्फिया नल नलाए ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे ल्यावो धाइने, विषधर औौषध यंत्र ॥ आमं त्रो मंत्रिक प्रतें, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप आ देशे मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ आरंजे मांत्रिक क्रि या, उचित कह्या सवि चाल ॥ २ ॥ एकांते देवी ठवी, करे चिकित्सा तेम ॥ मांत्रिक मंत्रीसर सहित, जाणे नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी ऊठसे, करशे ने त्र विकाश ॥ हवणां कांइक बोलशे, वलशे वली उ सास ॥ ४ ॥ वोली एम नृप चिंततां, अर्द्धदिवसने रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय सवी, करे विचार प्रजात ॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशाथी आज, नेह ग्रस्यो जाणे नहीं, करतो चतुर अकाज ॥ ६ ॥ राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ सचिव प्रमुख दिन आजथी, सकल थया अशरण्य ॥ ७ ॥ इम चिंता सायर पड्या, मंत्रीसर नयवाम ॥ एक ए क साहामुं जूवे, जिम मृग चूका गाम ॥ ८ ॥ दीठी कांता तिण समे, पूर्वपरें नृप आप ॥ आपूस्यो अति डुःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ए ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ रे रंगरत्ता करहला रे, मो
पीउ विरतो जाण ॥ हुंतो ऊपर काढीने रे,
प्राण करुं कुरबाण ॥ सुरंगा करहा रे ॥ मो
पीउ पाछो वाल, मजीठा करहा रे ॥ ए देशी ॥

॥ रे गुणवंति गोरडी रे, कांइ रही रे रीसाय ॥ वि
ण बोल्यां मुज जीवडो रे, प्राहुणडा परें जाय ॥ प्रि
यारी बोलो हो, अइ प्रीतमशुं एक वार ॥ १ ॥ ह
ठीली बोलो हो, विरत्त थइ कुण कारणे रे, एवडो
छेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ ए आंकणी ॥ तुज न घटे गजगाम
नी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं औषधी रे,
तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक न लहे पल जी
वडो रे, तुज विरहें प्रजलाय ॥ हासुं न कीजें तेहवुं
रे, जिणे हासें घर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ ऊठ प्रिया
दिन बहु चढ्यो रे, लोक लगे व्यवसाय ॥ पण प्रित
मने उवेखती रे, तुं बोले नहीं कांय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥
तुं कहेती मुजने सदा रे, हृदय वसो छो मुज्झ ॥ ते
मुज आज वीसारतां रे, वात लही में तुज्झ ॥ प्रि०॥
॥ ५ ॥ एक घडी मुज तुजविना रे, मुजने वरस स
मान ॥ तो दिन ए केम बोलसे रे, गोरी कहे गुण खा
ण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ विलसे केइ हसे रे, सुखीयां

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज तणी रे, दीधी ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्बल थइ रे, जो तुं आंख उघारु ॥ ग्रीषम पवने आकरी रे, जिम तरु नांख्या जारु ॥ प्रि०॥८॥ तुं चतुरा चंद्रानना रे, जीव रह्याली वारु ॥ पण इण वेला पदमणी रे, हीयडुं नाख्युं जारु ॥ प्रि० ॥ ए ॥ हरिलंकी हसी बोलनें रे, निंद रयणरी छांकि ॥ कर करुणा मुज का मनी रे, मननी पूर रुहाकि ॥ प्रि० ॥ १० ॥ तुज कारण कीधा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥ हा हा पण उठे नहीं रे, कीजें कवण प्रकार ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ निश्चे दीसे छे हवे रे, पोहोती तुं परलोक ॥ नहिंतो मुख बोले सही रे, वालम करते शोक ॥ प्रि० ॥ १२ ॥ धिग प्रभुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन धिग राज्य ॥ संकट मांहेथी तुजने रे, हुं राखी शक्यो नहिं आज ॥ प्रि० १३ ॥ हे मुगधे हे कोपनें रे, हे प्रमदे गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण आवुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे छेकी हवे रे, तुजने पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं सोकने रे, फिट फिट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहीने धरणी ढल्यो रे, मूर्छावशें भूपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो घणु

रे, ऊग्यो वली करुणाल ॥ प्रि० ॥ १६ ॥ हा हा मं त्रीसर सुणो रे, भूमि पड्या मुज हाथ ॥ परलोकें जातां प्रिया रे, जाइस हुं पण साथ ॥ १७ ॥ सलुं णा मंत्रि हो, ढील करो मत कांइ, सुरंगा मंत्रि हो ॥ ए आंकणी ॥ गालानदीने कांठडे रे, हुं प्रजलीस संघा थ ॥ सलुं० ॥ सीघ्र करावो चय तिहां रे, काठें पुरो पूर्ण ॥ अंग वालीने आपणो रे, निर्वृत्ति थाइस तूर्ण ॥ स० ॥ १८ ॥ नयणे श्रावण जडीलगी रे, बोल्या एम प्रधान ॥ हाहाहा अनरथ किस्यो रे, मांड्यो ए राजा न ॥ १९ ॥ रंगीला राजन हो ॥ समजो हीयडा मांहे, छबीला राजन हो ॥ मत करो आतम दाह, हठीला राजनहो ॥ कहीयें गोद विछायने रे, साहेवजी रढ मान ॥ रंगी० ॥ कमल जिस्यां रवि आथमे रे, जल सूके जिम मीन ॥ माय ताय विण बालज्युं रे, कांइ करो जगदीन ॥ रंगी० ॥ २० ॥ मत ल्यो रिपु एह रा ज्यने रे, पामो प्रजा मत पीड ॥ वसुधा मत अशरण हुउे रे, न पडो अममां भीड ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तुम स रिखा महाराजवी रे, धीर पणुं मत छांड ॥ तो किहां रहेसे लोकमां रे, थानक ते देखाड ॥ रंगी० ॥ २२ ॥ मरण लही देवी प्रभो रे, ते तो कर्म निदान

॥ एह अवस्था ध्रुव कही रे, सघलाने अवशान ॥ रं
गी० ॥ २३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेंद्र ॥
कर्मथकी नवि बूटीआ रे, गणधर देव जिनेंद्र ॥ रंगी०
॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, जाज अणी ज
ल बिंद ॥ संपद चपल स्वजावथी रे, जेहवी स्त्री स्वछं
द ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सयण कह्यां सवि कारमां रे, जे
हवा सुपन जंजाल ॥ काया काचघटि जिसी रे, यौव
न संध्या काल ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ जन्म जरा मरणे ज
स्यो रे, ए संसार असार ॥ इम जाणीने साहेबा रे,
मतकरो डुःख लगार ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ संजालो निज रा
ज्यने रे, टालो मननो शोक ॥ गालो अरियण मानने
रे, पालो पीमित लोक ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ राय कहे मं
त्रीसरो रे, साची तुमारी वात ॥ पण देवी मोहें मढ्यो
रे, तेजणी रह्यो न जात ॥ सलुं० ॥ २९ ॥ में पूर्वें अं
गी कस्यो रे, साथें मरणनो बोल ॥ जो न करुं तो कि
म रहे रे, सत्यवादीनो तोल ॥ सलुं० ॥ ३० ॥ आजल
गें में निरवह्यो रे, सूधो सत्य वचन्न ॥ ते अंतरावे
छोमतां रे, न वहे माहरुं मन्न ॥ सलुं० ॥ ३१ ॥ निज
मुखथी जे आदरी रे, बे सम प्रतिज्ञा काय ॥ अवसर
वहेती मूकतां रे, सहसा सत्य लजाय ॥ सलुं० ॥ ३२ ॥

जिण सत्य कारण होमीउं रे, वल्लन पणे निजदेह ॥ मूउं पण जग जीवतो रे, शास्त्रें कह्यो नर तेह ॥ ॥ सलुं० ॥ ३३ ॥ क्षिप्र करोने सज्जाता रे, महारी देवी साथ ॥ देशुं दुःखने जलांजली रे, ए निश्चय अम आथ ॥ सलुं० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिउं रे, बहु परे सर्व प्रधान ॥ पण विरमे नहीं मरणथी रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरथ करतां नवि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्न ॥ ते जाणी मौन लेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी ढाल इग्यारमी रे, कांति विजय कहे एह ॥ मोह शु नट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह ॥ रं० ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें मंत्रीशने, देखी करता ढील ॥ प्रेरुया पुरुष बीजा वली, करवा साज हठील ॥ १ ॥ तुरत मंगावी पालखी, रयण जमित मनुहार ॥ नवरावे कलेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदे, कर्पूरें करी लेप ॥ कुसुम सरसुं पूजि कें, कर्यो धूप उत्क्षेप ॥ ३ ॥ शिबिका मांहे थापिउं, राणीनो देह चाले नृप गोलो तटें, शिबिका आगें

करेह ॥ ४ ॥ पुरथी जब नृप नीकले, तब दुखिया सविलोक ॥ जूरे विलपे हूबकें, रोवे करता शोक ॥५॥

॥ ढाल बारमी ॥ ऊलगडी ऊलगडी तो कीजे मुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन दुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप विरह्यो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले आवीने रे, वदन हूआ विछाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम ओको अमने साहेबा रे, विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम मुख दीठे सुख पासुं सदा रे, छेह न द्यो क्षितिकंत ॥रा०॥२॥ तुम विण तुम विण अमने कहो कुंण राखशे रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे कुंण पूरसे रे, बहुला लाड लडाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न शक्यो न शक्यो देखी दैव अटारडो रे, अमचो सुख निरधार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकीउ रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण दिन बाल तरुण घरढा मली रे, करे घणा आक्रंद ॥ अन्न न अन्न न भावे नावे निंदडी रे, वाध्यो दिल दुःख दंद ॥ रा० ॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विष व्यापिया रे, घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत सर्व स्वजुं रे, गहिला केइ फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हा वत्स

हा वत्स हानिधि हा कुल दीवका रे, कुलमंरुण कुल मो रु ॥ हा नृप हा नृप अमने ऊंची चढावीने रे, ध्रसका ई विण गेरु ॥ रा० ॥ ७ ॥ कुलनी कुलनी वृद्धा इम विलपे घणुं रे, नाठी रति दिलगीर ॥ मनमें मनमें खू तो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तीर ॥ रा० ॥ ० धिगधिग धिगधिग अमची बुद्धिने रे, जे नावी कोइ काम ॥ सहज सहज सनेहा अमने गेमीने रे, जो जावे ठे आम ॥ रा० ॥ ए ॥ मुजरो मुजरो अमचो कुंण लेशे हवे रे, कुंण देसे सनमान ॥ आतम आ तम निचिंतायें वाउला रे, इम निंदे परधान ॥ रा० ॥ १० ॥ हा जिणे हा जिणे रूपें काम हरावीयो रे, वली हूउ निर्देह ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रभु नारी कार णे रे, किम बालीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कदीहो कदीहो रूप मनोहर पेखशुं रे, परगट पूनम चंद ॥ इमकही इमकही नयणे जल ऊवे रे, पुरनारिनां वृंद ॥ रा० ॥१२॥ जनक जनक तणी परें पाल्या प्रेमथी रे, ए सघला पुर लोक ॥ रुलसे रुलसे दैव विछोह्या बापमा रे, जिम दिणयर विण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी नगरी दीसे आज दयामणी रे, जिम दवदाधुं वन्न ॥ इमकेइ इमकेइ संचरता नृप मारगेंरे, नाखें दीन वचन्न

॥ रा० ॥ १४ ॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माणि कें रे, मोहोटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम अमचो टालशे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगलें रे, आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केहनो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुजग गंजीरता रे, निरुपम ज्ञा न विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्र चंरू उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि ए स वि गुण निरधारी आजथी रे, कीधा ते विण मर्म्म ॥ रा० ॥ १७ ॥ रंजित रंजित पंजित कीधा विण गुने रें, खंजित दैवे एण ॥ मंजित मंजित विद्यायें तुम सा रिखा रें, पजिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १ए ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, ठोरे पंखी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, दुःख पामे नहीं कूंण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर आणघटतुं इंम राजीया रे, हाहा धींगरू धीर ॥ इंमपुर इंमपुर वासी वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोला तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥ ते शव ते शव तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

त्यांहिं ॥ देतो देतो दान याचकने ऊतरे रे, न्हावा लागो मांहिं ॥ रा० ॥ २२ ॥ जूधव जूधव नाहें त्यां जल जेतले रे, रूते लोक समग्र ॥ जलने जलने पूरें तव एक तांणियो रे, आव्यो काठ उदग्र ॥ रा० ॥ २३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तव बोलीया रे, रे रे तारक जाहु ॥ लाकरू लाकरू जलमां सनमुख आवतुं रे, वेगें काढी ल्याहु ॥ रा० ॥ २४ ॥ एह छे एह छे योग्य चिताने इम सुणी रे, धीवर पेसी त्यांहिं ॥ वाहिर बाहिर काढ्यो ताणी तत्क्षणे रे, जलजंतु अवगाहिं ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुले बांध्यो चिहुं परखें रे, न्नापा परें ते थंन्न ॥ दीसे दीसे स्थूल कठिन आगें पड्यो रे, जाणे वाहण थंन्न ॥ रा० ॥ २६ ॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो छुरियें बंध ॥ जटक जटकसुं अर्द्ध जुदो उघरूी पड्यो रे, छूटीगया सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमदें केशर चंदने रे, अरची सुंदर अंग ॥ चरची चरची घनसारादिक गंधशुं रे, माल ठवि बहुरंग ॥ रा० ॥ २८ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहरू रे, निर्जित लोचन नंग ॥ जलमां जलमां ढांनि रति आवी रही रे, छेतरी आंणी अनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक चंपक

माला नृप मनमोहनी रे, दीठी दैव संयोग ॥ पेखवी पेखवी नृपतिनो दिल जागीउं रे, जागो विरह वियोग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन सवे तिहां रे, दूरगया जंजाल ॥ इणी परें इणीपरें कांतिविजयें कही बारमी रे, सुंदर ढाल रसाल ॥रा०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलवस्थित पणे, नृपने बोले आम ॥ चंपकमाला जीवती, लही सुकृतथी स्वाम ॥ १ ॥ पालखीयें पोढामीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एह के तेह छे, के कोइ छल छे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक प्रतें, निरखो शिबिका मांहिं ॥ तेह देह तिमाहिंज अछे, के विध धरिउं आंहिं ॥ ३ ॥ जब सेवक जइ निरखीउं, आवी शिबिका पास ॥ तब ते शब हरु हरु हसत, उडी गयो आकाश ॥ ४ ॥ हैहै हुं वंच्यो खरो, छेतरतां नृप छेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते जग साचा बेल ॥ ५ ॥ इम कहेतो चलतो नजें, जलकार मय देह ॥ दंत कसत करतल घसत, थयो उलका सम तेह ॥ ६ ॥ थरहरता सेवक सवे, आव्या नृपने पास॥ वीतक व्यतिकर नृपनें, दाख्यो सकल प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए वातनो, कोइ न लहे वि

श्याम ॥ ते माटे पूछे हवे, राणीने इण ठाम ॥ ८ ॥
॥ ढाल तेरमी ॥ सोनानी आंगीहे, सुंदर मारा साहेबाने अंग, विच विच रतन जमाव, कोमी सूरज करुं वारणेजी ॥ ए देशी ॥

मृगा नयणी राणी हे, सुंदर हवे नयण उघाम ॥ ऊठो राणी आलश छोमी, कथको प्रीतम अलजो करे जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरी बोलो हे, हसित मुखें मीठमा वोल ॥ कहो राणी वीतक वात, धुरथी जाणीजे जिण परेंजी ॥ २ ॥ वयणा ते सुणी हे, राणी कहे निद्रा छांम ॥ कहो पीउ जगाडो केम, जीना वशन ए पहेरीनेंजी ॥ ३ ॥ लखगसे जना हे, निकट चय पाखलें लोक ॥ कहो पीउ शिबिका मांहें, ठवीय ला व्या छो केहनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माहरी हे, सुंद र पछे कहेसुं वात, कहो तुमचो विरतंत, जिम अम मन सांसो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव ल किहां पाम्यो हार ॥ कहो किम पेठी काठ; किणे वा ही गोला जलेंजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणे वमनी छांहिं ॥ चालो पीउ थाउं सुख, संजलावुं अ म वातमीजी ॥ ७ ॥ नृपति तब आव्यो हे, सकल ज न विंट्यो तेथ ॥ अमें नारी कोमल काय, तमकें तपी

थइ रातभीजी ॥ ८ ॥ राणी कहे वाणी हे, प्रीतम प
ण जाणो छो तेह ॥ दाहिण मुज फुरक्यो जे नयण,
सूचक अशुभ निमित्तनोजी ॥ ए ॥ भमी वन वासी
हे, आवी फरी मंदिर मांहे ॥ दासी गइ लेवा पान,
वेगवती चंचल तनुजी ॥ १० ॥ निद्राभर तेणे हे,
सूती जव सेज हुं आय ॥ दुष्ट कोइ आयो पास, तुरत
उपासी लेई गयोजी ॥ ११ ॥ सूंने गिरि टूंके हे, मूकी
मुज नाठो धीठ ॥ भयें घण थरकित गात, सकल दि
श जोउं सुं थयोजी ॥ १२ ॥ दीसे नही कोइ हे, पा
छल मुख आगल पास ॥ सुएयुं कोइ विषम आक्रं
द, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १३ ॥ वाघ सिंह
धडूके हे, सबल दीये चित्ता फाल ॥ रमे रींछ देतां दो
ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १४ ॥ जाउं कि
ण आगें हे, सुणे कोण दुःखनी वात ॥ चिंता चयसुं
लगी चित्त, क्षणएक दुःख पूरें भरीजी ॥ १५ ॥ सा
हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किहां
पिउ किहां वन केणि, वैरी अकारण अपहरिजी ॥ १६ ॥
चढी गिरि टुंके हे, करुं निज आतम घात ॥ चित चिं
ती एहवुं त्यांहिं, चाली लक थमते पगेंजी ॥ १७ ॥
दीठो तस सिंगे हे, वारू एक नवल प्रासाद ॥ उंचो

अति जलहल ज्योति, जलके अंबर तल लगेंजी ॥ १७ ॥ ऋषन्न प्रनु राजे हे, मोहन जिहां जगनो नाथ ॥ देखी मणि मूरत खास, अंतर आतम उल्लस्योजी ॥ १ए ॥ कीधी स्तुति मोटी हे, ललित पद अर्थ गंनीर ॥ लागो जिनसुं एकतान, डुःख सयल मनथी खिस्योजी ॥ २० ॥ कालें कही रूमी हे, सरस ए तेरमी ढाल ॥ मीठी जिम साकर डाख, सुणतां काने अमृत वस्योजी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥ नगति निरखी हरखित थई, बोली शासन देव ॥ १ ॥ हुं शासन रखवालिका, चक्केसरी मुज नाम ॥ आदि नुवन रक्षा करुं, मलयाचल शुन्न ठाम ॥ २ ॥ मलय देवी मुज नाम ठे, बीजुं ठाण गुणेण ॥ साहमी धर्म नणी चरण, प्रणमुं बुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कठिण हीयुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पमे अवस्था माणसा, न टले सुख डुःख लीह ॥ ४ ॥ पूछ्युं में कहे मावमी, किणे आणी मुज आंहिं ॥ कहियें सवि निरत्तसुं, तव सा बोली त्यांहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥
॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल हुउं बंधु ॥ वछे सांजलो ॥ निर्गुण लोजी राज्यनो रे, कूरू कपटनो सिंधु ॥ व० १ ॥ वरू बांधव हणवा जणी रे, चिंते विविध उपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणें रे, पेठो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ग घाय मूके खरो रे, नृप साहामो अति धीठ ॥ व० ॥ एक घायें वरू बांधवें रे, पाड्यो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ शुजजावें अंते मरी रे, एणे गिरि ए थयो जूत ॥ व० ॥ अतुल बली परिवारमें रे, दीठी माहरे दूत ॥ व० ॥ ४ ॥ गत जवें ते पापीउं रे, संजारे निज वयर ॥ व०॥ ठल जोतो नरनाहनां रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व० ॥ ५ ॥ पुण्यबलें न सके करी रे, नृपने कांइ विरूप ॥ व० ॥ चिंते नृपने नारिशुं रे, प्रेम निवरू ठे अनूप ॥ व० ॥ ६ ॥ जो मारुं नृप नारिने रे, तो मरसे नृप आप ॥ व० ॥ खस जासे सीतल जलें रे, टलसे सर्व संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ ठानो ठल ताके रसी रे, लागो रहे नित पूठ ॥ व० ॥ सूती सेजें तूं एकली रे, ऊपाडी तेणे डुठ ॥ व० ॥ ८ ॥ इणगिरि टूंकें मूकीने रे, आप थयो विसराल ॥ व० ॥ पूरव पुण्यें जेटीया

रे, तें श्रीऋषन्न कृपाल ॥ व० ॥ ए ॥ तूठी हुं जिन न क्तिथी रे, आपुं तुं वर माग ॥ व० ॥ डुलहो दर्शन दे वनो रे, दीठो थे सोनाग ॥ व० ॥ १० ॥ देवीने में वीनव्युं रे, जो तूठी मुज माय ॥ व० ॥ संतति नहीं महारे किस्यो रे, कीजें तास उपाय ॥ व० ॥ ११ ॥ चंपकमालाने कहे रे, निसुणी वाणी एम ॥ व० ॥ चक्केसरी देवी वली रे, बोली धरी अती प्रेम ॥ व० ॥ १२ ॥ पुत्र पुत्रीने जोमले रे, थाशे तुज संतान ॥ व० ॥ गर्न रोध तहारे थयो रे, तेतो नूत निदान ॥ व० ॥ १३ ॥ हवे डुःख देतां वारशुं रे, निज सेव कने नूत ॥ व० ॥ शिक्षा देसुं आकरी रे, खल न करे करतूत ॥ व० ॥ १४ ॥ नृप कहे मति तुज रूअमी रे, माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माहारी जरूरे रे, तुज विण कुण गुण गेह ॥ व० ॥ १५ ॥ प्रिया कहे खिति कंतनें रे, परम कृपा परजूंज ॥ प्रीतम सांजलो ॥ हार दीधो ए देवीयें रे, नामें लक्ष्मी पूंज ॥ प्री० ॥ १६ ॥ सप्रन्नाव सुर संक्रम्यो रे, हार रयण बहु मूल ॥ प्री० ॥ सयल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग अनुकूल ॥ प्री० ॥ ॥ १७ ॥ एहथकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान ॥ प्री० ॥ अतुल विघन जाशे परां रे, वधशे जगमां

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछ्यो वली देवी कहे रे, नूत त
णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें ते गयोरे, तुज छवि
गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही द
यिता गणी रे, घणुं डुःख पाम्यो नूप ॥ प्री० ॥ २० ॥
सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
तिण वेला एक खेचरी रे, नन्नपंथथी आवंत ॥ प्री०
॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवीलहे रे, खगनारी हुई संग
॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछ्युं वचन विनं
ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो
सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोली तिका रे,
मुज डुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
नामिनी रे, करशुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें
मूकशुं रे, जिहां तुज प्राणाधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इंम
आसासें खेचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥ कांति
विजय इंम चौदमी रे, नाखी निरूपम ढाल ॥ प्री० २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांनल गुण
खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे ठाण ॥ १ ॥
स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे छे मुज पूठ ॥ जो

तुज रूप निहालशे, शील खंमशे ऊठ ॥ २ ॥ सोक धरम माहरे हसे, जनमां वधे डुःखदाय ॥ खोइश तुं कुल वट्टमी, परवश वास वसाय ॥ ३ ॥ नवरस लोत्ती नाहलो, अवगणशे कुल लाज ॥ आवी तुरत जिम ताहरो, विषम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल जर वहे, आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोमीतो आई थां ॥
रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

गुहीर नदी जल उछले ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन नी ठांट हो, मृगा नयणीरा जमर सुणो वातमी, मा रुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥ वा० ॥ हीयकुं ना खे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेचरी ॥ वा० ॥ हणसे सही इंणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु माले बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति दाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इम मन मुज डुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेचरी ॥ वा० ॥ सुक्क कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ वि द्या बलें ते खेचरी ॥ वा० ॥ कीधो फामी डुजाग हो ॥ मृ० ॥ छिड़ कस्यो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

णे माग हो ॥ मृ० ॥ ४ ॥ मुज तनु चरच्यो चंदने ॥ वा० ॥ करी मृगमद झिरकाव हो ॥ मृ० ॥ अगर प्रमुख शुभ वस्तुयें ॥ वा० ॥ कीधी मुने गरकाव हो ॥ मृ० ॥ ५ ॥ काठ विवरमां मुज धरी ॥ वा० ॥ ढांके ऊपर फाल हो ॥ मृ० ॥ तदनंतर न लहुं किस्युं ॥ वा० ॥ गर्भे रही जेम बाल हो ॥ मृ० ॥ ६ ॥ नयणें दीठ हवे नाथजी ॥ वा० ॥ पूरवपुण्य संयोग हो ॥ मृ० ॥ नृप कहे तुज विरहण दुखें ॥ वा० ॥ मेलविउ ए योग हो ॥ मृ० ॥ ७ ॥ चयमांथी गोला तटें ॥ वा० ॥ वारण मिलिया लोग हो ॥ मृ० ॥ दुःख सुख लाभे लोकमां ॥ वा० ॥ न टले पूरवकृत जोग हो ॥ मृ० ॥ ८ ॥ मंत्रि कहे तेणे खेचरी ॥ वा० ॥ शोक सबल दुःख जालि हो ॥ मृ० ॥ काठ दुवलविवरें धरी ॥ वा० ॥ वहेती करी जल बाल हो ॥ मृ० ॥ ए ॥ मारे ते जो खेचरी ॥ वा० ॥ तो विद्या होये आल हो ॥ मृ० ॥ पोहोर दिवस चढते मल्यां ॥ वा० ॥ सात पोहोर सवि काल हो ॥ मृ० ॥ १० ॥ नृप कहे मुज दयीता तणो ॥ वा० ॥ हरण हूउं सुख हेत हो ॥ मृ० ॥ कुलक्षयकारी भूतनो ॥ वा० ॥ बंध कर्यो संकेत हो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ देवी जस मंदिर तलें ॥ वा० ॥ काठ धर्यो शुभठाम हो ॥

मृ० ॥ इणे अवसर विरुदावली ॥ वा० ॥ बोल्यो वे
तालीक ताम हो ॥ मृ ॥ १२ ॥ प्रबल प्रतापी वि
क्रमां ॥ वा० ॥ कमला त्रासण जेह हो ॥ मृ० ॥
जय जय ते जग शिर ठव्यो ॥ वा० ॥ प्रभुपरें दिन
कर एह हो ॥ मृ०॥ १३ ॥ मंत्री त्रणे अवशर लही
॥ वा० ॥ पगधारो पुर नाह हो ॥ मृ० ॥ नाहण जोय
ण पाणथी ॥ वा० ॥ वीसारो दुःख दाह हो॥ मृ०
॥ १४ ॥ तहत्ति करी नृप ऊठीयो ॥ वा० ॥ आवे
नयरी वाट हो ॥ मृ० ॥ शब्द पंच नादेंकरी ॥ वा०॥
बीहिना दिसि गज थाट हो॥ मृ०॥१५॥ मांगलिआ
जय रव त्रणे ॥ वा०॥ नाचे गणिका कोकि हो ॥मृ०॥
द्ये आसीश सोहामणी ॥ वा० ॥ गुणीजन होका
होकि हो ॥मृ० ॥ १६ ॥ लेतो सद्गुरु वधामणा ॥
वा० ॥ देतो दान उदार हो॥ मृ०॥ जोतो पुरनां व्य
वहारिया ॥ वा० ॥ सणगार्या बाजार हो ॥ मृ० ॥
१७ ॥ नूपति लखनां नेटणां ॥ वा० ॥ ग्रहतो हय
गय घाट हो ॥ मृ०॥ सुणतां याचकनी स्तुति घणी
॥ वा० ॥ करतो अरि मुख दाट हो ॥ मृ० ॥ १८ ॥
मंदिर पोहोतो महिपति ॥ वा० ॥ नेटे निज परिवा
र हो ॥ मृ० ॥ सचिव प्रमुख नमी नूपने ॥ वा० ॥

पोहोता निज निज गार हो ॥ मृ० ॥ १ए ॥ नाहण करी नरपति गृहें ॥ वा० ॥ पूजे अरिहंत बिंब हो ॥ मृ०॥ ज्ञोजन विविध प्रकारनां ॥ वा० आरोगे अविलंब हो ॥मृ० ॥ २० ॥ ज्ञुपति दयीता संगतें ॥ वा० ॥ विलसे नवनव ज्ञोग हो ॥ मृ० ॥ पुण्यथकी दिशा पाधरी ॥ वा० ॥ लहेसे सकल संयोग हो ॥ मृ० ॥ २१ ॥ गर्ज्ञधरे ते दिनथकी ॥ वा० ॥ पटराणी गजगेल हो ॥ मृ० ॥ कांति कहे ए पनरमी ॥ वा० ॥ ढाल सरस रस रेल हो ॥ मृ० ॥ २२॥

॥ दोहा ॥

॥ युगल गर्ज्ञ जिम जिम वधे, तिम तिम नृप मनमोद ॥ राणी ज्ञाग्य सोज्ञाग्य ज्ञर, धारे विविध विनोद ॥ १ ॥ तन रक्षा रूकी परें, ज्ञुप करावे तास ॥ करे कृतारथ दोहला, पूरे मननी आस ॥ २ ॥ दयिता मुख केते दिनें, केतेक दल छवी हुंत ॥ तनु डुर्बल सणगार रस, अल्प अल्प ज्ञावंत ॥ ३ ॥ मुख परिमल रस लालचें, चिहुं दिसि ज्रमर ज्रमंत ॥ सहज सुरज्ञि उसासथी, पंकज कुल लाजंत ॥ ४ ॥ पूर्ण दिवस शुज्ञ वासरें, शुज्ञ मुहूर्त्त शुज्ञ वार ॥ पुत्र पुत्रिका रुप तिणे, प्रसव्यो युग्म उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ गेंडुक्कानी ॥ एदेशी ॥

॥ पटराणी प्रसव्यो तिहां रे हांजी, सुत तनूजानो युगल अनूप ॥ ए रूको रे ॥ रतिपतिनो रंग, ए रूको रे ॥ सरसतीनो अंग, ए रूको रे ॥ जिम नंदन खितिथी हूवेरे हांजी, कल्पवृक्ष ठे अंकूर रूप ॥ ए० ॥ १ ॥ वे गवती दासी धसी रे हांजी, दीये वधामणी नृपने आ य ॥ ए० ॥ शिर न्हवरावे संतोषसुं रे हांजी, दास करम तस टाले राय ॥ ए० ॥ २ ॥ वेग करावो नय रमां रे हांजी, दशदिन नृप थितिपति काज ॥ ए०॥ पुत्रागमननां हर्षथी रे हांजी, हूर्ड अपूरव मन सुख साज ॥ ए० ॥ ३ ॥ नगर नुवन सवि चीतस्यां रे हांजी, बारण ठविया सोवन कुंन ॥ ए० ॥ ध्वज पट लह काविया रे हांजी, रोप्या टोके कदली थंन ॥ ए० ॥ ४ ॥ रयणथंन जना कस्या रे हांजी, अति सुंदर पु र शोना हेत ॥ ए० ॥ तोरण दल सहकारनां रे हां जी, बांध्या नव मंगल शंकेत ॥ ए० ॥ ५ ॥ पुरलो क हट सहेरमां रे हांजी, थापी सोवन दीपक जेह ॥ ए० ॥ सेरी पंथी पूजावीने रे हांजी, कीधां सींच्या चंदन घोल ॥ ए० ॥ ६ ॥ राज मारग त्रिक च चरें रे हांजी, देवरावे मणि कंचन दान ॥ ए० ॥ क

दि जवन सोधि विधि रे हांजी, मूक्यां सघला बंदी वान ॥ ए० ॥ ७ ॥ वाज्यो पम्ह अमारनो रे हांजी, देश मांहे जय जंजण नाग ॥ ए० ॥ कुसुम पगर जां तें जस्था रे हांजी, धूपघटा पसरी नज्ज माग ॥ ए० ॥ ८ ॥ जनपद अकर कस्था हसें रे हांजी, ताड्या डुंडु जि वाज्या घोर ॥ ए० ॥ नाच करी हाव जावथी रे हांजी, वार वधू कुल चतुर चकोर ॥ ए० ॥ ए ॥ अक्षत पात्र जरी रंगथी रे हांजी, नृपने वधावे आवी नार ॥ ए० ॥ विकशित रंग वधामणां रे हांजी, चतुर सचिव मलिया दरबार ॥ ए० ॥ १० ॥ जुवन जुवन थापा दीया रे हांजी, सुरजी अगर कुंकुम घन घोल ॥ए०॥ उत्सवमहोत्सव मांमिया रेहांजी, शोजावी नगरनी पोल ॥ ए० ॥ ११ ॥ मांगलिआ मंगल जणे रे हांजी, बंजण जणे बहुला स्तुति पाठ ॥ ए० ॥ मल्ल रमें बल माल्हता रे हांजी, नटुआ ठेके उंचा काठ ॥ ए० ॥ १२ ॥ जिन जुवन पूजा रचे रे हांजी, सामी जक्ति करंत अनेक ॥ ए० ॥ अवसर कर खेंचे नही रे हांजी, कहियें साचो तास विवेक ए० ॥ १३ ॥ अशुचिकर्म वित्या पठी रे हांजी, संतोषे सुपरें कुटुंब ॥ ए० ॥ कर पंकज जोमी कहे रे

हांजी, ते आगल नृपति अविलंब ॥ ए० ॥ १४ ॥ मया करी मलया सुरी रे हांजी, आप्यां मुजने वे संतान ॥ ए० ॥ तस नामे होजो विन्हे रे हांजी, मलय सुंदरी अभिधान ॥ ए० ॥ १५ ॥ पंचधाइ पालीजता रे हांजी, कुमर कुमरी वधे ससनूर ॥ ए० ॥ दिनदिन नवल कला ग्रहे रे हांजी, वीज तणो जिम चंद्र अंकूर ॥ ए० ॥ १६ ॥ हसण लुवण चलणादिकें रे हांजी, जिम जिम साधे शैशव योग ॥ ए० ॥ तिम तिम नृप राणी लहे रे हांजी, हर्ष मनोहर फल संयोग ॥ ए० ॥ १७ ॥ निरुपम योवनने रसें रे हांजी, शिशुता रस मूके आस्वाद ॥ ए० ॥ कालें उचित कला ग्रहे रे हांजी, बुध संगें निज मति उनमाद ॥ ए० ॥ १८ ॥ किणदिन मदगज राजथी रे हांजी, खेल करे पण नृप सुत बांध ॥ ए० ॥ ख्यालकरे हयथी कदे रे हांजी, खड्ग रसें नाखें सरसांध ॥ ए० ॥ १९ ॥ कुमरी पण भमरी परे रे हांजी, वींटी परिकर अति अनुकूल ॥ ए० ॥ वनवाडी आरामसां रे हांजी, रमण करे यौवन मद जूल ॥ ए० ॥ २० ॥ कांतिविजय बुद्ध शोलमी रे हांजी, ढाल कही उत्सवनी एह ॥ ए० ॥ पुण्यथकी जय मा

लिका रे हांजी, वाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए० ॥ २१ ए० ॥ र० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४२ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंमखंम रस छे नवनवा, सुणतां मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो, प्रथम खंम संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम निर्मलयसुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोमि ॥ बीजो खंम कहुं हवे, आलश निद्रा गेमि ॥ १ ॥ धुर मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मीठी सत्रा सुणे वली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोकट फोरवे चातुरी, विचमां करे बकोर ॥ रस नंजण विकथा करे, माणस नहीं ते ढोर ॥ ३ ॥ तेहत्नणी मन थिर करो, मूकी अलगो धंध ॥ कहेतां श्रोता सांजलो, सरस कथा संबंध ॥ ४ ॥ लही हवे कुमरी शुत्नग, यौवन पूर अत्नंग ॥ काढें काम समूद्धना, जगमें विविध तरंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ पनामारु यौवन आईजी पूर ॥ए देशी॥

॥ यौवन रस पूरें चढी रे, नवल गोरीरो गात ॥ जलकें करे छविचंद्रिका रे, जाणु आसो पूनिमनी रात ॥ १ ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर, राजी रूपे लूटी लीधी रति राणी ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर ॥ ए आंकणी ॥ वेणि निहाली शामली रे, नाखुं नागिण घोल ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु बेठी भमरनी ठेल ॥ क० ॥ २ ॥ भाल भलुं भाग्यें भर्युं रे, दीपे सबल सुघाट ॥ पुण्य रेख लिखवा भणी रे, विधि मांड्यो कनकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ वीछड्या मृगनां जिस्यां रे, लोचन तास वखाण ॥ तीखाई विधिना गढी रे, जिम सर चाढ्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा जिसी रे, नासा सरल सुहाय ॥ चांचें लाज्या सूडला रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ वडवानल संगति मिसें रे, मानु पेठी विद्रुम जाल ॥ क० ॥ ६ ॥ विहुं पख धारे अतिकला रे, तस मुख चंद्र हसाय ॥ निरखी खिसाणो चंद्रमा रे, नित्य उदय लही खिसी जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंहाली बांहडी रे, तेह लुढावे बाल ॥ अभिनव ओपे जोडले रे, नमी आवी क

ल्पतरु माल ॥ क० ॥ ८ ॥ गोल कठिन कंचुक कस्या रे, कुच युग एम शोजाय ॥ काम नृपति जीतवा जणी रे, इहां तंबू दीधा आय ॥ क० ॥ ए ॥ उदर सकोमल पातलुं रे, जेहवुं पोयण पान ॥ जलकारें जाएयो परु रे, अति कनक तवकने वान ॥ क०॥१०॥ राजे सुंदर वाटलो रे, जीणो केमनो लंक ॥ देखलही वन गिरि गया रे, मृगराज थया सारांक ॥ क०॥११॥ जंघ युगल दीपे जलां रे, अचला कदली खंज ॥ मदन मालियें सिंचिया रे, जरी लावण्य अमृत कुंज ॥ ॥ क० ॥ १२ ॥ उंचा मांसल सुंदरू रे, पग काठब अनुहार ॥ तस तुलना करवा जणी रे, जाणे कमठ लीयो अवतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग आंगुली रे, ऊपर नख दीपंत ॥ माणिक संकिल लेखणी रे, रति पतिनी एहवी न हुंत ॥ क०॥ १४ ॥ पगें जांजर जम जम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लक्ष्मी पूंज सोहामणो रे, तस कंठे राजे हार ॥ क० ॥ १५ ॥ कर कंकण मणिमय जड्या रे, काने कुंमल जोरु ॥ शोहे सवि शिणगारथी रे, गज गामणिआं शिर मोरु ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपणे दिन निगमी रे, वर

लायक ते बाल ॥ नाखी बीजा खंमनी रे, इम कांतें पहेली ढाल ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे अठे एह नरतमां, पुरवर पुहवी गण ॥ सूरपाल नामे तिहां, राज्य करे खिति नाण ॥ १ ॥ पटराणी पदमावती, रूप शील गुण वास ॥ सुत सुंदर तेहने हूर्ज, नाम महाबल तास ॥ २ ॥ विद्या साधक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलट्टण कारणी, विद्या दीधी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामोहनी, नूत दमणि वशितंत ॥ मंत्र यंत्र कार्मण प्रमुख, शीख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजें, खासा आप खवास ॥ मिलणु आपी मोकले, वीर धवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरें पण नृप वीनवी, कीधुं साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंड्रावती, पोहोता सुगुण सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो नेटणो, उचित करी व्यवहार ॥ नृप आगल बेठा सहु, नाखे कुशल प्रकार ॥ ॥ ७ ॥ निरखी नृप कहे इश्यो, ए कुंण तरुणो जेह ॥ एक सचिव माह्यो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ७ ॥ कही काम निज स्वामीनां, जठ्यो तेह प्रधान ॥ नृप दत्त मंदिर जई, उतारथ्या शुन्नथान ॥ ए ॥ राज कुम

र मन कौतुकी, निरखत पुर आवास ॥ जमतो जम
तो आवीउं, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ थाहारा मोहला ऊपर मेह जबूके
वीजली होलाल, जबूके वीजली ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तव तिहां होला
ल निहाली० ॥ मांडे मींट अनूप कुमर ऊभो जिहां
हो० ॥ कुं० ॥ जक न पडे तिल मात्र, के विरहथी
परजली हो० ॥ के ॥ कामातुर अकुलात, के हुइ
मन आकली हो० ॥ के० ॥ १ ॥ निरखी सुंदर अंग
वखाणे तेहनां हो० ॥ व० ॥ फूल्या जासू रंग चरण
तल एहनां हो० ॥ च० ॥ तेज तणो अंबार रह्यो सु
रपात जिस्यो हो० ॥ र० ॥ मयगल सुंडाकार सुजंघा
युग तिस्यो हो० ॥ सु० ॥ २ ॥ सुंदर कटीनो लंक वि
राजे लंकथी हो० ॥ वि० ॥ मावे करतल माग जलो
मध्य अंकथी हो० ॥ ज० ॥ हृदय महा सुविशाल ज़ु
जा जोगल जिसी हो० ॥ ज़ु० ॥ रेखा त्रण गलनाल
कहुं उपमा किसी हो० ॥ क० ॥ ३ ॥ सूडा चंचु स
मान सुहावे नाशिका हो० ॥ सु० ॥ मणिदर्प्पण उप
मान कपोलें जासिका हो० ॥ क० ॥ कामणगारी का
नें अडी बिहुं आंखडी हो० ॥ अ० ॥ श्याम जमर

अनुमान शिखा रतिपति ठरी होे० ॥ शि० ॥ ४ ॥ ब
लिहारी लउं तास घड्यो जेणे एहवो हो० ॥ घ० ॥
निरख्यो रूप निवास जनम सफलो हवो हो० ॥ ज०॥
नृप बाला त्तरी नयण पीये रस रूपनो हो० ॥ पी० ॥
लागो जइने गयण उमाहो चूपनो हो० ॥ उ० ॥ ५ ॥
नृपसुत पण ते देखी थयो मदनाकुलो हो० ॥ थ० ॥
वाध्यो विरह विशेष अलेख उपांपलो हो० अ० ॥
अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
च० ॥ परणी अछे एह बाल के हजीअ कुंआरिका
हो० ॥ के० ॥ ६ ॥ इम चिंतवतां लेख लखीने बा
लिका हो० ॥ ल० ॥ नाखे नीचुं देखत लागी जा
लिका हो० ॥ त ला० ॥ कुमरें सकल उदंत चतुर प
णें वांचिया हो० ॥ च० ॥ पदपद अंग अनंतह ह
रख रोमांचिया हो० ॥ ह० ॥ ७ ॥ कवण अछे तुज
ज्ञाति रहे तुं किहां वली हो० ॥ र० ॥ नाम कवण कु
ण जाति जायो तुं महाबली हो० ॥ जा० ॥ वीरधवल
नी जाति अ हुं बुं कुमारिका हो० ॥ अ० ॥ मोही ता
हरु गात निहाली बारिका हो० ॥ नि० ॥ ८ ॥ तुम
विरहें मुज काय रही ए जलबली हो० ॥ रही० ॥ त्ते
ट देइ महाराय करो हवे सीअली हो० ॥ क० ॥ वां

ची इम विरतंत कुमर मन वेधिउं हो० ॥ ने
ह निविरुने तंत विहुं मन साधिउं हो० ॥ विहुं० ॥
ए ॥ कुमर थई थिरथंन्न निहाले वली जिहां हो० ॥
नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
क० ॥ कुमर संवाहो वेग पियाणो आज छे हो० ॥
पि० ॥ छांमो निरखण नेग उतावलो काज छे हो० उ० ॥
॥ १० ॥ वेर वसाव्यो ध्याय तिणे तिहां आविने हो०
॥ ति० ॥ हठ नाण्यो अकुलाय चल्यो विरचाइने हो०
॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आयरु हो० ॥
हि० ॥ मांरु आघा जोर चरण पाछा परु हो० ॥ च०
॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
सि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घली हो० ॥ ह०

म हिंसतो हो० ॥ आ० ॥ अतिछूवा दरवान सूता इं
से वेचिया हो० ॥ सू० ॥ के कोइ मंत्र निदान तिणे
जन वंचिया ॥ हो० ॥ ति० ॥ १४ ॥ इम चिं
तवी ते तेह मोही रूपें घणुं हो० ॥ मो० ॥
भाखें धरती नेह मनोरथ आपणुं हो० ॥ म० ॥ आ
वो कुमर करार करो इणे आसणें हो० ॥ क० ॥ ला
हो ल्यो मुज सार शरीरने फरसणें हो० ॥ श० ॥ १५ ॥
कुमर सुणी ते वाणी विचारे निज हियें हो० ॥ वि० ॥
पेसी एहवे ठाण विसास न कीजीयें हो० ॥ वि० ॥
कपट करी ए नारि करुं राजी खरी हो० ॥ क० ॥ बो
ले वचन विचार सुगुण तिहां अवसरी हो० ॥ सु०॥ १६ ॥
सुण सुंदरी गुण रेख विदेशी आवीउं हो० ॥ वि० ॥
मलयानो एक लेख विगतसुं लावीउं हो० ॥ वि० ॥
देखाडे तसठाम देई ते तेहने हो० ॥ दे० ॥ तो वली
ताहारो काम करुं हुं थिर मने हो० ॥ क० ॥ १७ ॥
तव नृप दयिता आवी देखाडे वाटडी हो० ॥ दे० ॥
उंचो चढिउं धाय नारी नीचें खडी हो० ॥ ना० ॥
दीठी बाला दीन वदन करतल धरी हो० ॥ व० ॥
वेठी करी आकीन कुमर एक उपरिं हो० ॥ १८ ॥ कु० ॥

ची इंम विरतंत कुमर मन वेधिउं हो० ॥ ने
ह निविरूने तंत विहुं मन साधिउं हो० ॥ विहुं० ॥
ए ॥ कुमर थई थिरथंत्र निहाले वली जिहां हो०॥
नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो०॥
क० ॥ कुमर संवाहो वेग पियाणो आज छे हो० ॥
पि० ॥ ठांरूो निरखण नेग उतावलो काज छे हो० उ० ॥
॥ १० ॥ वैर वसाव्यो ध्याय तिणे तिहां आविने हो०
॥ ति० ॥ हठ नाण्यो अकुलाय चल्यो विरचाइने हो०
॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आथरूे हो० ॥
हि० ॥ मांरूे आघा जोर चरण पाछा परूे हो० ॥ च०
॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
सि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घरूी हो० ॥ ह०
॥ रहेसे पण निशिचार आविश हुं दरूवरूी हो० ॥
आ० ॥ १२ ॥ धारी इंम मनमांहे गयो निज थानकें
हो० ॥ ग० ॥ अवसर देखी त्यांहिं आव्यो उचानकें
हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप थइ फाल दिये गढ उपरें
हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी परें
हो० ॥ वि० १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेस
तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुष इंणे ठाम आव्यो कि

म हिंसतो हो० ॥ आ० ॥ अतिहूत्या दरवान सूता इं
णे वेचिया हो० ॥ सू० ॥ के कोइ मंत्र निदान तिण
जन वंचिया ॥ हो० ॥ ति० ॥ १४ ॥ इम चिं
तवी ते तेह मोही रूपें घणुं हो० ॥ मो० ॥
नाखें धरती नेह मनोरथ आपणुं हो० ॥ म० ॥ आ
वो कुमर करार करो इंणे आसणें हो० ॥ क० ॥ ला
हो ल्यो मुज सार शरीरने फरसणें हो० ॥ श० ॥ १५ ॥
कुमर सुणी ते वाणी विचारे निज हियें हो० ॥ नि० ॥
पेसी एहवे ठाण विसास न कीजीयें हो० ॥ वि० ॥
कपट करी ए नारि करुं राजी खरी हो० ॥ क० ॥ बो
ले वचन विचार सुगुण तिहां अवसरी हो० ॥ सु० ॥ १६ ॥
सुण सुंदरी गुण रेख विदेशी आवीउं हो० ॥ वि० ॥
मलयानो एक लेख विगतसुं लावीउं हो० ॥ वि० ॥
देखाडे तसठाम देई ते तेहने हो० ॥ दे० ॥ तो वली
ताहारो काम करुं हुं थिर मने हो० ॥ क० ॥ १७ ॥
तव नृप दयिता आवी देखाडे वाटडी हो० ॥ दे० ॥
ऊंचो चढिउं धाय नारी नीचें खडी हो० ॥ ना० ॥
दीठी बाला दीन वदन करतल धरी हो० ॥ व० ॥
बेठी करी आकीन कुमर एक ऊपरिं हो० ॥ १८ ॥ कु० ॥

कुमरजणे सुण बाल करो चिंता किसी हो० ॥ क० ॥ करवा तुम संभाल आव्यो हुं उल्लसी हो० ॥ आ० ॥ देखो उघामी आंख हवे कां पांतरो हो० ॥ ह० ॥ नाखो विरहो ताकी करो मत आंतरो हो० ॥ क० ॥ ॥ १ए ॥ उठी बाला रंग मिलि मन मोदसुं हो० ॥ मि० ॥ माथुं अतिहें उमंग धरे तस गोदमां हो० ॥ ध० ॥ बीजे खंके ढाल थई बीजी इहां हो० ॥ थई० ॥ कांति कहे वर बाल बिहुं मिलिया तिहां हो० ॥ बि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ करे विविध तिहां गोठकी, बिहुं जण प्रेम धरंत ॥ कुमर कहे सवि आपणो, ते आगल विरतंत ॥ १ ॥ पुहवी ठाण तणो धणी, सूरपाल मुज तात ॥ पट देवी पद्मावती, तेहनो हुं तन जात ॥ २ ॥ नाम महा बल माहरो, देश निरखणनी खंत ॥ नृप कामे परि वारशुं, इहां आव्यो गुणवंत ॥ ३ ॥ निरखत अचरज पुरतणां, दीठो तें उपकंठ ॥ लेख लख्यो ते वांचतां, जाग्यो नेह उल्लंठ ॥ ४ ॥ मलीउ हसि हवे शीख ठे, चालश मुख सहु साथ ॥ वचनसुणी बाला विलपि, इम कहे जोमी हाथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उत्नी जावलदे राणी अरज करेछे, अवको वरसालो घर कीजें हो॥ गढबुंदी वाला ॥ ए देशी ॥

॥ मलया कहे विरहानल तापी, अवसर एह र ह्यानो हो ॥ प्रनु घणरा हो छोजी, वाला चलण न देस्यां ॥ चलण तुमारो मोहन मरण हमारो, रहोर हो कह्युं मानो हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ करुणा करीने मुज उपर विनुजी, पूरो मनोरथ रूडा हो ॥ प्र० ॥ लक्ष्मी पूंज मुत्ताहल मनजुं, एह ल्यो चातुर सूडा हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ हार तणे मिसे ए वरमाला, कंठ ठवी इम जाणो हो ॥ प्र० ॥ हवणाही गांधर्व विवाहें, परणी मुज सुख माणो हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुमर कहे सुण चंद्र मुखी तें, वचन कह्युं ते वारू हो ॥ प्र० ॥ मात पिता आणा विण कन्या, वरवी नहीं विवहारू हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ दुःख म धरिस रही दिन केताइक, बुद्धि करुं हुं तेहवी हो ॥ प्र० ॥ मात पिता जन जोते तु जनें, देसे मुज ततखेवी हो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पण बांध्यो ए में तुज आगें, मन रलीआयत कीजें हो ॥ प्र० ॥ ढील हुवे जावाने तेहथी, सीखमी सी हवे दीजें हो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ कनक[illegible]पराणी, वातसुणे र

ही गलें हो ॥ प्र० ॥ रीसाणी चिंते ए धूरत, लागो कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मल्यो ए एहनें, मुज कारज नवि सीधुं हो ॥ प्र० ॥ दोसीने दादरने द्वारें, गर्नेसें तालुं दीधुं हो ॥ प्र० ॥ ८ ॥ कुमरी कहे मुज एह विमाता, मुज मातानी शोकि हो ॥प्र०॥ कनकवती इंणे कपट करीनें, राख्यांछे बिहु रोकी हो ॥ प्र० ॥ ए॥ व्यतिकर सर्व सुण्यो रीसाली, अनरथ करसे प्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर जणे एहनें हुं कूके, वंची आव्यो आहिं हो ॥प्र०॥ १०॥ वात करे जई इंम तेणी वेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आवी प्रकाशे मुख रस वाही, दीठी वात उल्लासे हो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कोपें लोचन रातां कीधां, हणवाने मन प्रे स्युं हो ॥ प्र० ॥ सुजट घटा वींटये नरनाथें, कन्या मंदिर घेस्युं हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ कहे कुमरी हैहै विष कन्या, हुं संरजी कां नाथें हो ॥ प्र० ॥ मुज कारण अनरथ लहेसे, ए आयो परायें हाथें हो ॥प्र०॥ १३ ॥ कुमर जणे सुजगे कां बीहो, एहथी नहीं मुज पीमा हो ॥ प्र० ॥ परघर पेसे तेतो किहां किणे, राखे ठलबल छींमा हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंम कही आप शिखाथी काढी, गुटिका मुखमां धारी हो ॥ प्र० ॥ तस

अनुजावें चंपक माला, थइ बेठो ते नारी हो ॥ प्र०
॥ १५ ॥ रूप निहाली निज जननीनुं, कुमरी अचर
ज भारी हो ॥ प्र० ॥ मांजी तातुं नरवर आव्यो, दे
खे सुताने नारी हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नृप बोल्यो क
नका मुख देखी, कूडुं इम कां भांखेहो ॥ प्र० ॥ अस
वे आल देई पर उपर, कां डुरगति फल चाखे हो ॥
॥ प्र० ॥ १७ ॥ आक्रोसी खिलखी थई कुमरें, बोला
वी हसी आगें हो ॥ प्र० ॥ कहो बहेनी पीउ को
प्या केणे, इहां आव्या किण ठागें हो ॥ प्र० ॥
॥ १८ ॥ पुरनो लोक अनादर वयणे, कनका सें निर
धारे हो ॥ प्र० ॥ कहे कनका जो हुं बुं जूठी, तो कि
हां हार देखाडे हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥ छल जननी निज
कंठथकी ते, ऊंचो हार उछाले हो ॥ प्र० ॥ नृप प्रमु
ख सहुने देखाडे, कनकानो मद गाले हो ॥ प्र० ॥ २० ॥
तिण वेला कुमरीनी जननी, भर निद्रामांहें हूंती हो
॥ प्र० ॥ सुख निद्रायें निज पुत्रीनी, विगत लहे नहीं
सूती हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ फरी आव्या हसंतां निज
थाने, नृपादिक सविलोक हो ॥ प्र० ॥ कनकवती
नी निंदा करतां, लोक वदन कह्यां बोक हो ॥ प्र० ॥
॥ २२ ॥ कूडी पडी कनका महाबलनो, विघन थयो

विसराल हो ॥ प्र० ॥ कांति कहे इम बीजे खंमे, ए थइ त्रीजी ढाल हो ॥ प्र० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनका चित्त चिंता करे, नयणें नावे नींद ॥ मलया किम दुःख पामसे, मानी जेह महींद ॥ १ ॥ हवे कुमर मुख मांहेथी, काढे गुटिका रयण ॥ प्रगट हूउं नररूप त्यां, जाणे नवलो मयण ॥ २ ॥ कहे कुमर अनरथ वस्यो, हुउं एह विसराल ॥ जो वली रहियें तो हूवे, अणचिंत्यो को आल ॥ ३ ॥ तेमाटे तुम सीखथी, चालीश हुं निजदेश ॥ प्रीतलता संज्ञालजो, जगी हृदय निवेश ॥ ४ ॥ कस्यो शुलन मेला वस्यो, आपण बिहुंनो जेण ॥ चिंता करशे तेह विधि, म करें चिंता तेण ॥ ५ ॥ वलि अनोपम तुजने कहुं, सुंदर एक सलोक ॥ सरवकाल ते चिंतवे, थाशे सघला थोक ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ विधत्तेय द्विधिस्तत्स्या,(चिमत्कारपामीने) न्नस्यात् हृदयचिंतितं ॥ एवमेवोत्सुकंचित्त, मुपायां श्चिंतयेद्दहून् ॥ १ ॥ दोहा ॥ वरण जकेस्या ढांकणे, इम लागा तस चित्त ॥ तेह प्रशंसे चित्तचकी, ए श्लोक सबल सुपवित्त ॥ ७ ॥ सुखिया होजो साजना, कुशल्या होजो पंथ ॥ देजो वेग मेलावमो ग्रहे

जो लखमी गंथ ॥ ७ ॥ कहे वाला नरी लोयणां, रे ठयलां ठेगाल ॥ नेह नवल तुज खटकशे, जिम तन खूतो शाल ॥ ए ॥ गुप्त मोहोलथी नीसरी, आवी च ढ्यो केकाण ॥ नियत प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु हवी ठाण ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ करेलणां घडिदे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण आवी नम्यो, आपे अनोपम हार ॥ वीरधवल दीधो मुने, इम कही कूल तिवार ॥१॥ नविक जन सांजलो रे, मलयानो अधिकार ॥ ज० ॥ एलो सु णतां हर्ष अपार ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ राय कहे तुज चातुरी, दीठी अधिक वदीत ॥ थोडा दिनमां जेहथी, वा धी एवडी प्रीत ॥ ज० ॥ २ ॥ इम कहीने कंठे ठव्यो, कुमरें मायनें हार ॥ घणुं सराहे पुत्रने, राणी पण तेणीवार ॥ ज० ॥ ३ ॥ राज कुमर इम चिंतवे, पण बांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करशुं तेह ॥ ज० ॥ ४ ॥ तिणे अवसर एक आविठ, वीरधवल नो दूत ॥ प्रणमी नृपनें वीनवे, सांजल नर पुरुहूत ॥ ज० ॥ ५ ॥ पुत्री अमचा स्वामीनी, मलया सुंदरी नाम ॥ तास स्वयंवर मांमीठ, करीने प्रतिज्ञा आम ॥ ज० ॥ ६ ॥ धनुष पूर्व परिया तणुं, वज्रसार ठे

सार ॥ जे नर तेह चढावशे, वरशे तेह कुमार ॥ न०
॥ ७ ॥ देशदेशावर रायना, नंदन तेमण काज ॥ दू
त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ न० ॥ ८ ॥
देव महाबल मोकलो, कुमर काम अवतार ॥ कुं
ण जाणे एहथी विधें, योग लिख्यो थानार ॥ न० ॥
ए ॥ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी, आज थइ तिथि खास ॥
आगामी चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ न० ॥
१० ॥ वाटे हुं मांदो थयो, तेहथी हूर्ड विलंब ॥ क
री उतावलो मोकलो, लगन अछे अविलंब ॥न०॥११।
सनमानी ते दूतनें, शीख करे नूपाल ॥ कुमर सजा
मां सांजली, चिंतवे इम हरखाल, ॥ न० ॥ १२ ॥
देवें मुज करुणा करी, नीठ दुःख संयोग ॥ सुखमां
हे जोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ न० ॥ १३ ॥
काज हतुं सांसे पड्युं, सिखायह्युं ते आज ॥ विश्वा
वीश दया करी, मुज ऊपर महाराज ॥ न० ॥ १४ ॥
तात दीए मुज आगन्या, तो तिहां जइ तत्काल ॥
राजपुत्र कुल अवगणी, हुं परणुं ते बाल ॥ न० ॥
॥ १५ ॥ तब नृप निरखी पुत्रने, कहे वछ तुं शुजका
ज ॥ बल वाहनना घाटस्यों, रातें सधावो आज ॥
न० ॥ १६ ॥ कहे कुमर विनयें नम्यो, तात वचन

परमाण ॥ दल सज कीधुं तांवली, बोल्यो हरखें रा
ण ॥ज॰ ॥ १७ ॥ लखमी पुंज मनोहरु, सुत ल्यो
साथें हार ॥ कुमर कहे ते हारनी, वात सुणो निर
धार ॥ ज॰ ॥ १८ ॥ सूतां मुज निशिनें समें, करें उ
पद्रव कोइ ॥ वस्त्र शस्त्र भूषण हरे, गुप्त वीहावें सोइ
॥ ज॰ ॥ १९ ॥ मात कनेथी में ग्रही, हार ठव्यो मुज कं
ठ ॥ आज रयणमां अपहरी, लीधो तेणे उल्लंठ ॥
ज॰ ॥ २० ॥ हार गयो जाणी हवे, माता धारे दुःक ॥
करी प्रतिज्ञा में तिहां, मातानें आजमुरक ॥ ज॰ ॥ २१ ॥
जो नापुं दिन पांचमां, ते मुक्तावली हार ॥ तो मुज
काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ ज॰ ॥ २२ ॥ हार
कदापि नवि लहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र
तिज्ञा आकरी, दुःख धरती इम माय ॥ ज॰ ॥ २३ ॥
अहश नरु जे रातिमां, राक्षस के चूरेल ॥ पोहोर
एक बे रही इंहां, नाखुं तस पग जेल ॥ ज॰ ॥ २४ ॥
स्ववश करी तेह दुष्टनें, लेई हार जलिन्नांति ॥ सुंपी
मातानें पछें, चालीश पाछली राति ॥ ज॰ ॥ २५ ॥
राय प्रशंसे पुत्रनां, साहस सत्त्व विशाल ॥ बीजे खंडें
ए कही, कांतें चोथी ढाल ॥ ज॰ ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी ऊठ ॥ बार जमी खांडुं ग्रही, बेठो दीवा पूंठ ॥ १ ॥ मध्य रयणीनें आंतरें, चंचल सबल जस टेक ॥ गोख मांथी मलपतो, पेसें कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर विचारे पूर्वपरें, करसे कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेली जली, आपुं शिक्षा शुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन चूडी खलखलें, ऊपें कंकण रेह ॥ तेह जणी कर नारिनो, ए छे निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी, आवी छे इहां कोय ॥ देव सक्तीनां बल थकी, दृष्टें नावे सोय ॥ ॥ ५ ॥ जो नांखुं खांडुं खरुं, तो वली जासे जागि ॥ चढशे हाथ न माहरे, नहीं आवे वली लाग ॥ ६ ॥ एम विचारी ऊठ्यो, त्रिवली जालें चाढि, चढि बेठो कर ऊपरे, ग्रही बे हाथें गाढि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरलिया मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरमांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढिउ आंटा खाय ॥ सुर असुरनां रे कुल बीवरावतो रे, उलट पलट करी चाल्या जाय ॥ मं० ॥ १ ॥ निरजय बेठो रे कुमर ते ऊपरें रे, तेहनें जारें कर लचकाय ॥

पवने उमाड्यो रे ध्वज पटनी परें रे, हठ चढिउ चिहुं दिशि झोलाय ॥ मं० ॥ २ ॥ जटकि आघातें रे नीचो नांखवा रे, पण आसण न करे चलचाल ॥ कुमरें थ काड्यो रे अलरू केकाण ज्युं रे, तव प्रगटी देवी वि कराल ॥ मं० ॥ ३ ॥ एह रोशाली रे मुजनें नांखसे रे, विषम महावन गिरिवर ठेह ॥ इम निरधारि रे मारी आकरी रे, कुमरें करकश मुठी तेह ॥ मं० ॥ ४ ॥ दीन रमंती रे देवी इम कहे रे, रे करुणा वंत दयाल ॥ मुज अबलानें रे सवला कां नडे रे, मूक हवे न करुं तुज चाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ मूकी कुमरें रे ते नासी गइ रे, ठेद्यो कानें कूकर जेम ॥ आप तिवारें रे पडिउ गयण थी रे, विद्या चूक्यो खेचर एम ॥ मं० ॥ ६ ॥ फलभर भारी रे वन आंबा शिरें रे, आवी रह्यो नृप नंदन वेग ॥ नयण निमेली रे क्षण मूरछा लह्यो रे, पवनें विंज्यो अति तेग ॥ मं० ॥ ७ ॥ कुमर विमासे रे चे त वल्या पछें रे, किण थानक हुं आयो चालि ॥ रयणि अंधारें रे कर फरस्या थकी रे, जाण्यो तरु साही त स डालि ॥ मं० ॥ ८ ॥ क्षण एक मांहें रे तरुथी उ तरी रे, आवी बेठो तरुने खंध ॥ इम मन सोचे रे कुंण ए आपदा रे, दीधी तिण कुण वैर प्रबंध ॥ मं० ॥

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किहां हुं ए किम थासे सूल ॥ हार न पामे रे जननी जो हवे रे, करशे जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय वियोगें रे वली मुज तातजी रे, धरवा प्राण अछे अ समछ ॥ हैहै दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इम चिंता नर बेठो तछ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर वागो रे तव रव नूमिनो रे, नूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारि ग लीने अरधी आवतो रे, नजर पड्यो अजगर एक थू ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली रे, आवे तरु आफलवा कोय ॥ ए विछोडावुं रे जो जोरो करी रे, तो मुज आतम सफलो होय ॥ मं० ॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुथी ऊतर्यो रे, बेठो ग नें आंबा गोढ ॥ अजगर आयो रे देवा विंटली रे, कुमर ग्रहे तस मुख अति प्रौढ ॥ मं० ॥ १४ ॥ व दन विदार्युं रे होठ बिन्हे ग्रही रे, ते मांहेंथी काढी एक नारि ॥ वचन कहंती रे माहारे इण समे रे, श रण होजो महाबल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥ ना म सुणीनें रे पोतानुं तिहां रे, विस्मय विकशित लो चन थाय ॥ दूरें ऊछाली रे अजगर नाखीउ रे, देखे अबला सुखगत ठाय ॥ मं० ॥ १६ ॥ मलया सरखी रे निर

खी गोरडी रे, चित्त चमक्यो ढोले तिहां जाय ॥ चेतन वाल्युं रे तव वाला जणे रे, पूरवलो ते श्लोक सुणा य ॥ मं० ॥ १७ ॥ कुमर सुणीनें रे तिहां निश्चय करी रे, वीरधवल तनुजा ए होय ॥ कर पद सेवा रे कुमर करे वली रे, जिम पीडा तनु विरली होय ॥ मं० ॥ १८ ॥ कुमर पयंपे रे ऊठो सुंदरी रे, तुम विरहें मु ज मन शीदाय ॥ नयण उघाडे रे निरखी पदमणी रे, सेवापर नृप सुत चित्तलाय ॥ मं० ॥ १९ ॥ ला ज करंती रे नेहल मीटमां रे, कहे जीवन जीवाडी आज ॥ संगम दैवें रे किम मेल्यो इहां रे, जांखोजी जांखो महाराज ॥ मं० ॥ २० ॥ कुमर तिवारे रे क हे सरिता जलें रे, प्रथम पखालो तनु पंकाल ॥ वी तक वेहु रे कहेशुं वली पछे रे, इम कही आणी नदी यें बाल ॥ मं० ॥ २१ ॥ अंग पखाल्युं रे जल पीधुं गली रे, वली आव्या पाछा तरु तीर ॥ कुमरें सुणावी रे निज वीती कथा रे, सुणतां थरके तास शरीर ॥ मं० ॥ २२ ॥ नृप सुत तेहनेरे धणिने पूछशे रे, वीतक सयल करी चित्त चूप ॥ कांतें प्रकाशी रे खासी पांच मी रे, बीजे खंडे ढाल अनूप ॥ मं० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जणे कुमर कृशोदरी, मांझी कहे तुं वात ॥ अजगर वदने किम पडी, राखीती जटज्ञात ॥ १ कहे कुमरी हुं नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कठिण थइ जे कहुं, अवर वात लवलेश ॥ २ ॥ तेहवामां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचारे रातमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आवे छे साहमो धस्यो, रसीयो के लूंटाक ॥ व्यसनी मद पीधो अछे, के कोइ जार लफाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनो, आवे छे इणि वाट ॥ मीट न पाडुं गोरडी, ए अवसर ते माट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुटिका टाल ॥ आंबानां रसमां घसी, कर्युं तिलक तस भाल ॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक ॥ रूप पालटयुं तुज में, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज्यां नहिं मांजुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष गया मांज्या पछी, थाशे मूल सरूप ॥ ८ ॥ आपण बेए एक छे, सुखें पधारो आंहिं ॥ इम कही निरखत वाटडी, दीठी नारी त्यांहिं ॥ ९ ॥ तरुणी हरिणी परें धसी, आवे थिरकित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स्वरें, पूछे तस अवदात ॥ १० ॥

॥ ढाल ७ही ॥ नदी यमुनाके तीर, उ
मे दोय पंखीया ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे तुं आंहिं, आवी कुंण एकली; किम कं
पे तुज गात, चिंतातुर कां वली ॥ कुण तटनी ए नूप,
कवण नगरी किसी; इहां पाम्या सुखशात, अमें मन
मां वसी ॥ १ ॥ नारी जाणे ए नीर, नदी गोला वहे;
चंड्रावती उपकंठ, पुरि अति गहगहे ॥ दशदिशि पस
री जास, महा कीरति ध्वजा; वीरधवल नूपाल, इंहां
पाले प्रजा ॥ २ ॥ कुमर विचारे जेथ, आवण हुं
चाहतो, परुतो परुतो तेथ, आयो नव गाहतो ॥ अ
हो मुज पुण्य प्रमाण, प्रसन्न ठे जगपती; जस मुखें
पेठी नारि, मली जे जीवती ॥ ३ ॥ कहे वली आ
गल वात, नारि अचरिज नरी; पुत्री हुइ ते नूपने,
मलया सुंदरी ॥ मंरूप मांरूयो तास, स्वयंवर नूपतें;
मूक्या दूत निमंत्रणे, नृप नंदन प्रतें ॥ ४ ॥ आज
थकी विवाह, होसे त्रीजे दिनें; कीधी सामग्री सर्व,
अगाउ मेलीनें ॥ नृपने बीजी नारि, अठे कनकाव
ती; मलया साथें रोश, वहे ते डुर्मति ॥ ५ ॥ सोमा
माहरुं नाम, हुं तास महोलणी; सर्व रहस्यनुं ग
म, घणुं विसवासणी ॥ मलयानां केइ ठिड्र, जोवे मु

ज सामिनी; पण नवि देखे कोइ, किहां अवगुण कणी ॥ ६ ॥ नृप पुत्री नर रूप, रही पूछे इस्युं, ते साथें इंम रोष, तणुं कारण किस्युं ॥ कुमर कहे संतान, हो वे जो शोक्यनां, शोक्यतणे मनशाल, ससा हुए सहेजनां ॥ ७ ॥ नारी तणे ए साच, कह्यो छे जेहवो; जो तां तेहनां छिद्र, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरात, थइ कौतुक कथा, दीठी कहुं तुज आगें, नही ते अन्यथा ॥ ७ ॥ नासे लखमी पूंज, गले कनका तणें; हार ठव्यो किण आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक नेह, कारणथी ऊतरी ॥ ए ॥ पामी नाहिं में शुद्ध, किहां हमणां लगें; ते पारख्यो हवे वात, सवे होसे वगें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडी श्रीमुखें; वारी हुए लाज, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रयण बहु मूल, छुपाडी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ नूपति कनें ॥ अवसर देखी दोष, उघाडे अतिघणा; विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वामी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आज, निपट असुहामणा ॥ पुहवी ठाण नगरनो, नृप वखाणियें; सूरपाल तस पुत्र, महाबल जाणियें ॥ १२

॥ तेहनो किंकर एक, गुप्त मलया घरें; आवे छे नि त्य रात, निशाचरनी परें ॥ हार रयण ते साथ, कुमरने पाठव्यो; लेखें लिखि संदेश, इस्यो वली सूच व्यो ॥ १३ ॥ मलशे नृपना नंद, अनेक स्वयंवरें; ते मिस तुं पण वेग, आवे आमंबरें ॥ मुज बुद्धियें राज्य, सकल हाथें करी; परणी मुज फलवंत, करे यौवन सिरि ॥ १४ ॥ राज्य ग्रहणनी चाहि, कुमारी धूरतें; धूतीए तिण बेहु, थया एकण मतें ॥ नारी हूए संति हीण, कपटनी कोथली; वाल्हाने थे छेह, सारें स्वारथ वली ॥ १५ ॥ अतिविरुद्ध रोशाली, वाघण जिम सुंदरी; साहसनो भंडार, अनृतनी छे दरी ॥ मुखमी ठी मन धीठ, धरमणी दामणी; न हुवे केहनी नेट, संतोषी कामणी ॥ १६ ॥ एहनें संग विलुद्धा, जे नर बापरा; ते पामे दुःख लाख, थया रस लांपरा ॥ नाहिं करुणानो लेश, हीयामां नारीनें; मलतानें सविशेषें, मूके मारीनें ॥ १७ ॥ अनरथ ए हो नारि, कह्यो में छे जिस्यो; करतां पूर्व उपाय, पछे नही सोचसो ॥ जो मुज वचन विचार, नरोसो नवि करो; मांगो अमूलिक हार, न देसे तो खरो ॥ १८ ॥ इम उदभाव्या दोष, अनेक मृषा कही, रोषारुण भूपाल, कर्यो द्वेषें ग्रही

ज सामिनी; पण नवि देखे कोइ, किहां अवगुण क णी ॥ ६ ॥ नृप पुत्री नर रूप, रही पूछे इस्युं, ते साथें इंम रोष, तणुं कारण किस्युं ॥ कुमर कहे संतान, हो वे जो शोक्यनां, शोक्यतणे मनशाल, समा हुए सहेज नां ॥ ७ ॥ नारी जाणे ए साच, कह्यो छे जेहवो; जो तां तेहनां छिद्र, सम्मय केतो हवो ॥ आजूनी अधरा त, थइ कौतुक कथा, दीठी कहुं तुज आगें, नही ते अन्यथा ॥ ८ ॥ नासे लखमी पूंज, गले कनका तणें; हार ठव्यो किण आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक नेह, कारणथी ऊतरी ॥ ए ॥ पामी नाहिं में शुरू, किहां हमणां लगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होसे व गें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाकी श्रीमुखें; वारी हु ए लाज, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रयण ब हु मूल, बुपाकी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ नृ पति कनें ॥ अवसर देखी दोष, ऊघाके अतिघणा; विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वा मी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आ ज, निपट असुहामणा ॥ पुहवी ठाण नगरनो, नृप वखाणियें; सूरपाल तस पुत्र, महावल जाणियें ॥ १२

॥ तेहनो किंकर एक, गुप्त मलया घरें; आवे छे नित्य रात, निशाचरनी परें ॥ हार रयण ते साथ, कुमरने पाठव्यो; लेखें लिखि संदेश, इस्यो वली सूचव्यो ॥ १३ ॥ मलशे नृपना नंद, अनेक स्वयंवरें; तेमिस तुं पण वेग, आवे आडंबरें ॥ मुज कुक्षियें राज्य, सकल हाथें करी; परणी मुज फलवंत, करे यौवन सिरि ॥ १४ ॥ राज्य ग्रहणनी चाहि, कुमारी धूरतें; धूतीए तिण बेहु, थया एकण मतें ॥ नारी हूए मति हीण, कपटनी कोथली; वाल्हाने थे छेह, सारें स्वारथ वली ॥ १५ ॥ अतिविरुद्ध रोशाली, वाघण जिम सुंदरी; साहसनो भंडार, अनृतनी छे दरी ॥ मुखमीठी मन धीठ, धरसणी दामणी; न हुवे केहनी नेट, संतोषी कामणी ॥ १६ ॥ एहनें संग विलुद्धा, जे नर बापडा; ते पामे दुःख लाख, थया रस लांपडा ॥ नहिं करुणानो लेश, हीयामां नारीनें; मलतानें सविशेषें, मूके मारीनें ॥ १७ ॥ अनरथ ए हो नारि, कह्यो में छे जिस्यो; करतां पूर्व उपाय, पछे नही सोचसो ॥ जो मुज वचन विचार, भरोसो नवि करो; मांगो अमूलिक हार, न देसे तो खरो ॥ १८ ॥ इम उद्भाव्या दोष, अनेक मृषा कही, रोषारुण भूपाल, कस्यो द्वेषें ग्रही

॥ छठी ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही मीठास, जरी मधुखंमनी ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोष गहिल नरपती तिहां, श्रमने करी विदाय॥ चंपकमाला जामिनी, बोलावी विलखाय ॥ १ ॥ व्य तिकर सर्व सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री उपर तिका, थई रोष असमान ॥ २ ॥ मांगो हार मनोहरु, जो नवि देसे बाल ॥ तो व्यतिकर सघलो खरो, इम कहे चंपक माल॥ ३ ॥ कन्या तेमी मांगीयो, हार रयण ततकाल ॥ त्रमजूली मौनें रही, मनमां पेठी जाल ॥ ४ ॥ चित्त विकल्पी कूम इम, उत्तर दीधुं एण ॥ तात हार मुज कंठथी, अपहरि लीधो केण ॥५ ॥ अवगुण इंधण अति सबल, वचन पवन नृप कुंरु ॥ रोष अनल कुमरी दहन, वागो जई ब्रह्मंरु ॥ ६ ॥ ॥ ढाल सातमी ॥ जीणा मारुजीनी करहलमी, करह लमी केशररो कूपो मने आलाहो राज ॥ एदेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री जणी, फिट पापिणी हति यारी, मुखकुं कांइं देखामे होराज ॥ अलगी रहे मुज नयणथी, कुलखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज ल गामे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोषें जरी, जिम वि

षहरनी दाढा, अलवें लागी मारे होराज ॥ कन्या रूपें वैरणी, थइ लागी उपरांठी, वैर विरोध वधारे होराज ॥ २ ॥ एवकुं तुज किणें सीखव्युं, चरित्र विषम अति उंकुं, जुंकुं सुणतां लागे होराज ॥ आज थकी जो इम करे, वधती वधती वली शुं, करशे जातां आगें होराज ॥ ३ ॥ दोष नहीं माहरे शिरें, कीधुं छे तें जेहवुं, तेहवां फल तुं चाखे होराज ॥ प्रत्यक्ष विषनी वेलडी, उखेडी हवे नाखी, सारसुं तुज पाखें होराज ॥ ४ ॥ तात वचन कडुआ सुणी, माय रीसाणी जाणी, आई निज आवासें होराज ॥ बेठी आमण डूमणी, करीनें मुख नीचुं, मनमां एम विमासे होराज ॥ ५ अणगमतुं में तातनुं, त्रिकल पणे सुं कीधुं, जेहथी तात रीसाणो होराज ॥ हार रयण खोया थकी, एवडो कोप किवारें, राजा मनमां नाणे होराज ॥ ६ ॥ स्यो अवगुण नृप माहरो, देखीने कलुषाणो, बोल्यो विरुआं वयणा होराज ॥ इम कुमरी चिंता जरी, मुखपंकज करमाणी, वरसे आसुं नयणा होराज ॥ ७ ॥ नृप कहे पटराणी प्रत्यें, तुज तनुजानां दीठां, चरित्र महाविष तोले होराज ॥ हार रयण तिण कुमरनें, इणे दीधो छे निश्चें, मुज मारणने कोलें होरा

ज ॥८॥ वाल्ही पण वैरणी हूई, जिम विषधरीयें मंकी, आंगुली होय डुवालही होराज ॥ रिपुकुलने जां न वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काल्ही होराज ॥ ए ॥ डुःख नरी रयणीनें गमी, प्रह कालें नृप तेकी, सेवकनें इम नासे होराज ॥ मलयानें ह णजो तुमें, हुकम फरी मत पूछो, रखे किहां किण ए नासे होराज ॥ १० ॥ मंत्री सुबुद्धि सुणयो सवे, व्यति कर ए कन्यानो, आवी नृपने नेटे होराज ॥ करजोमी इम वीनवे, असमंजस ए मांड्यो, नृप कहो किण खेटें होराज ॥ ११ ॥ सुं अपराधि कन्यका, नेह गयो क्यां पहेलो, धरता जे एह साथें होराज ॥ विषतरु वर पण कापवो, न घटे जेह उछेर्यो, धुरथी आपणें हाथें होराज ॥१२ ॥ देव विचारी कीजीयें, जिम न होवे पछतावो, पछे फल पाकंतां होराज ॥ सकल वि चार सुणावीउं, सचिव नणी नृप धुरथी, सचिव रु स्यो नाखंतां होराज ॥ १३ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो, सेवक नृप आदेशें, मलया मंदिर आवे होराज ॥ गद गद कंठें इम कहे, तुज उपर नृप रूठो, आणा वध फुरमावे होराज ॥ १४ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीरा नृप किम कोप्यो, ते कहे न लहुं कांई होराज ॥ कु

न्या इंम विलपे तिहां, हाहा मुज किण नाख्या, अव गुण वैर वसाई होराज ॥ १५ ॥ मुज मुख निरखी हरखतो, ते पण थइ अतिवांको, नरपति मुजनें मारे होराज ॥ चंपकमाला मावडी, ऊपरांठी थई वेठी, नृ पने ते नवी वारे होराज ॥ १६ ॥ मलयकुमर मुज सुंदरू, ते पण आंखुं आमा, कान देईने बेठो होराज ॥ बंधु वरग हुं परिहरी, परिहरियें जिम मींठो, पण जे नोजन एठो होराज ॥ १७ ॥ पुण्य गयां किहां माह रां, प्रगट्यां क्यांथी प्रौढा, पाप पूरव नव केरां हो राज ॥ करुं धरणी तुज वीनती, द्ये मारग जिम पेसी, काढुं प्राण आघेरा होराज ॥ १८ ॥ महोल मांहे मलया रही, पूर्वं कर्मने निंदे, कहेसे वली कांइ आगें होरा ज ॥ बीजे खंके सातमी, ढाल सरस ए नाखी, कांतें इंम अति रागें होराज ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेमावे मलया हवे, वेगवतीने वेग ॥ नृप आदेश सु णावीने, कहे निज कारज नेग ॥ १ ॥ सखी सिधा वो नृप कन्हें, कहेजो इंम संदेस ॥ तुम पुत्री इंम मुज मुखें, दीधो ठे निर्देश ॥ २ ॥ वेगवती बाला थ

की, आवे नृपनें पास ॥ कुमरीनां संदेसमा, इंम संज्ञ लावे तास ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ कोइलो परवत धूंधलो ॥ होलाल ॥ ए देशी ॥

॥ संदेसो मलया कहे होलाल, सांजल पुरना इस ॥ नरिंदजी ॥ गुनह करी में रावलो होलाल , अलवें पाई रीस ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण खमजो माहरो होलाल, कीधा जे में अजाण ॥ न० ॥ मरण सरण में तें सिरें होलाल, दरू कर्यो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥ २ ॥ आवुं प्रजु पद जेटवा होलाल, तुम वचनें महा जाग ॥ न० ॥ अतिथि हूआ परलोकना होलाल, लहेसुं ते वली लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ इंम न ग में तो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति अनेक ॥ न० ॥ प्रणति वली बिहुं मायने होलाल, कहेजो मुज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ अनरथ जे में आचर्यो होलाल, ते जांखो निरसंक ॥ न० ॥ दोष देखा मी मारतां होलाल, न हुवे कालकलंक ॥ न० ॥ सं० ॥ ५ ॥ नृप विचारें देखजो होलाल, करी वैरीनां काम ॥ सुलोचनी ॥ गुनह पूढावे आपणो होलाल ॥ अण जाणी थइ आम ॥ सुलोचनी ॥ ६ ॥ चरित्र जलो मल

या तणो होलाल ॥ ए आंकणी ॥ कपट मंजूस त्रिया
कही होलाल, मुखमीठी धूतारि ॥ सु० ॥ मधु लिंपी त्रि
ष गोलिका होलाल, एवी रची किरतार ॥ सु० ॥ च०
॥ ७ ॥ प्रणति म होजो एहनी होलाल, नहीं सुख दी
ठे काम ॥ सु० ॥ मरण सरण वहेली करो होलाल,
कन्या अवगुण धाम ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥ वेगवती व
लतुं जणे होलाल, नरपतिने कुमणाय ॥ सु० ॥ गो
ला नदी तट दाहिणे होलाल, अंध कूऊ कहेवाय ॥
सु० ॥ च० ॥ ए ॥ जंप देई कुमरी तिहां होलाल, कर
से जीवित नास ॥ सु० ॥ इम करी रोती जूरती होला
ल, आवे मलया पास ॥ सु० ॥ च० ॥ १० ॥ वेगव
ती मलया जणी होलाल, जाख्यो तेह प्रबंध ॥ सु०
॥ तास वचन अविलंबीनें होलाल, ऊठे तिहांथी मुंध
॥ सु० ॥ च० ॥ ११ ॥ वज्रकठीन हीयडुं करी होला
ल, साहस वस असमान ॥ सु० ॥ पूरवकर्मने निंदती
होलाल, धरती नवपद ध्यान ॥ सु० ॥ च० ॥ १२ ॥
धारी मन निर्जय पणे होलाल, विंटी सुजट अनेक ॥
सु० ॥ पालें पग पंथें वहे होलाल, साही सबलो टे
क ॥ सु० ॥ च० ॥ १३ ॥ पग पग पंथें आफले हो
लाल, पडि पडि ऊठे तेम ॥ सु० ॥ दासी दास उदा

सीधां होलाल, पूछे बोले एम ॥ सु० ॥ च० ॥ १४ ॥
जो तुज मनमां एवमी होलाल, हुंती ताती रीस ॥
सु० ॥ कांइं स्वयंवर मांडीने होलाल, तें तेड्या अव
नीस ॥ सु० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाळ्या जे पोता वटें हो
लाल, पहेलां पोषी लाड ॥ सु० ॥ ते किंकर कुलने
हवे होलाल, छेहे कां दुःख हाड ॥ सु० ॥ च० ॥ १६ ॥
किम करशुं रहेसुं किहां होलाल, तुम विरहें तरसं
त ॥ सु० ॥ लागे ए अलखामणो होलाल, फीटल
प्राण रहंत ॥ सु० ॥ च० ॥ १७ ॥ लोक घणा नगरी
तणा होलाल, विलख वदन कहे वेण ॥ सु० ॥ कु
मरी रयण सीधावते होलाल, जगत हुउं गत रेण
॥ सु० ॥ च० ॥ १८ ॥ राय सुता पगमां चुभे होलाल,
तीखा कंटक कोड ॥ सु० ॥ स्नान रक्त रसिया मुखें
होलाल, पैसे पगतल फोडि ॥ सु० ॥ च० ॥ १९ ॥
आई कूआ कंठडे होलाल, वोले इंस मुख वाच ॥
सु० ॥ कुमर महाबलनो इंहां होलाल, सरण हजो
मुज साच ॥ सु० ॥ च० ॥ २० ॥ बाल जंपावे कूपमां
होलाल, पडती जिम जलबाल ॥ सु० ॥ पुरजन तव
हा हा रवें होलाल, पूरे गगन वचाल ॥ सु० ॥ च० ॥
॥ २१ ॥ सिंचे धरणी आंसुयें होलाल, निंदे नृपने

केय ॥ सु० ॥ देता दैव ठेलंजस्या होलाल, आव्या लोक वलेय ॥ सु० ॥ च० ॥ २२ ॥ खबर कही जे सेवकें होलाल, संतूठो नरपाल ॥ सु० ॥ वीजे खंडे आठमी होलाल, कांतें कही ए ढाल ॥ सु० ॥ च० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नरपति हरख्यो हीये, चित्तमां चिंते एम ॥ हणतां पुत्री दुष्टनें, थयो वंशने खेम ॥ १ ॥ आमंत्र्या नृप नंद जे, तास जणावुं वात ॥ मुज तनुजा व्याघें मूई, मति आवो किण घात ॥ २ ॥ वली पूछुं कनका प्रत्यें, मुज उपकारक एह ॥ इम विचारी सचिवशुं, नृप पोहोतो तस गेह ॥ ३ ॥ वार जस्यां देखी तिहां, पामे चित्र सरूप ॥ कुंची विवर कमाडनो, तेहमां निरखे भूप ॥ ४ ॥ गर्भ भवन दीपक करी, लेई हार ते नार ॥ दीठी भूपें विवरथी, करति इम मनोहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ केशर वरणो हो काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥ अथवा ॥ नेमि पयंपेहो प्रीति संभालो म्हारा लाल ॥ एदेशी ॥

॥ हार ठबिला हो करुणा धरजो ॥ मारा लाल ॥ संकट हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ दुर्लभ लाधो हो सुरमणि बीजो ॥ मा० ॥ दीठो ताहारो हो सबल

पतीजो ॥ मा० ॥ १ ॥ राख्यो गोपवी हो छानो पई लो ॥ मा० ॥ नृप मंजेरी हो कीधो घहेलो ॥ मा० ॥ वैरिणी मलया हो कूप नखावी ॥ मा० ॥ संपत्ति स घली हो मुज घर आवी ॥ मा० ॥ २ ॥ ते सांजलिने हो नृपति बोल्यो ॥ मा० ॥ इण पापिणीये हो मुजने जोल्यो ॥ मा० ॥ कपट करीने हो पोतें चोख्यो ॥ मा०॥ मलया माथे हो दूषण उंस्यो ॥ मा० ॥ ३ ॥ धिग तुज जीव्युं हो अधम ठगारी ॥ मा० ॥ वांक विहूणी हो मलया मारी ॥ मा० ॥ कदिही न तेणें हो कीधी उ हवी ॥ मा० ॥ उंचे सासें हो बोले न तेहवी ॥ मा० ॥ ४ ॥ हैहै वंच्यो हो कपट पवाडे ॥ मा० ॥ इम कही वार हो हाथ पछाडें ॥ मा० ॥ गाढें पोकारी हो धरणी ढलीउ ॥ मा० ॥ फुःखडे दाधो हो मूर्छा मलिउ ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोक सुणीने हो दोडी आ व्या ॥ मा० ॥ शुं थयुं नृपने हो इम कहेताव्या ॥ मा० ॥ तेहवा मांहे हो कनका त्राठी ॥ मा० ॥ गोख मारगथी हो कूदी नाठी ॥ मा० ॥ ६ ॥ हुं पण पूठें हो जई झंपावी ॥ मा० ॥ कनका पासें हो तत्दण आवी ॥ मा० ॥ शूने मंदिर हो खूणे पेठां ॥ मा० ॥ सुणियें नातो हो जणनी वेठां ॥ मा० ॥ ७ ॥ चेतन

व्युं हो नृपनुं लोकें ॥ मा० ॥ नूपति रोवे हो लां
वी पोकें ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी दोमी ॥ मा० ॥
पीउने पूछे हो बेकर जोमी ॥ मा० ॥ ७ ॥ एह अ
मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ शुं सांज्ञ्युं छे हो शो
ग संतापन ॥ मा० ॥ प्रगट प्रकाशे हो रोतां मंत्री ॥
मा० ॥ कनकवतीनी हो करणी सूत्री ॥ मा० ॥ ए ॥
चंपकमाला हो नृप गल वलगी ॥ मा० ॥ डुःख
पावकनी हो जाला सलगी ॥ मा० ॥ गदगद सादें हो
रोवा लागी ॥ मा० ॥ करति डुःखनां हो लोक विन्नागी
॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव विडुनें हो इम समजावे
॥ मा० ॥ मूआं जगमांहिं हो पाछा नावे ॥ मा० ॥ तो
पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ नाग्यें लहीयें
हो जइ जीवंती ॥ मा० ॥ ११ ॥ कूआ कंठे हो नूपति
आव्यो ॥ मा० ॥ जण पेसामी हो ते शोधाव्यो ॥
॥ मा० ॥ मलया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
आशा त्रुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
दिर पोहोतो हो मन डुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
धामें हो आवे फिरतो ॥ मा० ॥ बार उघामी हो रा
णी नांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नाठी हो अणियें आ
खे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा नगलां हो किहां गइ नागी

॥ मा० ॥ आणो बांधी हो केमें लागी ॥ मा० ॥ राय कह्याथी हो तस घर लूंट्यो ॥ मा० ॥ परिजन तेहनो हो पकमी कूट्यो ॥ मा० ॥ १४ ॥ वांक विना जे हो पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पछतावो हो ते चित्तधारी ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी साथें ॥ मा० ॥ नरपति वलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जिहां तिहां जमती हो नृप नट पेखी ॥ मा० ॥ कनकावीहिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इम मुज नांखे हो बिहुं विछमीयें ॥ मा० ॥ रहेतां नेलां हो हाथे पमीयें ॥ मा० ॥ १६ ॥ हारादिक सवि हो ले निज संगें ॥ मा० ॥ मुजने छोमी हो दोमी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेश्या हो मिलती पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेठी हो धसकी वहेली ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं एकलमी हो रही त्यां न शकी ॥ मा० ॥ रातें उठी हो वनमां चसकी ॥ मा० ॥ इहां आवीहुं हो जय धूजंती ॥ मा० ॥ वात कही में हो जेहवी हुंती ॥ मा० ॥ १८ ॥ हवे हुं जाशुं हो रयणी विहाणी ॥ मा० ॥ इम कही सोमा हो आगें उजाणी ॥ मा० ॥ ढाल ए नवमी हो बीजे खंमें ॥ मा० ॥ कांति पयंपे हो वचन अखंमें ॥ मा० ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात सुणी विस्मित हूउं, कहे कुमर गुण गेह॥ पहेलां इंणे जे संग्रह्युं, वैर विशोध्युं तेह ॥१॥ डुष्ट हृदय युवती तणो, विषम चरित्र जंकार ॥ करतां न जुए कामिनी, अनाचरण संचार ॥२॥ कन्या रयण विणासतां, मरणोन्मुख नृप कीध ॥ प्रजा अनाथ करी वली, पोतें अपजश लीध ॥३॥ कनकानी दासी थकी, सुंदरी तुज विरतंत ॥ लह्युं सकल में मूलथी, अहो चरित्र बलवंत ॥४॥ अल्पकालमां अतिघणी, दीठी तें दुःख राशि ॥ अंधकूप पमतां ग्रही, अजगर वदन विकाशि ॥५॥ निकट किहांकिण कूप छे, तेमांथी ते साप ॥ ॥ आफलवा आंबा थकें, इंणी थल आव्यो आप ॥६॥ वदन विदार्युं बल करी, में तेहनुं कलसाज ॥ तेमांथी तुं नीसरी, मिली इहां मुज आज ॥७॥ एकांतें अजगर पम्यो, देखी बीहिनी बाल ॥ कुमर कहे शंका किसी, जो विधी छे रखवाल ॥८॥ पूरव श्लोक जणे तिहां, बिहुं जण धरी बहु राग ॥ मुख धोवे गोला जलें, जस्यां सबल सोजाग ॥९॥ तेहज आंबा फल ग्रही, जक्षण करी ससनेह ॥ देवी जल मंदिर जणी, वेगें आव्यां बेह ॥१०॥

॥ ढाल दशमी ॥ हांरे कांइ जोबनीयानो ल टको दाहाड़ा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हांरे वारी बिहुं तिहां देखे काठ तणी बे फाड़जो, पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हांरे वा री कुमर ते देखी तेहमां विवर विचाल जो, धूणीरे शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हांरे वारी तीन कारज हवे करवां माहारे आंहिंजो, एकतो रे नृप बलतो चयमांथी राखवो रेलो ॥ हांरे वारी बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी गले हार ते नाखवो रेलो ॥ २ ॥ हांरे वारी लखमी पुंज अनोपम नाठो हार जो, ते हुं रे तुज देईश दा हाड़ा पांचमां रेलो ॥ हांरे वारी इम पण बांध्यो जन

उवी रेलो ॥ ५ ॥ हांरे वारी मुद्रा दीधी ते थापि शि र आपजो, इम कहीरे इहां गनी फरतां फायदो रे लो, हांरेवारी आजनी रजनी सगधा घरें थिर थापजो, मलजो रे कालें सांजे ठे वायदो रेलो ॥ ६ ॥ हांरे वारी साधी कारज सघलां काले सांजजो, आवीश रे द वीजल जवनें हुं वली रेलो ॥ हांरे वारी कुमर वचन चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर वेशें किणही न अटकली रेलो ॥ ७ ॥ हांरे वारी आगामी जे कर वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो धसी रेलो ॥ हांरे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो लेइ वे शजो, तरुतलेंरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥ ८ ॥ हांरेवारी ते गजनुं बहुला जण लेइ ठाणजो, दीठारे नाजनमां जलशुं गालता रेलो ॥ हांरेवारी कु मरें पूछ्या कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ए ॥ हांरे वारी र मतमां तेणे सोवन सांकल एकजो, चिंटिरे सलकीयें नांखी गज दिशा रेलो ॥ हांरेवारी पकती ले गज मुख मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हांरेवारी नृप आदेशें गालीजें एह ठाणजो, तेहनांरे इहां खंक कदाचित् पामीयेंरे

॥ ढाल दशमी ॥ हांरे कांइ जोवनीयानो ल टको दाहाडा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हांरे वारी बिहुं तिहां देखे काठ तणी वे फाडजो, पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हांरे वा री कुमर ते देखी तेहमां विवर विचाल जो, धूणीरे शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हांरे वारी तीन कारज हवे करवां माहारे आंहिंजो, एकतो रे नृप बलतो चयमांथी राखवो रेलो ॥ हांरे वारी बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी गले हार ते नाखवो रेलो ॥२॥ हांरे वारी लखमी पुंज अनोपम नाठो हार जो, ते हुं रे तुज देईश दा हाडा पांचमां रेलो ॥ हांरे वारी इम पण बांध्यो जन नी आगें सार जो, सफलो रे करवो ते साची वाचमां रेलो ॥ ३ ॥ हांरे वारी ते माटे तुं पुरमां फरि नर रू पजो, सांजेरे मगधा घरे जाजे हामशुं रेलो ॥ हांरेवा री तिहां रहीने कनकांनुं निरखीश रूपजो, करतां रे ठल बल मुक्तावली पामशुं रेलो ॥ ४ ॥ हांरेवारी हुं पण जइ चय बलता नृपने संग जो, वारुंरे नवली बुद्धि कोइ केलवी रेलो ॥ हांरे वारी नामांकित मुज द्ये तुज मुद्रा नंगजो, ग्रहेशे रे एहथी तुज को चोरी

ठवी रेलो ॥ ५ ॥ हांरे वारी मुद्रा दीधी ते थापि शि
र आपजो, इम कहीरे इहां ठानी फरतां फायदो रे
लो, हांरेवारी आजनी रजनी सगधा घरें घिर थापजो,
मलजो रे कालें सांजे ठे वायदो रेलो ॥ ६ ॥ हांरे
वारी साधी कारज सघलां काले सांजजो, आवीश रे दे
वीजल जवनें हुं वली रेलो ॥ हांरे वारी कुमर वचन
चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर वेशें किणही
न अटकली रेलो ॥ ७ ॥ हांरे वारी आगामी जे कर
वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो
धसी रेलो ॥ हांरे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो लइ वे
शजो, तरुतलेंरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥
८ ॥ हांरेवारी ते गजनुं बहुला जण लेइ ठाणजो,
दीठारे नाजनमां जलशुं गालता रेलो ॥ हांरेवारी कु
मरें पूछ्या कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप
सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ए ॥ हांरे वारी र
मतमां तेणे सोवन सांकल एकजो, विंटिरे सलकीयें
नांखी गज दिशा रेलो ॥ हांरेवारी पकुती ले गज मुख
मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा
वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हांरेवारी नृप आदेशें गालीजें
एह ठाणजो. तेहनारे इहां खरू कदाचित् पामीयेंरे

लो ॥ हांरेवारी काढी महाबल केश थकी सुविनाण जो, मुझारे पूलामां ठवी गजने दीयें रेलो ॥ ११ ॥ हांरे वारी चावण लागो गयवर पूलो तेहजो, तेहवेंरे नृपति सुत आगें चालीउं रेलो ॥ हांरे वारी गोला कंठें मलिउं लोक अठेह जो, करतो रे कोलाहल कुमरें जालिउं रे लो ॥ १२ ॥ हांरेवारी कुमर विचारे चाल्यो हुं जिण कामजो, पुरवरें रे कारज एह तेहनो मलव्यो रेलो ॥ हांरे वारी चयमांथी उललते अति उद्दासजो, दीसेरे घण धूमें नन्नतल नेलव्यो रेलो ॥ १३ ॥ हांरे वारी नुज उंचा करी दोरु कुमर तिवारजो, कहेतो रे इम मधुरवचन गाढे स्वरें रेलो ॥ हांरेवारी जीवे ठे तुम पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां नोला इणी परें रेलो ॥ १४ ॥ हांरे वारी कर्ण सुधासम सुणीने तेहनां वयणजो, साहामांरे आव्या लख लोक नजायनें रेलो ॥ हांरेवारी जीन्नें लवण उतारुं तुजने सयणजो, क्यांठे रे कहो मलया तेह बतायने रेलो ॥ १५ ॥ हांरेवारी इम सुणी बोले तेह निमित्तनो जाणजो, काढोरे नृप राणी चयथी वेगलां रेलो ॥ हांरेवारी तो नांखुं आगमगात हुं इणें गाणजो, इम सुणीरे चयमांथी काढ्यां करी कला रेलो ॥ १६ ॥

॥ हांरेवारी कुंअर कहे वसुधाधिप कां अकुलायजो, किहांएक रे मलया छे निश्चें जीवती रेलो ॥ हांरेवारी निमित्तलणे बल जाएयुं में महारायजो, मतिबलेंरे कहुं बुं हुं तुमने ते वली रेलो ॥ १७ ॥ हांरेवारी हवे नृप पूछे मलया केरी वातजो, करशे रे अति कौतुक महाबल इहां वली रेलो ॥ हांरेवारी वीजे खंडें ए अ२ दशमी ढाल जो, नांखी रे इम कांति विजय रंगें नली रेलो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप कहे सुण निमित्तिया, दुःखियो हुं विण नाग ॥ देखुं मलया जीवती, एवशे किहां मुज नाग्य ॥ १ ॥ काल कूही सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥ अहो दैवनी चित्रता, न मुइ नांखे एम ॥ २ ॥ शोधी पण लाधी नहीं, जिम निर्धन धन कोमि ॥ दुष्ट किणें जल थलचरें, खाधी होशे मरोमि ॥ ३ ॥ तेह नणी मुजनें सुखें, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी इम नृपनां, बोल्यो कुमर बनाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ सूवटिआलाइ ॥ ए देशी ॥

॥ नृपतिजी रूमा, सांनल चतुर सुजाण होरेहां ॥ वात न नाखुं कूअमी ॥ नृ० ॥ आजदिवस सुख ग

ण होरेहां ॥ वारश तिथि यइ रूअडी ॥ नृ० ॥ १ ॥ आजथी त्रीजे दिवसें होरेहां, दोय पोहोर वासर च ढे ॥ नृ० ॥ बेठा सहु अवनीश होरेहां, मंडप आ डंबर मढे ॥ नृ० ॥ २ ॥ शोभित तनु शणगार होरे हां, कुमरी दरिशण आपशे ॥ नृ० ॥ देखीस सहसा कार होरेहां, अचरज सहुने व्यापशे ॥ नृ० ॥ ३ ॥ रचि स्वयंवर शुभ एह होरेहां, आवत नृप मत वारजे ॥ नृ० ॥ जो छे तुज संदेह होरेहां, तो अहिनाणी ए धारजे ॥ नृ० ॥ ४ ॥ मलया मुद्रिरयण होरेहां, का लें तुम कर आवशे ॥ नृ० ॥ तो साचां मुज वयण होरेहां, वेद वाणी गुण पावशे ॥ नृ० ॥ ५ ॥ चौद शने परभात होरेहां, पूरवदिशि पुर बाहिरें ॥ नृ० ॥ नृपनां वल मन खांत होरेहां, परखावण तुज कुलसुरी ॥ नृ० ॥ ६ ॥ घट करणो एक थंभ होरेहां, पोल समीपें थापशे ॥ नृ० ॥ लहेता लोक अचंभ होरेहां, देख त रंग न धापशे ॥ नृ० ॥ ७ ॥ ते लेइ तेणिवार होरे हां, थिरथापे मंडप तलें ॥ नृ० ॥ भेदशे थांभो ते ह होरेहां, (धनुष वज्रसार होरेहां,) बाण सहित पूजा भलें ॥ नृ० ॥ ८ ॥ थापे थांभा छेह होरेहां, जे नर तेह चढाइनें ॥ नृ० ॥ भेदशे थांभो तेह हो

रेहां, होशे वर तुज जाइनें ॥ नृ० ॥ ए ॥ अनोपम छे अतिभांति होरेहां, पूजाविधि ते यंत्रनी ॥ नृ० ॥ भांख्या ए अवदात होरेहां, निमित्त कलायें अनुम नी ॥ नृ० ॥ १० ॥ मलसे ए अहिनाण होरेहां, नि मित्त बलें भांख्यां अछे ॥ नृ० ॥ न मले जो निरवा ण होरेहां, मन मान्युं करजे पछें ॥ पंमितजी रूमा ॥ ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहां, अम भाग्यें तुं आवियो ॥ पं० ॥ ज्ञानी तुं जस पाम होरेहां, उप कारें धुर ठावियो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ताहारा ए उपका र होरेहां, वीसरशे नहीं जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए अधिकार होरेहां, जगदीसें तुज गुण छते ॥ पं० ॥ १३ ॥ आले हरख निधान होरेहां, कंचन मणि भू षण बहु ॥ पं० ॥ ते कहे जो ल्युं दान होरेहां, तो उपकार किस्यो कहुं ॥ पं० ॥ १४ ॥ करजे तुंहिज ते ह होरेहां, यंत्र तणी पूजा वमी ॥ पं० ॥ नृप वचन छेहमे एह होरेहां, बांधे शुकननी गांठमी ॥ पं० ॥ १५ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहां, किण नामें होसे कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम अनंत होरेहां, प्रगट पणे शास्त्रें लहो ॥ पं० ॥ १६ ॥ पोहवीपुर सूरपाल होरेहां, महाबल नंदन परवमो ॥ पं० ॥ वरशे ते तु

ज बाल होरेहां, कुमर कहे एम परगमो ॥ पं० ॥ १७ ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी त्र णी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १८ ॥ सारूंबर महाराय होरे हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति णठाय होरेहां, साथें वली जोजन जमे ॥ पं० ॥ १ए ॥ वीती करतां वात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा ॥ पं० ॥ गह मह हुइ परजात होरेहां, रवि ऊगे पूरवदिशा ॥ जू० ॥ २० ॥ बीजे खंमे एह होरेहां, पूरण ढाल इग्यारमी ॥ जू० ॥ कांति कहे ससनेह होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ जू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूकया जिके, गालण गजनुं बाण ॥ तेह प्रजातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥ करजोमी कौतिक जस्या, बोल्या तिहां एम वयण ॥ लाधुं गजमल गालतां, ए प्रजु मुद्रा रयण ॥ २ ॥ नृ प लीधी ते मुद्रिका, रजस पणें ससलूंण ॥ वांचत नाम सुता तणुं, इम बोल्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो अचंजो मुद्रिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमि त्त ए कारणे, मलतो दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोल्यो ज्ञा

नी ईस्युं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कार
ण इहां, संत्रवियें खितिकंत ॥ ५ ॥ हरख्यो नृप वि
शेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना,
स्यो मांडे नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किस रा
चियें, होये जूठ के साच ॥ पेटें पड्यां पतीजीयें, इम
बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी,
लहेसे नृप नृप मांहिं, मल्या नृप विलखा थई, धुक
ल करसे प्रांहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, आ
व्या नृपना नंद ॥ आप्यां मंदिर जूजूआं, त्यां उतस्या
नरिंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥
॥ ज्ञानी कहे इम रायने, जो आपो अम सीख लाल
रे ॥ मंत्र अर्द्ध में साधिउं, ते साधुं मन ईष लाल रे
॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ जो
नवि साधुं ए समे, तो वलतुं न सधाय लाल रे ॥ कोई
विघन शुज्र काममां, आण जाण्या वहराय लाल रे
॥ सु० ॥ २ ॥ आजूनी एक रातनो, आपो जो अव
काश लालरे ॥ साधी मंत्र प्रजातमां, आवीश हुं तुम
पास लालरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप इम कहे,
मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईयें ते आपुं हजी,

ज वाल होरेहां, कुमर कहे एम परगमो ॥ पं० ॥ १७ ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी ज णी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १० ॥ साकंबर महाराय होरे हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति णठाय होरेहां, साथें वली जोजन जमे ॥ पं० ॥ १ए ॥ वीती करतां वाल होरेहां, अरध दिवसने ते निशा ॥ पं० ॥ गह मह हुइ परजात होरेहां, रवि ऊगे पूरवदिशा ॥ नू० ॥ २० ॥ बीजे खंके एह होरेहां, पूरण ढाल इग्यारमी ॥ नू० ॥ कांति कहे ससनेह होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ नू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूकया जिके, गालण गजनुं जाण ॥ तेह प्रजातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥ करजोमी कौतिक जस्या, बोल्या तिहां एम वयण ॥ लाधुं गजमल गालतां, ए प्रजु मुजा रयण ॥ २ ॥ नृप लीधी ते मुजिका, रजस पणें ससलूंण ॥ वांचत नाम सुता तणुं, इंम बोल्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो अचंजो मुजिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमि त्त ए कारणे, मलतो दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोल्यो ज्ञा

नी ईस्युं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कारण इहां, संभविये खितिकंत ॥ ५ ॥ हरख्यो नृप विशेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना, स्यो मांमे नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किस राचियें, होये जूठ के साच ॥ पेटें पड्यां पतीजीयें, ईस बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी, लहेसे नृप नृप मांहिं, मव्या नृप विलखा थई, धुक ल करसे प्रांहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, आव्या नृपना नंद ॥ आप्यां मंदिर जूजूआं, त्यां उतस्या नरिंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानी कहे इम रायने, जो आपो अम सीख लाल रे ॥ मंत्र अर्द्ध में साधिउं, ते साधुं मन ईष लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ जो नवि साधुं ए समे, तो वलतुं न सधाय लाल रे ॥ कोई विघन शुभ काममां, अण जाण्या ठहराय लाल रे ॥ सु० ॥ २ ॥ आजूनी एक रातनो, आपो जो अवकाश लालरे ॥ साधी मंत्र प्रभातमां, आवीश हुं तुम पास लालरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप इम कहे, मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईयें ते आपुं हजी,

होता अछेह लाल रे ॥ नूप जाणे पूजो तुमें, धूज प्र
मृति लेइ एह लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ विधि पूर्वक
नाणी तिहां, पूजी बेठो ध्यान लाल रे ॥ ह्रींपद मुख
थी उच्चरी, मेले माया तान लाल रे ॥ सु० ॥१४॥
दोढ पहोर वासर चढे, सेवक नृप आदेश लाल रे॥
थंभ उपाडी पुर जणी, पावन थई सविशेष लाल रे॥
सु० ॥ १५ ॥ संरूपमां आडंबरे, थाप्यो आणी का
र लाल रे ॥ घटकरणी पञ्चर शिला, कुमरे करावी
त्यार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ उन्नी खोसे संरूपें,
धरती मांहे बे हाथ लाल रे ॥ थंभ निपुण निज सं
चर्थी, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ बे
कर मुख उंचे रहे, शिला थकी ते थंभ लाल रे ॥ बा
ण धनुष तेहथी ठवे, पडिमनें आरंभ लाल रे॥ सु०
॥ १८ ॥ सिंहासन नृपनां ठव्यां, दक्षिण उत्तर जाग
लाल रे ॥ गंधर्वें मांड्यो तिहां, गावा मधुरो राग
लाल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ थंभ धनुष पूजावीने, नृप
पासें ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते
डाव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥ २० ॥ नाणी नृपनी
जीरुमां, देखी अवसर खास लाल रे॥ जईबेठे गांध
र्वमां, पहनी वेश प्रकाश लाल रे ॥ सु० ॥२१॥ बेउ नृप

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥ सु० ॥२२॥ ढाल अई ए बारमी, बीजे खंडें उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहां परणसे, महाबल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहां, गयो खबर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अस मीट ॥ करथी छूटो किहां गयो, जिम फल पाके बींट ॥ २ ॥ नृप नणे पहेला इणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन अर्द्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥ ३ ॥ वचन सवे तेहनां मल्यां, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन निःफल होसे, हैं हैं सरजण हार ॥ ५ ॥ कुंअर सुणी तिहां वस्त्रसु, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे ठेहरो, इम मनमांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी, नृपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहिं ते कहे, आव्या दुःशे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया बाला बापडी, मारी विण अपराध ॥ हवे नृपनें किस वालशो, उत्तर देई अबाध ॥८॥

एहवामां नृप कहेणथी, ऊंचे स्वर संजलाई॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसन्नामां आई॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोमा राजा रे॥ ए देशी ॥

॥ सुणो नृप हगाला रे, नरपति ठेगाला रे, थाऊ उजमाला विकथा ठेमीने रे, मंमपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो मीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांना मुख कोरें रे, करे घात कठोरें बे दल जूजूआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, ऊठ्यो सपराणो रे, आवे हर्ष जराणो संमपनें तलें रे ॥ इन्द्र धनुषथी नारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाठो वले रे ॥ ३ ॥ चौम नृपति नामें रे, ऊठ्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंमप ठामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अंगारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौमाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो मरिऊ खिसतो धनुष उपाम्तो रे ॥ हूतो ए रसिऊ रे, पण देवें मुशिऊ रे, इम नृपगण हसियो ताली पामतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

रे, आयो गजगामी रे, राखे नाहिं खामी बल करतो अङ्के रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको रे, जिम हुये सुकुल कलंको तिम जांखो पङ्के रे ॥ ६ ॥ केता नवी ऊठे रे, केई वेग पूंठें रे, केई शरनी मूठें भेदे थंभनें रे ॥ पण थंभ न भेद्यो रे, नृप टोलो खे द्यो रे, निज दर्प्प उछेद्यो बल आरंभीनें रे ॥ ७ ॥ मरकक मूछाला रे, लाज्या भूपाला रे, करता ढकचा ला निंदे आप आपनें रे ॥ मांटी पण मूक्यां रे, भुजनुं बल चूक्या रे, साहामा वली ढूक्या कोई न चापनें रे, ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सवि लासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजशुं रे ॥ मह वल ते तेहवे रे, थंभ पासें एहवे रे, आव्यो धसि के हवे वीणा साजशुं रे ॥ ए ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे, भूपधा रीजावी जण तंती रसें रे ॥ वली धनुष उपाडी रे, बोल्यो अति त्राडी रे, परणीश हुं लाडी मुज बलने वशें रे ॥ १० ॥ गांधर्व ए धीठोरे, एहने विधि रुठो रे, नहीं छे इहां मीठो खावो चीखनो रे ॥ इम कही नृप हसता रे, महवलशुं सुसता रे, र हेशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥ ११ ॥ ताण्यो धनुष ते सीधो रे, टंकारव कीधो रे, जाणे मद पीधो नृ

प गण लोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचें रे, नाखे परपंचें रे, खीलीनें संचें थांनो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट ज घडिउ रे, साथे जे जडिउ रे, अलगो जई पडिउ घाणे आहण्यो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश नलो बन्धो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं ड कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहडी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोन्ना धारें रे, श्रीपुंजनें हारें ठवी बमणी चढी रे ॥ १४ ॥ वीडी कर लावे रे, जिमणे कर ठावे रे, वरमाल सुहावे हावें त नरी रे ॥ दीपे द्युति नारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे ना गकुमारी थंन्नमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम काठें रे, क्यारें किणे ठाठें रे, पूछे इति पाठें नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शक्तें रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते जुगतें कुलदेवी मतें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूंपें रे, नाखी ते कूपें रे, राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोन्नमां जूंभो रे, एहने वर रूडो रे, आलोचीने ऊंडो चित्त देवी तियें रे ॥ १७॥ नृपतिना वारु रे, बल परखण सारू रे, रचियो ए वारु थंन्नो काठनो रे ॥ कनकाथी लीधो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर गाठनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूडे रे, मणि सोव

न चूके रे, उपी बाजूके कोमल बांहकी रे ॥ कुलदेवी सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंत्र मांहिं उतारी तुं अमने जकी रे ॥ १ए ॥ दुःखकुं मुज नावुं रे, कारज्ञ थयुं कावुं रे, पण लागे ए मावुं जे महाबल नहीं रे ॥ जेणें थंत्र उघाक्यो रे, नृप गर्व लताक्यो रे, गंधर्व दे खाक्यो ते नाग्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवा रें रे, नृपति दुःख नारें रे, महाबल तेणि वारें मुख ढांकी हसे रे ॥ थांन्नाथी निकसी रे, कुमरी कहे विक सी रे, नाख्यो थंत्र उकसी ते नर क्यां वसे रे॥ २१ ॥ देखाके प्रकाशें रे, धाई मात उल्लासें रे, जन्नो थंत्र पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ नृपतिनी बाला रे, सुंदर वरमाला रे, महाबलनें विशाला कंठें लोठवे रे॥ २२ ॥ महाबल वर वरीउ रे, नाग्यें अति नरीउ रे, रतिपति अवतरीउ रूप समाजशुं रे॥ बिजे खंकें दाखी रे, ढाल तेरमी नांखीरे, लेजो रस चाखी कांति कहे ईश्युंरे॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कोपें धकहक्या, बोले विषम वचन्न ॥ जूउ परीक्षा एहनी, वरीउ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि ठांकी आदस्यो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जि सी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

जलपूर परें, प्रगट पराभव पाल ॥ हणी एह गंधर्वने, लेशुं बाल ऊलाल ॥ ३ ॥ इम कही ते हुई एकठा, हणवा ऊठ्या रूठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे ऊठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥ आण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जेम दंडाग्रें बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ भट्ट पुत्र परिचित तिहां, ऊभो एक नजीक ॥ महबलनें जाणी ईसी, भणी स्वस्ति निर्भीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल भासण चंद, पद्मावती दे वीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम ॥ संभवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न कर्या मीटथी लेश, धीर्या किम नरपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं छे कोय, इम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इम सुणी त्यां रीज्यो नृप

चित्त, पूछे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं छे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ बाध्यो जेहने हाथां हेठ, उंल खीयें नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि मित्तनुं वयण, आज हूंउ मिल ते नररयण ॥ मो० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम नाग्यें पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी वा ल्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, जोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव राव्यो ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं ग य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते निरलोन्न, पवन परें न लहे किहां थोन्न ॥ मो० ॥ चंपकमाला साथें नृप, जुंजे जोजन सरस अनूप ॥मो०॥आ० ॥ए॥ लगननो दाहाम्रो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥ मो० ॥ समराव्या जल छांट्यां सेर, शणगारी नगरी चोफेर मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे उतार्या सुर आवास ॥ मो० ॥

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ सो० ॥ आ० ॥ ११ ॥ तोरण माला झाक जमाल, घर घर वर्त्यां धवल धमाल ॥ सो० ॥ वीजे खंके चौदमी ढाल, कांति कहे सुणो वचन रसाल ॥ सो०॥आ०॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ राज नवनमां रसनरें, प्रगट्या रंग अपार ॥ अनिनव शोनायें कस्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग उठांहिं ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी विधें, वजमाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विध विध अंग नवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंदुआ, जरतारी जर बाफ ॥ जेम अकालें युगतिनी, संध्या फूली साफ ॥ ५ ॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जस लशुं जानीया, खमकंतें केकाण ॥ सोंधे नीना सा मठा, गाहिरु नस्या जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करको तिहां कोटवाल ॥ एदेशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोह्या नू

चित्त, पूछे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं छे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ बाध्यो जेहने हाथां हेठ, जल खीयें नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि मित्तनुं वयण, आज हूउं मिल ते नररयण ॥ मो० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम जाग्यें पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी वा ल्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, भोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव राव्यो ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं ग य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते निरलोभ, पवन परें न लहे किहां थोभ ॥ मो० ॥ चंपकमाला साथें भूप, भुंजे भोजन सरस अनूप ॥मो०॥आ०॥९॥ लगननो दाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥ मो० ॥ समराव्या जल छांट्यां सेर, शणगारी नगरी चोफेर मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे उतास्या सुर आवास ॥ मो० ॥

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ सो० ॥ आ० ॥ ११ ॥ तोरण माला जाक जमाल, घर घर वर्त्यां धवल धमाल ॥ सो० ॥ बीजे खंमे चौदमी ढाल, कांति कहे सुणो वचन रसाल ॥ सो०॥आ०॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ राज जवनमां रसजरें, प्रगटया रंग अपार ॥ अजिनव शोजायें कस्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग उछांहिं ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी विधें, वजकाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विध विध अंग उवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंद्रुआ, जरतारी जर बाफ ॥ जेम अकालें युगतिनी, संध्या फूली साफ ॥ ५ ॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जस लशुं जानीया, खमकंतें केकाण ॥ सोंधे जीना सामगा, गाहिरु जस्या जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करमो तिहां कोटवाल ॥ एदेशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोह्या जू

षणोजी ॥ सुतरु मोहन वेलि, सरिखां दीसे बिहुं नि र्दूषणोजी ॥ १ ॥ वाजे त्रूंगल भेरि, ताल कंसाल न फेरी नादक्षुंजी ॥ शणगार्‍या गजराज, आगल चाले अति उनमादक्षुंजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलंत, फरह रते केसरीये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोरू, श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल क बनाय, तंडुल भालें चोढ्या उजलाजी ॥ परवरिया घमसाण, तोरण आव्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥ मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥ भट्ट भणे जयमाल, सोहला गाया सरलें गोरीयें जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण भणते वेद, पंचामृतना होम ति हां कीधाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ वींटीयाजी ॥ ६ ॥ बिहुंना छेहरा बांध, चारे फेरे मं गल वरतियांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसा र तिहां आरोगीयांजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय, पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा णी आशीष, वचन इस्यो अति हेजें उच्चर्‍योजी ॥ ८ ॥ चंद्रिका चंद समान, अविचल होजो तुमची जोरु लीजी ॥ हयगयरथ धन कोमि, करमोचन वेलायें दे भलीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिहां

पधरावियांजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत दै सहु राजी कीयांजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोडि, मलती जोडी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान, रतिपति नायकनी जोडी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनी श, पूछे त्यां माहाबलने खांतशुंजी ॥ एकाकी इंणे गाम, लगन समय आव्या किण भांतशुंजी ॥ १२ ॥ कुमर भणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणीउंजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जाणीउंजी ॥१३ ॥ वली माहाबल कहे एम, शीख करो तो चालुं घर भणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, करतां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ बार पहोरमां जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा करुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥ पडवेने दिन सूर, ऊग्या पहेलो जो जाई मलुंजी ॥ जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी ॥ १६ ॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाउ आकलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गुण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवी ठाण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम, पडखोजी बोलावीश हुं पछेजी ॥ १८ ॥ करह लिया

करी साज, करवतियां घर काटण कोरमीजी ॥ संप्रेमी श ततकाल, असवारी मनधारी ए ठमीजी ॥ १९ ॥ कोप्या जे नरपाल, सतकारी बोलावुं तेहनेजी ॥ त्यां लगें धीर धराय, रहो रहो इमहिज करतां ए बनेजी ॥ २० ॥ इम कही ऊठ्यो जूप, बीजे खंमें सरस सोहा मणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविलास पणे जणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणें तजी ला ज ॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥ गत दिवसें देवी गृहें, मिल्या रत्नसमां जेह ॥ कही न सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥ एहवे वेगवती तिहां, मलयानी धासाइ ॥ आवी कर जोमी विन्हे, पूछे एम हसाइ ॥ ३ ॥ कारज ए देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन संसय आफलें, कहो सुजग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी ए माहरे, वीसवासणी छे स्वामि ॥ सुखें कहो शंका तजी, एह मुज जामणि ठाम ॥ ५ ॥ गजमुख दीधी मुद्रिका, तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ जांखीने दिन अपर नुं, संध्यानुं कहे चित्र ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ सखीरी आयो उन्हालो अटारमो ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय वीजे दीने, वीजे दीने, नृपथी मांकी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांजलो ॥ पियारी मंत्र साधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो, नृप कनें लेई लंच ॥ मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते डव्यें सूलारना ॥ सू० ॥ उपकरण लेई सूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥ ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥ सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥ पि० ॥ विवर सहित ते फालिका ॥ फा० ॥ कीधी घणी अभिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली ठानी तेहमां, ते० ॥ बेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साल संचे मुख ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥ पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी जीत संजूष ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥ ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ उनो रह्यो करी शान ॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥ ते अति लोभने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तालुं भांजी

नवि शकुं ॥ न० ॥ तुं मुज खोली आप ॥ मृ० ॥ ७ ॥ पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥ में० ॥ लीधो तिणे स वि माल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥ पो० ॥ द्रव्यतणी लोभाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मु जने इम कहे ॥ इ० ॥ शूकी सतनी मूंठ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जावंतो हवे चोर ते ॥ चो० ॥ के नृप जन करे पूंठ ॥ मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥ मू० ॥ थरके तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या त णुं ॥ जी० ॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि० ॥ पद्मशिला ते भवननी ॥ ते० ॥ में उघाडी खांच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ ते० ॥ घाल्यो ऊंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर ते ठवी ॥ ते० ॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊ तरतां अंगण तले ॥ अं० ॥ दीठो वृक्षतरु जांख ॥ मृ० ॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वृक्ष ऊपर चढ्यो ॥ ऊ० ॥ रहुं जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि० ॥ दीठो वृक्षनी कूखमां ॥ कू० ॥ भूषण वसननो थाट ॥ मृ० ॥ १३ ॥ पि० ॥ अपह रि लीधा देवीयें ॥ दे० ॥ पहेलो मुज समुदाय ॥ मृ० ॥ ॥ पि० ॥ ते तिण ठांनां गोपव्यां ॥ गो० ॥ दीसे छे ए प्राय ॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते ओलखी ॥ ओ० ॥

निरखुं बेठो गुज्झ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊवट वाटें आ
वती ॥ आ० ॥ नजरें पमी तुं मुज्झ ॥ मृ० ॥ १५ ॥
पि० ॥ वरुतरुथी हुं ऊतरस्यो ॥ हुं० ॥ साहामो आ
व्यो दोम ॥ मृ० ॥ पि०॥ बेहुं मल्यां ए साहरी ॥ सा० ॥
वात कही ठल गेम ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजे
खंमें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥
मृ० ॥ पि० ॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे
वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर जणे में जुगतिशुं, जांख्यो मुज विरतंत ॥
तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥
ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वे
ष मगधासदन, पुबुं पग पग ग्रांहिं ॥ २ ॥ घर न
मली पुरमां जमी, किहांइ न दीठी स्वाम ॥ बेठी देव
ल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके
फांकमे, धूरत एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो
की सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूछ्या थकी, बो
ली करती रींग ॥ अहो सुगुण मुज पाठले, वलगो
बे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूंठे पड्यो, लंघावे बे
मुज ॥ क्षण क्षण थइ विरुउं नमे, गूमम जेम अरु

ज्ञ ॥ ६ ॥ निःकारण मुजनें इणे, नीखी संकट मांहि ॥ वात कहुं ते आदिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

गतदिन बेठी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत त्यारें रे, एतो आव्यो माल्हतो ॥ १ ॥ हास करीने हो राज, में बोलाव्यो राज, इमतो न जाण्यो रे धूतारो जन एह ठे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते करीने राज, कांइक आपुं रे हुं तुमने रूअडुं ॥ ३ ॥ वचन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मर्दी मा हारी रे इणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूठी हो राज, मनमां वारु राज, जिमवा सारु रे में तो एहनें नोतस्यो ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं ठे राज, नोजन न करुं रे कांइक मुने द हवे ॥ ६ ॥ पीत पटोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम न नांखे हो राज, कांइक मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूंठे माहरे ॥ ८ ॥ देहरे बेसारी हो राज, मुजनें लंघावे राज, जावा न दीये रे क्यांहिं फीव्यो बाहिरें ॥ ए ॥ तव में विचास्युं हो राज, जो हुं दुःखमां राज, जगखो निवेखी रे वेश्याने ठोरुवुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

एहथी राज, इम निरधारी रे बेठी त्यां हुं ते कन्हें ॥ ११ ॥ मगधानें काने हो राज, कहि कांइ छानें राज, में कह्युं निठुंने रे जाउ जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्रीजे ते पहोरें हो राज, जगको हुं त्रांजीश राज, वेहेला आंहिं रे बेहु पाछां आवजो ॥ १३ ॥ माहावल पूछे हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी त्रांज्यो रे गोरी कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पंथनी थाकी होराज, देहरे हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी बेहु आवीयां ॥ १५ ॥ मुजने जगाली हो राज, मगधानी दासी राज, घट एक ढांकी रे मांहे छानो त्यां ठवे ॥ १६ ॥ में कह्युं तेहने हो राज, जण करी साखी राज, कांइक अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे वारू हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे एहथी माहारे आजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी होराज, शान में ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे त्रांखे एहवु धूर्तनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जीत्यो राज, कांइक मूक्युं रे मेंतो मांहे कुंजमां ॥ २० ॥ ते तुं लेइनें हो राज, छेहको छोडे राज, इम सुणी आव्यो रे रंगें देवलमां वही ॥ २१ ॥ कुंज निहाली हो राज, ढांकणी उपाडी राज, कांइक लेवारे घाले आंह

हाथ ते ॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, हाथें वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर आगमतां ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांइक दीसे राज, मगधा हसतीरे जांखे एह छे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज बोल्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज देणाथी रे कीधो माहारे बूटको ॥ २५ ॥ लोक हसंता हो राज, कहे तिहां बहुलां राज, एहने दीधुं रे एणे कांइक रूअडुं ॥ २६ ॥ विषधर रूक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नासें रे देवी केरें बारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथें राज, निजघर आवी रे पाडु माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खंडे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमंगें रे जांखी रूडी नेहशुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

तुम थकी, न रहे छानी नेट ॥ कह्यो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ वने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पड्युं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी जली ॥ एदेशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणिका हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीनां ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गाडरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूंण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधानें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो वेहुमां, जाएयो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

हाथ ते॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, हाथें वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर आगमतां ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांइक दीसे राज, मगधा हसतीरे जांखे एह ठे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज बोल्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज देणाथी रे कीधो माहारे बूटको ॥ २५ ॥ लोक हसंता हो राज, कहे तिहां बहुलां राज, एहने दीधुं रे एणे कांइक रूअरुं ॥ २६ ॥ विषधर रुक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरें बारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेमी हो राज, मगधा साथें राज, निजघर आवी रे पारू माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खंमे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमंगें रे जांखी रूमी नेहशुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हार रही में तेहने, आप्यो इम उच्चाट ॥ तुज घर नृपद्धेषी वसे, पेसुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इम सुणी ते विलखी थइ, चिंते एहवुं चित्त ॥ ए नाणी ठे कोइक नर, जाणे रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बीहती मन मां बापमी, मुजने इम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहेता किहां, कहुं हुं जोमी पाण ॥ ३ ॥ किहां हुपाकुं

तुम थकी, न रहे छानी नेट ॥ कहो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ वने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पड्युं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी जली ॥ एदेशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणिजा हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीनां ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गाडरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूंण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधा नें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो बेहुमां, जाणयो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

तोपण तुज उपरोधथी, करशुं हुं ए काज ॥ ना० ॥ ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं कादण साज ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ गणीकायें अति आदरें, भोजन मुजने दीध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें भरी, वदती मीठा बोल ॥ ना० ॥ भोग भणी मुज प्रारथे, करती नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में भांख्युं तेहने ईस्युं, मुज वालो छे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी नारीनो, मनमथ रूपें छेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ए ॥ प ण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मुज मलशे देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ मुज साथें तुं आवजे, देखुं जोग बनाय ॥ ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति कीहां नहीं जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्यांथी तुमें, आव्या कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्युं विदुं क्षत्री अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, भांखे निज अवदात ॥ ना० ॥ गोष्टि करंतां रातनी, वीती थयो परभात ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूछ्युं प्रपंचें में वली, तेह ने प्रभातें तांई ॥ ना० ॥ छे तुज पासें के नहीं, आ

नरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजने देखाझीयां, आजूषण तेणें काढि ॥ना०॥ हसतां में कह्युं थोमलां, ते कहे इम रस चाढि ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥ हार अठे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥ गुप्त धस्यो ते काढतां, आवे ठे मुज ध्रुज ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥ में पूछ्युं ते क्यां धस्यो, ते कहे चहुटा मांहिं ॥ना०॥ शूना घर पासें वसो, कीर्त्ति थंन ठे त्यांहिं ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें जंझारीयो, ते हसां मूक्यो झाट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, झर ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज जई तिहां, आणीश तेह ठिपाई ॥ ना० ॥ जाई शके जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १९ ॥ नहीं तो सांजे मुजनें, कहेजे जेहवुं होय ॥ ना० ॥ इम आलोच कस्यो घणो, मांहोमांहें रस हो य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालयकी हुं उतरी, आ वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंमें अढारमी, कांतें जणी इंम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कहो केती ठे ढील ॥ में कह्युं ए तुज घर थकी, काढी ठे अमखील ॥ १ ॥ सं

च कस्यो छे एहवो, पूरी पूरण पूठ ॥ वारंतां पण रा तमां, जाशे कनका ऊठ ॥ २ ॥ सामग्री जोजन तणी, करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, गई दिवसने छेह ॥ ३ ॥ गाना थानक थंजनो, जोतां न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई जांख्यो सुविचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी जवन मजार ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छंगणीशमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आछे लाल ॥ अध मारगें जूली पमी ॥ आफलती पूर सेर, खाती घारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पामी वाटमी ॥ १ ॥ आवी हुं तुम पास, जांखी वात प्रकाश, आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने एह, आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २ ॥ वात सुणी इंम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥ प्रीति वचन ते उछप्यां ॥ बोलवुं नही घटमान, एह थी होय नुकशान, आ० ॥ इम कही थें गाना छिप्या ॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आवी मुज उपकंठ ॥ आ० ॥ तव में इम कह्युं तेहनें ॥ आवी म कर कांइ सोर, गा छे इहां चोर, आ० ॥ दे मुज जे होय तु

ज कने ॥ ४ ॥ राखुं छिपाफी क्यांहिं, तव ते आपे त्यां हिं, आ० ॥ बगचो हाथें उचकी, में तेहमांथी टालि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली कंचूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक मिलाय, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धस्यो ॥ में कह्युं तेहने एम, थरके छे तुं केम, आ० ॥ थानक में ताहरे कह्यो ॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय, त्यां लगें तें न खमाय, आ० ॥ पेश मंजूषें ते जाणी ॥ पेठी ते निर्भीक, में धारी मन ठीक, आ० ॥ तालुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥ आपण बे अति हुंस, जपाफीने मंजूष, आ० ॥ गोला मां वहेती करी ॥ वैर प्रथमनुं वालि, वाही नीर विचाल, आ० ॥ करताशुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पिउ ततकाल, थूंकें माहारुं जाल, आ० ॥ रूप सहज नुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग, आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ए ॥ पहेर्यां कुंडल खास, रविशशी मंडल जास, आ० ॥ लाधां जे वफने थफें ॥ पहेर्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार, आ० ॥ वरमाला धारी जलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मांहि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खीली चोर,

आ० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही बी
जे खंभ, थाप्युं शीश अखंभ, आ० ॥ तेहमां वसी खी
ली जभी ॥ राख्या पवननां माग, नीचें ठानें लाग,
आ० ॥ चतुराईशुं ते घडी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात,
कहो आगें अवदात, आ० ॥ में न लह्या तिहां संक्र
मी ॥ बीजे खंभें एह, कांति कहे धरी नेह, आ० ॥
ढाल नणी उंगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहाबल माननी सुणो, आगें जे हुई वा
त ॥ थंत्र तिस्यो में चीतस्यो, जिम जाएयो नवि जा
त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे ऊगस्या, ते वाह्या जलपूर ॥
एहवामां फरी चोर ते, आव्या नवन हजूर ॥ २ ॥
चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तस
शानें बोलावतां, कीधा आदर इठ ॥ ३ ॥ मुज पूछे मंजू
षशुं, दीठो एक किहां चोर ॥ बीरुं में देई आदरें, कह्युं
एम तिण ठोर ॥ ४ ॥ थंत्र एहजो पूर्वनी, पोलें मूको
आज ॥ तो देखारुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥ ५ ॥
॥ ढाल वीशमी ॥ थें तोनें आया ठेलशुं, ठेलगाणाजी ॥
जिरमट खास्यो गाल नएया ॥ ए देशी ॥
॥ चोर कहे इम उमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नलें

मल्या नाग्यथकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता जी, अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहमां पाप न कोइ इहां ॥ कहोतो काढी दीजीयें ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जीहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारीखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय डुःख घणो ॥ पोलावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥ लहीयें अर्थ सरे बमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया एकठां ॥ गु० ॥ धन दाटी तेह सिंधु तटें ॥ उपाडे मली सामटा ॥ उ० ॥ थंत्र तिहांथी एक घटें ॥ ४ ॥ ते पूंठें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥ वंछित थल देखाडियो ॥ उ० ॥ ते तिहां मूकी निचिंत थया ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखाडुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ उ० ॥ धन लोभें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ उत्तर कूडुं एम कह्युं ॥ लोभ वशें तेणें चोरटे ॥ उ० ॥ तालुं ऊघाडी द्रव्य ग्रह्युं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दी ठ में सघली परें ॥ गु० ॥ पासें जन्न चरित्त घणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर त

णां ॥ ए॥ रातसूधी ते नीरमां ॥ गु० ॥ जाशे तरतो भूमि कीती॥ देशुं वरू जंजीरमां॥ ज०॥ अहिशुं करशे जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो ॥ गु० ॥ चोटी एहनी हाथ अछे ॥ हमणां मूक्यो मोकलो ॥ ज० ॥ लेशे फल रस पाक पछें ॥ ११ ॥ इम कहेतां मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगें ॥ यत न करी में एकले ॥ ज० ॥ राख्यो थंन प्रनात लगें ॥ १२ ॥ प्रहकालें जण नूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख ण थंन तिहां ॥ हुं थई अलख स्वरूपनो॥ ज० ॥ बेठो आवी छे नूप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल नणें ॥ काढुं चोर ते स वेंथा ॥ ज० ॥ शिखर ठव्यो जे नुवन तणे ॥ १४ ॥ चालीश जो हुं निजपुरें ॥ गु०॥ तो मरशे तिणें नीरु पड्यो ॥ चढशे पाप खराखरे ॥ ज०॥ इणे फिकरें मुज चित्त नड्यो॥ १५॥ तुं इहां रहेजे हुं वही ॥ गु०॥ आवी श तेहनो सूल करी॥ कहे मलया रहेशुं नहीं ॥ ज० ॥ साथें आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चित्तमां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम नणे॥ जो नृप आवे तुरतमां ॥ ज० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहां ह

मणां ॥ मानत किम शकीयें गमी ॥ उ० ॥ मान्या होय जे देव तणा ॥ १७ ॥ इम कही चाल्यो तिहां थकी ॥ गु० ॥ राति समय देवी भुवनें ॥ वारी पण नवि रही शके ॥ उ० ॥ मलया साथें हुई सुमनें ॥ १ए ॥ वीजे खंर्मे वीशमी ॥ गु० ॥ ढाल नली अति सरस रसें ॥ सुणतां श्रोताने गमी ॥ उ० ॥ कांति कहे मनने हरसें ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंर्मे करी, वीरधवल नूपाल ॥ समजाव्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं हगाल ॥ १ ॥ तेह कहे परन्नातमां, मारी तुज जामात ॥ कन्यां लेइ चालशुं, तुं न करे अम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि नूपति चक्यो, आवे नुवन विचाल ॥ साज करावे करहलि, संप्रेरूण वर बाल ॥ ३ ॥ चुंप करावण आविउ, वर कन्या नवणेह ॥ दीठा नहीं पूब्युं तदा, वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ वेगे जोवे वाटर्मी, नूपति करतो चिंत ॥ रात पर्मी तव जिहां तिहां, शोध्यां पण न मिलंत ॥ ५ ॥ खबर लही नृप नंदनां, कटक गयां परन्नात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन विरचात ॥ ६ ॥ जामाता कन्या तणी किहां न लही नृप सूज ॥ डुःखियो नूपति चित्तमां, चिंते एम अमूंज ॥ ७ ॥

॥ढाल एकवीशमी॥धिग धिग धणनी प्रीतडी॥ए देशी

॥नरराज अति चिंता करे, मनसां पोषी दाह ॥ वर कन्या बिहुं किहां गयां, ए तो अचरिज रे दीसे जगनाह ॥ १ ॥ नृपति त्रटकीने कहे, कुंण जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं, थयुं होशे रे कांइ विपरिय रूप ॥ नृ० ॥ २ ॥ किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥ किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना अहिनाण ॥ नृ० ॥ ३ ॥ अथवा दैवें बेहुनो, संयोग इम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, देखाडी रे किम जडपी लीध ॥ नृ० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां एहवुं हतुं, करवुं दैव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परगट करी, क्यां पाड्यो रे एह माहारी दृष्ट ॥ नृ० ॥ ५ ॥ नवि दीधुं भोजन भलुं, नहीं दीधुं लीध उदालि ॥ मणि हीणुं भूषण भलुं, पण पडिउं रे ज़श मणि ते टालि ॥ नृ० ॥ ६ ॥ हएया दुष्ट किण वरीयें, अथवा निरुध्यां केण ॥ के किण देवें अपहर्यां, दंपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ नृ० ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आव्यो हतो कोइ चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुज कन्या रे काल

जानी कोर ॥ नृ० ॥ ण ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, भ्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गयां, करु णालां रे केइ अथवा विचालि ॥ नृ० ॥ ए ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुण लहे मुज मन पीर ॥ इम कहेतो गलहथ करी, नृप बेठो रे पड्यो चिंता नीर ॥ नृ० ॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रनु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, बल छेतर्यां ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधथी, संनवियें रे हरि या किणें देव ॥ नृ० ॥ १२ ॥ देशान्तर पुर पर्वतें, वननूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो वरावो रे तजी अपर किलेश ॥ नृ० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीठाण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कदे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ नृ० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो वात ॥ ते पण खबर करे वली, करतां इम रे सवि आ वशे धात ॥ नृ० ॥ १५ ॥ नलुं नलुं नूपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर वा रे नरपति सज थाय ॥ नृ० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

मोकल्यो, कहेवानें रे व्यतिकर सवि तेह ॥ नृ० ॥ ॥ १७ ॥ हयगय सुन्नट रथ साजशुं, ते कुमर निय त प्रयाण ॥ कुशलें मलशे नृपनें, होशे रूमा रे इहां कोमी कल्याण ॥ नृ० ॥ १७ ॥ ढाल एह एकवीश मी, इम कही कांति रसाल ॥ जुगतें बीजा खंमनी, नणतां होये रे घर घर मंगल माल ॥ नृ० ॥ १ए ॥

॥ चोपाई ॥ खंरू खंरू रस ठे नवनवा, सुणतां मीठा शाकर लवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, बीजो खंरू संपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलयसुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरीपाणीग्रहणप्रकाशको नामा द्वितीयः खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजो खंरू घमंमशुं, पूरण कीध प्रगट्ट ॥ हवे त्रीजो कहेवा नणी, उमग्यो रंग गरट्ट ॥ १ ॥ प्रेमें प्रणमी शारदा, कहेशुं शेष चरित्र ॥ अति रसशुं श्रोता सुणी, करजो करण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुमर

वनमां जई, मलयानें पन्नणंत ॥ फिरवुं निशि सम शानमां, नारीनें न घटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप तुज, करुं कही इंम चाल ॥ तिलक कस्युं आंबारसें, गोली घसी ततकाल ॥ ४ ॥ नारी रूपें नर हुउ, थयां बेहु संबंध ॥ देवी गृहनां शिखरथी, काढे चोर निरूद्ध ॥ ५ ॥ कहे इस्युं रे गत दिनें, गया चोर तुज देख ॥ जा कुशलें जिहां रुचि होवे, तिहुनो पंथ उवेख ॥ ६ ॥ प्राण लान्न धनलान्न में, तुम पसायें लद्ध ॥ इंम कही ते नमते घणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ बिहुं जुत्र नथी ऊतरी, आवे वमतलें आप ॥ तव तिहां गयणे गेबनो, सुण्यो न्नूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर स्मरंतो न्नू तथी, करवा यतन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठ थी, लीए ऊतारी हार ॥ ए ॥ रहे रहे ठानी सल क मां, सांन्नल देइ कान ॥ वमुमां न्नूत वदे किस्युं, कुमर करे इंम शान ॥ १० ॥ ठानां वम पोलाशमां, बिहुं बेठां थिरगात ॥ सावधान थइ सांन्नले, न्नूत तणी इंम वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सहेर न्नलो पण सांकमो रे, नगर न्नलो पण दूर रे॥ हठीला वयरी ॥ ए देशी ॥

वम शिखरें इंम बोलीउ रे, न्नूताने एक न्नूत

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली जली होला
ल ॥ सांजलजो अदजूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ जूत वस्रो
कहे वातमी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे
रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो
लाल ॥ वेधक पासे नेठ रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २ ॥ पु
हवी ठाण नरिंदनो रे, माहाबल नामे कुमार रे ॥ मो० ॥
छे मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार
रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलखं
पणें लीयो हो लाल, माय करे दुःख जार रे ॥ मो० ॥
॥ जू० ॥ ४ ॥ इम पण बांध्यो आकरो रे, वालण
हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पांचमे हो
लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ ॥ मो० ॥ जू० ॥
॥ ५ ॥ मातायें पण आदस्यो रे, पण तेहवो निर
धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल,
तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ६ ॥ ख
बर नहीं छे कुमरनी रे, हार केरूं गयो जठ रे ॥ मो० ॥
पंचम दिन कालें हुशे हो लाल, सूरज जग्या पूंठ रे
॥ मो० जू० ॥ ७ ॥ नपनंदन मगतावली रे.

गमी हो लाल, बेठी राणी तेह रे ॥ मो० ॥ नू० ॥
॥ ८ ॥ विषथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल
देश रे ॥ मो० ॥ मरशे के वली शस्त्रथी हो लाल, के
करी अगलिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ए ॥ लोक
बहुलशुं राजीयो रे, मरशे पूंठें तास रे ॥ मो० ॥
खबर लेइनें आवीयो हो लाल, हुं तिहांथी तुम पास
रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १० ॥ नूपनंदन वक्र कोटरें
रे, सांजले बेठो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे हीयडुं डुः
खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥
॥ नू० ॥ ११ ॥ चिंता नर मन चिंतवे रे, देव कथ
न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ थाशे जो एहवुं कहे हो
लाल, तो करशुं श्यो शोक रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १२ ॥
नूत कहे जइयें तिहां रे, वहेलां गंमि प्रमाद रे
॥ मो० ॥ कौतिक जोशुं खंतशुं हो लाल, लेशुं रुधिर
सवाद रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १३ ॥ इम कही सम
कालें कस्यो रे, नूतकुलें हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका
शें वक्र ऊपड्यो हो लाल, लेता साथ कुमार रे ॥
॥ मो० ॥ नू० ॥ १४ ॥ वेगें वक्र नजें चालतो रे,
आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें
जई हो लाल, तुरत कस्यो मेलाण रे ॥ मो० ॥ नू०

॥ १५ ॥ पुर पासें गोला तटें रे, नामे धनंजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ जूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन जूमिनां रे, परिचित तरुनां वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमर निहाली उलखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १७ ॥ कुमर जणे मलया जणी रे, दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वरु ऊपरी हो लाल, आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ॥ १७ ॥ वरु कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें वली ऊरुशे हो लाल, तो कर स्यां श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १ए ॥ एम विचारी नीसस्थां रे, वरु कंदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन ठे ढूंकडुं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ॥ २० ॥ ऊपरुतो गयणांगणें रे, देखे वरु वली तेम रे ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इहां थको हो लाल, जाशे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए हमां वसी रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ परुतां विषमी जोलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंरु ए कही रे, सुंदर प

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो लाल, वाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया पणे नयणें ज्ञरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश हुं वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इम कही नर रूपें त्रिया, तिहां ठवि चल्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पियु नी वाटमी, शूने रंज्ञाकुंज॥रयणि गमावे नारि ते, दाधी उःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पाम्यां क मल विबोध ॥ बंधनयरथी बद्ध जिम, बूटा अलिकुल योध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो वालो सूर ॥ आलें किरणजालें हणी, कस्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वृषज्ञान जुवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं पुरमां करारें ॥ माय बापने मलवा कासें, मुज नाह गयो हुशे धासें ॥ १ ॥ चाही इम चाली चुंपे, आवी वही पुरनी खुंपें ॥ पेसे जव पुरनें डुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥ दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धमक्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लो चन थापे ॥ ३ ॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे तस

रूप प्रकाशी ॥ कुंमलने डुकूलनी फाली, जलख्यां म हबलनां जाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधां, आनूषण कुमरनां बाधां ॥ इम कही नृप पासें लाव्यो, देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष ए नवलो, सोहे नूषणें करी जांतीलो ॥ मुज सुतनां पहिर्यां दीसे, आनूषण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर क हे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूछ्यो पण उत्तर नापे, पूछो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ नूपति कहे कुण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥ मलया मनमांहे विमासे, साचुं इहां जूठुं नासे ॥ ॥ ८ ॥ कहिशुं अम चरित्र वखाणी, कोइ सद्दहशे नहीं प्राणी ॥ कहेवुं नहीं पीजला पाखें, नावी मटशे नहीं लाखें ॥ ए ॥ इम धारीने मलया बोले, महबल मुज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने ते णे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां छे, सा कहे इहांहिज जिहां त्यां छे ॥ नृप कहे होये जो इहां गवे, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठी सवि वात प्रकाशी, चोकस न पमी विण रासी ॥ महबल शी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ तुज जाणे ॥ १२ ॥ इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन हीने ॥ वो

ह्यो नरपति हुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥ १३ ॥
अणदीठां मुज नंदननां, वसनादिक लीधां तननां
लोनसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर ठोरें ॥
॥ १४ ॥ चोर्‍यो पुरनो जेणें माल, पकड्यो ते माटे
हवाल ॥ काले तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे
ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सूधि लेवा
आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इणे पुरमां
कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीठ इणे मलीनें,
मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोनसार कन्हें जई हणजो,
इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥ १७ ॥ मलया मनमां इ
म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद
मोटी, दीसे छे इहां वली खोटी ॥ १८ ॥ चिंतवती पूर्व
सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सची
व विचारी, महाराज जुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम
साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आ
चरणा दीसे रूडी, शिर आवी तो मति कूडी ॥ २० ॥
इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥
इम करी हणशो तो आछे, कोई दोष न देशे पाछे
॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प
मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजें, होशे तो चरण न

भीजें ॥ २२ ॥ नृप गारुडविद अविलंबें, मूके तव शैल अलंबें ॥ डुडूर विषधर आणेवा, गया हसता ते ततखेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंमल नृपें लेई, तलवरने सोंप्यो तेई ॥ बंध आवी मलया राणी, पण ढालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें बीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांजलजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलणी आवी दोम ॥ गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोम ॥ १ ॥ देव खबर नहीं कुमरनी, पंचम दिन बे आज ॥ नेट अनिष्ट इंहां किस्युं, दीसे बे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन डुर्लन्न हूउ, हार तणी शी वात ॥ शैल अलंबाथी पमी, करशुं ते डुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इंम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरो, करो आप हित जाणी ॥ इंम सुणी नरपति तेहने, पन्नणे अवसर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जुंबखमानी देशी ॥

सूज वचनें इंम नांखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरडी ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख मीडं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे, दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आव्याथी जाण शुं रे, वात तणो परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नहीं सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुद्धि ॥ स० ॥ तो तुज गति मुजने हजो रे, धारी में एहवी बुद्धि ॥ स० ॥ ३ ॥ उं ट कमण किण बेसशे रे, तेल जूर्ड तेल धार ॥ स० ॥ कुंमल वसन कुमारनां रे, आव्यां सहसाकार ॥ स० ॥ ४ ॥ किम रहेशे ढानो हवे रे, लाधो पग संचार ॥ स० ॥ पुरुष अपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥ स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी नणी रे, आपीने कहे जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाण्यां आवियां रे, सुत पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीव तो रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ महुलणी आवी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥ कुंमल वसन समर्पिनें रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स० ॥ ८ ॥ विस्मित मन राणी हुई रे, पूछे वस्तु निदान ॥ स० ॥ महुलणी आगम पुरुषथी रे, नांखे तस घ टमान ॥ स० ॥ ए ॥ हर्ष शोकाकुल कामिनी रे, म

हुलणी आगें वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लभ आवि
यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा
कोईक वैरीये रे, कुमर हण्यो छल खेल ॥ स० ॥ कुंरू
ल वसन लीयां तिकें रे, ते आव्यां इणि वेल ॥ स०
॥ ११ ॥ ते माटे निरखुं हवे रे, करतो धीज विशु
द्ध ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर साथें
मुद्ध ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो
रे, वींट्यो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तव विषध
र ग्रही रे, गारुडी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप
तिनें कहे गारुडी रे, देव अलंबा हेठ ॥ स० ॥ वि
वर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेठ ॥ स०
॥ १४ ॥ फूंकारें तरु बालतो रे, कालो काजल वान
॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंभमां रे, घाल्यो आणी निदा
न ॥ स० ॥ ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावे
नर कुंभ ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुभटें
करी संरंभ ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहाली तेहनुं रे,
कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम दूषवी
रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंद्र अंगारा
जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ
तथी जो हुवे रे, तो एहथी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

दिव्य कठिन ए एहनें रे, देतां मन न वहंत ॥ स० ॥ दोष नहिं नृपति तणो रे, गुणही एम लहंत ॥ स० ॥ ॥१ए॥ समसूधो वानी ग्रहे रे,वाधे सुजश अताग ॥स०॥ जात्य सुवर्ण हुताशनें रे, ताप्यो ले गुण त्याग ॥ स० ॥ ॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहां रे, जपती मन नव कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, ऊधारे घट बार ॥ स० ॥२१॥ निर्जय करकमलें ग्रह्यो रे, वि षधर अति रोषाल ॥ स०॥ लोक लह्यो अचरिज नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥२२॥ नाग हू उं निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल॥ स० ॥ नेह निविक रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥ स० ॥२३॥ साचो साचो इम कहे रे, पाके नर करताल ॥ स० ॥ त्रीजे खंमें ए कही रे, कांतें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥२४॥

॥ दोहा ॥

॥ केलि करंतो करतलें, काढें मुखथी हार ॥ तें मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणिधार ॥ १ ॥ ते निर खी विस्मित हुउं, नृप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पि ठाणी इम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी पुंज किहांथकी, आव्यो एह अचिंत ॥ विण वादल वरसात ज्युं, करे अचंत्र अनंत ॥ ३ ॥ त्याल तिल

क नरनो चढी, चाटे जव अहिराव ॥ दिव्यरूप तरु णी हुई, तव ते मूल स्वभाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि मंकली, रह्यो उपर धरी छत्र ॥ जोतां जण अद्भुत र स, लहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे बागमां,
दो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ थर थरतो नरराजीयो, भणे एहवी वाचा लो ॥ अहो भ० ॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥अ०॥ देखी० ॥१॥ पुरजण देखी वारता, अनरथ उगाड्यो लो ॥ अ० ॥ भरनिंदें सूतो इहां, मृगराज जगाड्यो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २ ॥ नाहिं सामान्य भुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो ॥ अ० ॥ निरखत रचना एहनी, रही मनरू खूंपी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए बे जणां, ढां की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उद्देशथी, आव्यां कोई छानां लो ॥ अ० ॥ दे० ॥४॥ परमारथ लहे तो नथी, आराधी बेहुनें लो ॥ अ० ॥ भगतें सूधां रीजवी, पूछु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥ इम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥ अ० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही इम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रजु, कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ नक्ते वश होय देव ता, इम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥ अ० ॥ नृप पयपात्र धर्युं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ देशें लो ॥ अ० ॥ गारुमीयें पाछो ग्रही, मूक्यो गिरि देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें, जोतां जण पासें लो ॥ अ० ॥ नरथी नारी किम हुइ, एह कौतुक नासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुंण छे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी लो ॥ अ० ॥ रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उ लटयुं लो ॥ अ० ॥ नाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं पण उलटयुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विष हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार लह्यो पीयु करतणो, अचरिज इहां जाणुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १३ ॥ कारण ए मुज पीउनां, विण कारण सीधां लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पन्नती नथी,

श्यो उत्तर आपुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेवुं घटे, तेतुं थिर थापुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचुं करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥अ०॥ दे०॥१६॥ हुं ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विशेषें लो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्युं तुं तेहथी, मलतुं नहीं लेखे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुंठे धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने हवे, देवी तुज पासें लो ॥ अ०॥ सुखशाताशुं राख जो, उंचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने तिहां, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खंमनी, ढाल भांखी कांतें लो ॥अ०॥ दे० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण स्वामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिउ, लाधो अति चाहंत ॥ १ ॥ कीधो महबल नंदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख दुःख अंगें साहसी, पूछ्यो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचन स

णी राणी हूई, दुःख जारें दिलगीर ॥ शीलवने इम वि नवे, नयण जरंती नीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सासू काठा हे गहुं पी साय, आपण जास्यां हे मालवे, सोइ नारी जणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया बेठा हे कांइ निचिंत, कान ढालीनें हे इ णिपरें ॥ सुत जायो घरें ॥ पीया विरहो हे अति खट कंत, सुतनो हे हीयमा जीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया मुजथी हे रह्युं न जाय, लंबा दीहा किम नीगमुं ॥ सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी थाय, नींद गई शूनी जमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बालुं हे नवलख हार, पु त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे रतन उदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ पीया ढोल्युं हे सरस पीयूष, छार उदकने कारणें ॥ सु० ॥ पीया कापी हे सुरतरु रुंख, वाव्यो धंतुरो बारणे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र रहित दोजागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे ऊंपावीश जेम, निवृत्त होइ जीवित जणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री

पसाय, हार परें सुत आपणुं ॥

श्यो उत्तर आपुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेवुं घटे, तेतुं थिर थापुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचुं करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥ अ०॥ दे०॥१६॥ हुं ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विशेषें लो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्युं तुं तेहथी, मलतुं नहीं लेखे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुंठे धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने हवे, देवी तुज पासें लो ॥ अ० ॥ सुखशाताशुं राख जो, उंचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने तिहां, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खंमनी, ढाल जांखी कांतें लो ॥ अ०॥ दे० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण जामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिउं, लाधो अति चाहंत ॥ १ ॥ कीधो महबल नंदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख दुःख अंगें साहसी, पूस्यो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचन सु

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्मय हर्ष, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इछा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनां हे दरिसण चाहि, चाल्यो नृप वरु सनमुखें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्रीतमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वरुतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संजाल, नवली विधि नृप आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कांतें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसु नाखतो, पूछे सुतनें नूप ॥ लेखन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोत्त सार टांग्यो वरु, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तुज डुर्दशा, गयो सुद्धि हुं नूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल जीवित कला, प्रनुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अनुनवी, दोहिलिम डुःख समाज ॥ ३ ॥ इम कही तेड्यो दावी वरु शाल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इम आसास, पुत्र विछो
ही गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा
स, मन बींध्युं दुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो
होता हे निज निज थान, लोक जस्यां अचरिज चिंते
॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि
रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया बोल्यो हे तपतां दिस, रा
ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख
जगदिश, के जस वीते ते कले ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया
आया हे जन परजात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥
सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा
ल्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पजवा हे घाली
हांम, नृप राणी ऊंचां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सामें हे
जरीयां ताम, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥
॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वक
जालियें ॥ सुत पायो वकें ॥ प्रीया टांग्यो हे वागु
ली जेम, सहबल दीगे गोवालीये ॥ (कनालिये)
सु० ॥ १२ ॥ प्रीया बांध्यो हे जे लोजसार, चोर अ
धो मुख जिण वके ॥ सु० ॥ प्रीया जीम्यो हे जाल
मजार, तुम नंदन तिहां तरफके ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री
या जाण्यो हे नहीं परमार्थ, दीठुं तेहवुं जांखीयुं ॥

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ ॥ आगल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर बेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहमो आवी, आवोजी वरुनाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं वाधुंजी ॥ नं० ॥ उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥ मं० ॥ ६ ॥ मन उपगार धरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो बोली फरीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेंजी ॥ नं० ॥ हाथें खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, करतो कोरुी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारीजी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे ठे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां ठे वरुतरु भारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥ नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग ॥ क० ॥ ८ ॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र खरुग कर झाल्योजी ॥ नं० ॥ वनें रही जव भाल्योजी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर तलें विरले स्वर रोती, दीठी तिहां एक नारि ॥ व० ॥ ९ ॥ में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

काढे नृप करवाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीमित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली बेठो हूउ, बोलाव्यो तव साय ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ मारगकामां जोवुंजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें नांखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अजिलाषेंजी ॥ नं० ॥ किहां विचस्यो अम पाखें जी ॥ नं० ॥ वांध्यो किण वकसाखेंजी ॥ नं० ॥ कहे सुख दुःख तें किहां किहां लाधुं, करले हार विशुद्ध ॥ ॥ सा० ॥ क० ॥ कि० वां० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ नं० ॥ निरखे नयण ऊघालीजी ॥ नं० ॥ बेठी आगल मालीजी ॥ नं० ॥ पूंठें मलया लालीजी ॥ नं० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ निं० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न० ॥ गोख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हुं बेठो तस वांसें जी ॥ नं० ॥ ऊड्यो ते आकाशेंजी ॥ नं० ॥ इम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोइक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन बेसारीजी ॥ नं० ॥ तुम वहुअर निरधारीजी ॥ नं० ॥ आक्रंदने अनु

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ ॥ आ गल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर बेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहमो आवी, आवोजी वम्भाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं बाधुंजी ॥ नं० ॥ उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥ मं० ॥ ६ ॥ मन उपगार नरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो वोली फरीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेजी ॥ नं० ॥ हाथें खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, करतो कोमी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे वे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां वे वम्तरु नारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥ नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग ॥ क० ॥ ८ ॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र खम्ग कर झाल्योजी ॥ नं० ॥ उनें रही जब न्याल्यो जी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर तलें विरले स्वर रोती, दीठी तिहां एक नारि ॥ व० ॥ ९ ॥ में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

काढे नृप करवाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीमित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली बेठो हूर्ज, बोलाव्यो तव साय ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ सारगकामां जोवुंजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें नांखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अनिलाषेंजी ॥ नं० ॥ किहां विचस्यो अम पाखें जी ॥ नं० ॥ बांध्यो किण वकसाखेंजी ॥ नं० ॥ कहे सुख छुःख तें किहां किहां लाधुं, करले हार विशुद्ध ॥ ॥ सा० ॥ क० ॥ कि० बां० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ नं० ॥ निरखे नयण उघारीजी ॥ नं० ॥ बेठी आगल मारीजी ॥ नं० ॥ पूंछे मलया लारीजी ॥ नं० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ निं० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न० ॥ गोख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हुं बेठो तस वांसें जी ॥ नं० ॥ उड्यो ते आकाशेंजी ॥ नं० ॥ इम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन बेसारीजी ॥ नं० ॥ तुम वहुअर निरधारीजी ॥ नं० ॥ आक्रंदने अनु

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ ॥ आ
गल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी
॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो ईहोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर
वेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहसो आवी, आ
वोजी वरूनाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी
॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक
नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं बाधुंजी ॥ नं० ॥
उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥ मं०
॥ ६ ॥ मन उपगार न्नरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो बोली
फरीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेंजी ॥ नं० ॥ हाथें
खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, कर
तो कोमी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी
जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे बे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां बे
वरूतरु न्नारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥
नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ले आणो जई वेग
॥ क० ॥ ७ ॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र ख
ड्ग कर जाल्योजी ॥ नं० ॥ उत्तें रही जब न्नाल्यो
जी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर
तलें विरूले स्वर रोती, दीठी तिहां एक नारि ॥ व० ॥ ए ॥
में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

जी ॥ नं० ॥ एकाकी किम होवेजी ॥ नं० ॥ एह सा हमुं शुं जोवेजी ॥ नं० ॥ घन जीषम वननें शमशानें, बेठी तुं किण काम ॥ मैं० ॥ १० ॥ तव ते वदन उघाडी जी ॥ नं० ॥ जोती अबली आडीजी ॥ नं० ॥ मूकी लाज कमाडीजी ॥ नं० ॥ बोली इम पट काडीजी ॥ नं० ॥ शुं दुःख जाखुं हुं तुज आगें, जाग्य रहितमां लीह ॥ त० ॥ ११ ॥ बांध्यो जे वरु डालेंजी ॥ नं० ॥ शैल अलंब विचालेंजी ॥ नं० ॥ रहेतो कंदर नालेंजी ॥ नं० ॥ हरतो पुरधन आलेंजी ॥ नं० ॥ चोर पुरातन पाप दशाथी, ए आव्यो नृप हाथ ॥ बां० ॥ १२ ॥ लोज सार इणे नामेंजी ॥ नं० ॥ वीतक त्रीजे यामेंजी ॥ नं० ॥ संध्यायें विण मामेंजी ॥ नं० ॥ बांधी हणीउं गामेंजी ॥ नं० ॥ मुज प्रीतम ठे हुं धण एहनी, रोवुं बुं दुःख तेण ॥ लो० ॥ १३ ॥ नेह नवल मुज खटकेजी ॥ नं० ॥ चिंता चित्तमां चटकेजी ॥ नं० ॥ विरह अगनि जिम जट केजी ॥ नं० ॥ प्राण कंठमां अटकेजी ॥ नं० ॥ आज प्रजातें कर मेलावो, हुउं हतो एह साथ ॥ ने० ॥ १४ ॥ करवा चोरी निकस्योजी ॥ नं० ॥ गयो नेहनें तरस्योजी ॥ नं० ॥ मुज संगें नवि विलस्योजी ॥ नं० ॥ हवे विरहो मुज विकस्योजी ॥ नं० ॥ चंदन लिंपी

आलिंगन द्युं हुं, जो आपे तुज बुद्धि ॥ क० ॥ १५ ॥
में निसुणी तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा आ
णीजी ॥ नं० ॥ कह्युं आवो गुण खाणीजी ॥
नं० ॥ मुज खांधे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जा
णे तिम कर तुं एहनें, मेळ्यो में ए योग ॥ में० ॥ १६ ॥
धरणीथी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई मुझ गूं
दीजी ॥ नं० ॥ लेपे शवनी बूंदीजी ॥ नं० ॥ आलिं
गे दृग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिंगन करतां मृतकें, ली
धी नासा तोडि ॥ ध० ॥ १७ ॥ घणुं हुती अनुरागी
जी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ झरती
पाछी जागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं० ॥
॥ ताणे त्रुटी रह्यो शवमुखमां, नाक तणो अग्रभाग
॥ घ० ॥ १८ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आ
वी मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोप प्रकाशीजी
॥ नं० ॥ बोल्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ ह
से तुं इणे वक मुज ज्यौं, बंधाइश निशि काल ॥ जो०
॥ १९ ॥ वचन सुणी हुं झझक्योजी ॥ नं० ॥ शोक
महा ज्वर खमक्योजी ॥ नं० ॥ चिंताथी चित्त तमक्यो
जी ॥ नं० ॥ हृदयथकी जय धमक्योजी ॥ नं० ॥ दै
व प्रयोगें शव इम बोल्यो, हैहै करशुं केम ॥ व० ॥ २० ॥

नकटी करती तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधाथी उत
रेंजी ॥ नं० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥ नं० ॥ किए न
गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम थानादिक में ते आ
गें, नांख्युं सघलुं साच ॥ नं० ॥ २१ ॥ मुज ऊपर
विश्वासीजी ॥ नं० ॥ बोली ते उल्लासीजी ॥ नं० ॥
सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ नं० ॥ मुज नासा ऊजा
सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं ऊख्य गुफामां, देखा
डीश तुम आय ॥ मु० ॥ २२ ॥ इम कही ते घर
चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढीउं वड डालीजी ॥ नं० ॥
ठेड्यो चोर संजालीजी ॥ नं० ॥ नांख्यो नीचो जा
लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोउं तो तिण साखें, बांध्या
तिमहीज दीठ ॥ ई० ॥ २३ ॥ में जाण्यो ततकाला
जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ ढोडी
मन ढकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वड डाला
जी ॥ नं० ॥ बंधन ढोडी केश ग्रहीनें, ऊतरियो व
ली हेठ ॥ में० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं०
॥ अक्षत शब परसीधुंजी ॥ मं० ॥ जई योगीनें दीधुं
जी ॥ नं० ॥ इम पर कारज कीधुंजी ॥ नं० ॥ त्रीजे
खंडें ढाल ए ढही, कांतें कही रसरेल ॥ खं० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चम्क्या, भूपादिक जन भूर ॥ अद्भुत भय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥ वली विगत सहबल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चंदन रस चर्चित करी, थाप्युं मंडल ठाइ ॥ २ ॥ अग्निकुंड दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत न उछले, पडे न पावक कुंड ॥ खिन्न थयो जप ध्यानथी, साधक चिंता मंड ॥ ४ ॥ तेहवे शव गय णांगणें, भम्यो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिम द्विज जई, वडशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कांएक ध्यानमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रातें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज वलें साधन तणी, थाशें वहेली सिद्ध ॥ रहो सुभग योगी कहे, उपगरवानी बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक पास ॥ योगी करतो मुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशे काम ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोलो मुज चित्तमां रे, एहवो एक इण ठाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो देख

शे रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे
शे ओलख्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ २ ॥ प्रा
ण पियाणुं म्हारे रे, होशे अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥
तेमाटे तुम फेरवुं रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं० ॥ ३ ॥
जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेथ ॥
नं० ॥इम धारी मुखमां ठवी रे, कथन ग्रह्युं में तेथ ॥
नं० ॥ ४ ॥ ताम मूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिल
क मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रत्नावें हुं थयो रे, पन्नग
विष आवीध ॥ नं० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे,
आप गयो कोइ काम ॥ नं० ॥ पवन त्नखी सुखमां रहुं
रे, ठानो बिलने ठाम ॥ नं० ॥ ६ ॥ गिरिथल जोतां
गारुमी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें व
श करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ यक्ष त्नु
वनमां मूकीयो रे, कुंत्न करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम
आदेशें जे नरें रे, काढ्यो हुं विण खीज ॥ नं० ॥ ८
॥ तेहने तुरतज उलखी रे, काढी मुखथी हार ॥ नं०
॥ कंठें धस्यो तेहथी हुवो रे, ते नारी अवतार ॥ नं० ॥
॥ ए ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥
॥ नं० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, थइ तुम प्रत्यक्ष
त्नाग ॥ नं० ॥ १० ॥ त्नूप कहे ते किम हूउे रे, जो

तां नारी सांग ॥ नं० ॥ मह्बल भांखे तातने रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जातां नारी पाछलें रे, गुटिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, मुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं कर ग्रह्यो रे, धीज समय इणे बाल ॥ नं० ॥ भाल तिलक चाटयुं चढी रे, में एह्नुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३ ॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नृप प्रमुख सहु रीजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नृप कहे में आचस्युं रे, अणघटतुं प्रतिकूल ॥ नं० लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सरजित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, बेसारी उत्संग ॥ नं० ॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वरसे तें दुःख संग ॥ नं ॥ १६ ॥ अथवा तें जाएयुं कस्युं रे, वात न खाती पाक ॥ नं० ॥ विण अवसर जे भांखियें रे, न चढे तेह सिराक ॥ नं० ॥ १७ ॥ दुःखमां मौन धरी रही रे, नांखि न एका टोक ॥ नं० ॥ ए विरतंत कही जतो रे, मानत नहीं को लोक ॥ ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूडुं दैवें कस्युं हशे रे, पाम्यां दुःखनो पार ॥ नं० अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कुल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इम कहेती नृपनी प्रिया

रे, जे जीवितनी आथ ॥ नं० ॥ आभूषण मणि ते हसी रे, आपे भलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ त्रीजे खंडें सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥ नं० ॥ कांति कहे सुणतां सदारे, लहियें मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे, रहेतां शैल अलंब ॥ कारण शुं शुं अनुभव्यां, कहीयें ते अविलंब ॥ १ ॥ पवन नखत गिरि कंदरें, निर्गत हुउं दिनेश ॥ रजनी समय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनकर तरुना डुग्धथी, घस्युं भाल मुज तेण ॥ देखी मूल सरूप हग, बोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर कला निला, करीयें मंत्र विधान ॥ ईम कही पावक कुंरु तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें वरुथकी, आणी दीउं शब फेरि ॥ बेठो जपवा तेह तव, हुं पण बेठो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हरिहां सुज्ञानी साहेब मेरा बे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, आहूति द्ये अवसान ॥ तिम तिम शब ऊपमी पके, तफफतु रोष निदान ॥ हठीली योगिणी आई बे, अरिहां रीस नराई बे ॥ १ ॥

॥ ह० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां डमरू डाक ॥ वीर बावन आगें चलें, पाडंता पोढी हाक ॥ ह० ॥ २ ॥ अब्रथकी उद्भट उतरती, शक्ति कहे रे धीठ॥ सूतक अशुद्ध आणी किस्युं हुं, तेडी कां नूपीठ ॥ ह० ॥ ३ ॥ इम कहेती योगीनें साही, नाखे अगनिनें कुंड ॥ नागपाशने बंधनें भुज, बे कर बांध्या प्रचंड ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी ले कुण पाप ॥ इम कहेती नज्ञ मारगें, विहुं पग ग्रही जडी आप ॥ ह० ॥ ५ ॥ वे शाखा विच हुं पग जीडी, ऊंचा पग शिर हेठ ॥ टांगी भुजनें ए वडें, उडी गई लेती कुलेठ ॥ ह० ॥ ६ ॥ शब ते तिमहिज उडी तिहांथी, वलगुं गुंडाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं वली, तिहां पाठी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक कहे दीसे ठे बांधुं तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे मुखमां एहनें, नासा पल होशे कुशुद्ध ॥ ह० ॥ ८ ॥ लोक कहे इम कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥ दीठी वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास ॥ ह० ॥ ए ॥ ए में साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे इम खेद ॥ नूप कहे नवितव्यनां, मेटीजें केम नमेद ॥ ह० ॥ १० ॥ नूप कहे केम करथी बूट्या, बांध्या त्रि

षधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंबडुं, मुज मुखमां आ
व्युं उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ क्रोध जरी चाव्युं में तेहथी,
पीड्यो पन्नग जोर ॥ नर्म थई हेठो पड्यो, न चढयुं विष
मंत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काढ्या,
डुःखमां में विललात ॥ संकट सहु टलियां हवे, मलतां
कर्म योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कह्युं सुरशक्ति
मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तु
म आगल पूरी पक्ष ॥ ह० १४ ॥ लोक प्रशंसें शिर
धुणंतां, अहो हो अतुल बलवीर ॥ थोडा काल मांहें
घणी, जल सांसयो पीड शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वचन
पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संकट
जलराशिनो, तारु एक तुंहीज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥ अ
हो साहस निर्भय पण माया, बुद्धि महोद्यम खास ॥
उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह०
॥ १७ ॥ नारि लही लक्षण लाखीणी, मलियो अ
मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इम वर्णन गुणमति
जेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नृप कहे नंदन मंडप ते, देखाडो
ठे क्यांहिं ॥ कुमर नृपति जण विंटीउ, देखाडे जईने
त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मह्या उत्कर्षें, नि
रखे पावक कुंड ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीठो

जलहलतो दंरु ॥ ह० ॥ २० ॥ ठेद्यां पण निशिमां हें वाधे, शीश विना जस अंग ॥ पुरसो तेह कढावीनें, जंभार धस्यो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग जस्यो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंरुनी आठमी ढालें, जांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी, लहियें मनवंछित जोग ॥ ह० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोधतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी ठाण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रकाशी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ जगिनीपति जगिनी बिहुं, मेलवियां नृप तेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित बेठां ठाण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरित्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिज्ज ॥ नवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र जरिज्ज ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्षण केलि ॥ जुख तृषा निद्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मज्जण जोजन वस्त्रथी, सत्कास्यो नृपनंद ॥ बांध्यो बेहेंनी नेहनो, रहे तिहां स्वछंद ॥ ६ ॥ केताइक दि

न-त्यां रही, मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव वा, करे प्रयाणुं देश ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ घरे आवोजी आंबो मोरीठ ॥ ए देशी॥

॥ मलय कुमरने नृप कहे, संप्रेरुण मन न वहंत ॥ गुणवंताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व धामणी, पछ धारो पुरि मलिवंत ॥ गु० ॥ १ ॥ प्रीति लता सिंची रसे, पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफल हूई तुम आवतां, पोता वट राखी अछेह ॥ गु० ॥ २ ॥ वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोडि प्रणाम ॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान ॥ गु० ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्यें, पोहोतो आ पूछण काज ॥ देखी दंपती ऊठियां, बोलावे वचनें स लाज ॥ गु० ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे जो जई कोडि सलाम ॥ चोर थयो हुं रावलो, खम जो ते गुनह प्रकाम ॥ गु० ॥ ५ ॥ विण शीखें तुम नंदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्युं दुःख आकरुं, ते करज्यो मांई वात विलीन ॥ गु० ॥ ६ ॥ मल य नगी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ वी नवशो माय तातनें, मुज आगमनादि प्रकार ॥ गु० ॥ ॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता छे

आंहिं ॥ चतुर तुमें पण चालतां, सावधान रहेजो रा हिं ॥ गु० ॥ ७ ॥ वचन सहुनां चित्त धरी, गलगल तो थाय विदाय ॥ जपपुर लगें आरुंबरें. महिपति पोहोंचावा जाय ॥ गु० ॥ ए ॥ केटले दिन चंड्रावती, पो होंच्यो कहे सकल वृत्तांत ॥ खबर लही माता पिता, पामे तिहां हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ १० ॥ महबल मलया संगमें, विलसंते निवहे काल ॥ एक समय बेठा वि न्हे, उंचा मंदिरनें जाल ॥ गु० ॥ ११ ॥ नाक विहु णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी ने कहे, एक परयतहरनी नारि ॥ गु० ॥ १२ ॥ घिर सीटें तव उलखी, प्रमदायें ते उपमात ॥ प्रीतम क नकवती इहां, दीसे ठे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १३ ॥ गुह्य न कहेशे लाजती, जो उलखशे मुज देख ॥ ते हथी हुं पम्दे रहुं, पूठो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १४ ॥ इंम कहेती भुवणांतरें, बेठी जइ सुणवा विगत्त ॥ क नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणीपत्त ॥ गु० ॥ १५ ॥ आदर घे पूठ्या थकी, कहेशे इहां आप चरित्त ॥ नवमी त्रीजा खंमनी, कांते कही ढाल पवित्त ॥ गु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पत्नणे सा चंड्रावती, नगरीपति उदास ॥ वीरध

वल तस हुं प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हुं
रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि
देशी सुजाने, तरुणो एक ठयल्ल ॥ तस संकेत सुरि
गृहें, मली राति हुं हल्ल ॥ ३ ॥ देखाडी नय चोरनो,
वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुत्तावलीनें कंचुकी, आप हत्थु
तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठं यंत्र जटकांहिं ॥
॥ ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोडी ॥
बिहुं उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ
वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अछेह ॥ गुहिर
नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
उलखे, जो उन्ना होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
किश्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निक्कारण वैरी इस्या, गया
करी करतूत ॥ ९ ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित
खेल ॥ शीश धूणंतो आगलें, पूछे कथा उकेल ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ बेडले भार घणो छे
राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

यक्ष धनंजय जवन समीपें, गोला कंठें गाली ॥ १ ॥ साची वात कहुं ठां राज, जे वीती ठे अममां ॥ तिलज र जूठ कहुं नहीं मोहन, मलताना संगममां ॥ साची० ॥ ए आंकणी ॥ लोजसार चोरें जलमांथी, काढी नार गरिठी ॥ ताह्नुं जांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज ठाने ॥ ड्व्य सहित मंदिर पोतानुं, देखाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें मीजी मुज जीजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पाप दिशाथी जूपें साही, सांजे वकले बांध्यो ॥ पर्वत शिखर रही में जोतां, मोहन त्रिभुवन सांध्यो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रूती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो ठो, ए वीत्युं ठे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो ड्व्य घणुं देखाडुं, इम सुणी महाबल ऊठे ॥ कह्युं तातने तात कुमरशुं, चाल्यो त्यां तस पूठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संजाली ॥ शेष ड्व्य लेइ नरपति नगरें, आव्यो पाठो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

पुंज सहित मलया त्यां, देखी बेठी पासें ॥ सा० ॥ ए ॥
चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवंती ॥ कू
पथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुंती ॥
॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नाहिं पूछी, रही
वदन निरखंती ॥ रखें चरित्र मुज चावां पारु, मन
मां इम बीहंती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मनो
हर म्हारो, लीधो तो जिण धूतें ॥ ए पापणीने आ
णी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणुं न
हीं के लीधो इहुंणे, खेळी नवलो फंदो ॥ हवणां तो ए
हिज मुज वैरी, कीधो इम दिल मंदो ॥ सा० ॥ १३ ॥
कहे मलया माता ग्रो रूमां, एकाकी किम आव्यां ॥ कुश
ल न दीसे नाक जणी कां, के किणे कसें सताव्यां ॥
॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर जणे पद्मिणी मत पूछो, क
हेशुं हुं तुम आगें ॥ दिन न खमे कारज छे बहुलां, क
हेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें
आप्यो, शूने मंदिर पासें ॥ मुख मीठी हियकासां धी
ठी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिव
सें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विशवा
सिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥ सा० ॥
॥ १७ ॥ छिद्र निहाले मलया केरां, शोक समी निश

पुंज सहित मलया त्यां, देखी बेठी पासें ॥ सा० ॥ ए ॥ चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवंती ॥ कूपथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुंती ॥ ॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नाहिं पूछी, रही वदन निरखंती ॥ रखे चरित्र मुज चावां पाडे, मन मां इम बीहंती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मनोहर म्हारो, लीधो तो जिण धूतें ॥ ए पापणीने आणी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणुं नहीं के लीधो इहुंणे, खेली नवलो फंदो ॥ हवणां तो एहिज मुज वैरी, कीधो इम दिल मंदो ॥ सा० ॥ १३ ॥ कहे मलया माता छो रूडां, एकाकी किम आव्यां ॥ कुशल न दीसे नाक तणी कां, के किणे कमें सताव्यां ॥ ॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर तणे पदमिणी मत पूछो, कहेशुं हुं तुम आगें ॥ दिन न खमे कारज छे बहुलां, कहेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें आप्यो, शूने मंदिर पासें ॥ मुख मीठी हियडामां धीठी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिवसें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विशवासिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥ सा० ॥ ॥ १७ ॥ छिद्र निहाले मलया केरां, शोक समी निश

दीस ॥ सुख जोगवतां मलया एहवे, धरे गर्भ सुजगीश ॥ सा० ॥ १७ ॥ ऊपजतां डोहोला पीउ हेजें, पूरे नव नव जातें ॥ प्रसव समय आसन्न हूउं तव, दीपे राणी गातें ॥ सा० ॥ १ए ॥ त्रीजे खंडें चावी दशमी, ढाल महारस पूरी ॥ जांखी कांतिविजय बुध नेहें, निरुपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

इण अवसर महवल प्रत्यें, दीये तात आदेश ॥ वत्स विकट जट साजसुं, करो चढाई वेस ॥ १ ॥ नामें क्रूर सज्यो गढें, पल्लीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देशमां, ते निर्द्धाटो दूर ॥ २ ॥ सना समकें दक ते, तात वचन परमाण ॥ मलयानें पूछण जणी, गयो जुवन गुणखाण ॥ ३ ॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश पीयु साथ ॥ दूर रहीने किम चकुं, विषम विरहने हाथ ॥ ४ ॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चित्त ॥ लालचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत्त ॥ ५ ॥ जाणे तुं गुण एहना, करजे खरां यतन्न ॥ ते आपी पजणें वली, महबल विरह विखिन्न ॥ ६ ॥ पदमिणी तो पांखे हिये, आवे विरह जरेय ॥ गएया दिवसमां ते जणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७ ॥ ताल वचन जो

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीठ अनुज्ञा सुंदरी, जिम साधुं जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती, नाखे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली एम उदास ॥ ए॥ लेइ अनुमति ऊणे मनें, बांधी तरकस वेग ॥ पाठी मींटें निरखतो, चल्यो जवनथी वेग ॥ १०॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट महा विषवेलि ॥ अहनिशि जोवे रे ठल मलया तणुं ॥ अनुयी बेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह निं० ॥ १ ॥ एकलमी जवनें रही रे धीठी, मुज नागे ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम ठल केलवी रे धीठी आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेठी मुख करमवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली ऊरते लोयणां ॥ बेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे कुः धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवी धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रंगमां रे गोरी, कनकाइुं रसमाणि ॥ नवनव नांतें रे करती खेलणां ॥ ४ ॥ कहे मलया माता इहां रे नोली,

लणां ॥ पयमां साकर जेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूंठें
एक राकसी रे गोरी, लागी ठे कम जात ॥ नव नव
वांतें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी जर रातमां
रे गोरी, काढी छूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं ठाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन जोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव इम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
गुलावती रे गोरी, जे शीखववुं तुज ॥ तव० ॥
दया करी मुज ऊपरें रे जोली, करो उचित जे
॥ ज ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नव०॥
जूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे इम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी ठे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो द्यो जीवित दान

॥ रह० ॥ ११ ॥ अजय हजो कहे राजीयो रे गोली, कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो लणां ॥ जगमांहे तेहिज वालहा रे गोली, देखाडे जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राक्षसी रे सामी, तुम वहूअर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज वचनें नवि वीससो रे सामी, तो देखाडुं तंत ॥ रह० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगला रे सामी, जो जो आ ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राक्षसी रे सामी, साधे राक्षस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अंगणमां नाचे हसे रे सामी, रमे जमे वलगंत ॥ नव० ॥ दिसिदि सि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्युं रटंत ॥ नव० ॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी ऊछले रे सामी, पुरमां मरगी क ष्ट ॥ ग्रहशो जो जाई निशें रे सामी, करशे कांई अ निष्ट ॥ नव० ॥ १६ ॥ प्रातसमय सुजटो कन्हें रे सा मी, करजो एहनें बंध ॥ जिम तुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ पहेलां पण नृपजें हतो रे सामी, पूरवो कष्ट निबंध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी सुण्युं रे सामी, कारण ए असराल ॥ नव० ॥ तेहथी मन मेलुं थयुं रे सामी, चित्त चक्यो भूपाल ॥ नृपति विचारें रे करतो चोलणां ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल लोकमां रे

सामी, थाशे हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे जोली, लागजो विषहर फंक ॥ नृपं० ॥ ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशे रे जोली, बाहिर न जां खे वात ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ एव ऊघाडुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रह० ॥ २० ॥ सतकारी नृपें तिका रे धीठी, पोहोती जुवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री जे खंडें इग्यारमी रे मीठी, कांतें कही ए ढाल ॥ नव नव जांतें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्सनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा चर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई बाहिर गई, कूड चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारें अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ अहे उसाकी वदनमां, वलवलती वे पीर ॥ ४ ॥ रुंडमाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्त रूपें राक्सी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवे

ठाने रातिमां, आव्यो जोवा नृप ॥ अपर समीप गृ
हें चढ्यो, निरखे दुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी लुंबे झुंबे वर
सालो मेह, लशकर आयो दरिया
पारसे हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही
होलाल ॥ होजी दीसे छे ते साच, जे मुजनें कनका
यें कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम,
कुलने दुर्यश ए किस्युं होलाल ॥ होजी एहथी नहीं
जाण खेम, मुजने पण विरुउं किस्युं होलाल ॥ २ ॥
होजी करवी न पडे कचाट, पहेली जो समजावीयें
होलाल ॥ होजी तेह जणी वनमांहिं, एहने हवणां
हणावीयें होलाल ॥ ३ ॥ होजी इम कहेतो नरनाथ,
कोपानलशुं परजल्यो होलाल ॥ होजी तेसी सेवक
साथ, गुप्त पणें जणे जांजल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी
मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होला
ल ॥ होजी रथ चाढी वन छेह, गुपत पणे हणजो
परी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करतां रातें काम, लोक
न जाणे वातमी होलाल ॥ होजी इम सुणी सुजट उ
द्दाम, उठ्या लीधी गातमी होलाल ॥ ६ ॥ होजी कर

दीधें करवाल, आवत सुन्नट निहालीनें होलाल ॥
होजी जिहां छे मलया बाल, कनका त्यां गई चाली
नें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल
फलती बोले इस्युं होलाल ॥ होजी नृप न्नट हणवा
मुज, आवे छे करवुं किस्युं होलाल ॥ ८ ॥ होजी तुज
पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल॥ होजी
ते माटे महाराज, मुज ऊपर रूठा सही होलाल ॥ ए॥
होजी क्यांहिक मुजने छिपारु, जणनी मींट न ज्यां प
रु होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गारु, हाथ रखे
कोइनो अरु होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश,
पेठी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश,
बेसे मांहे एकंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज
तालुं दीध, अन्नय करी राखी तिका होलाल॥ होजी
आव्या सुन्नट प्रसिरु, करता रगत कनी निका होलाल
॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, बेठी रूप स्वन्नाव
नें होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, बदल्यो सांग
ऊटा किनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी छु
ठ, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी लो
कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल ॥ १४ ॥ होजी
इम कहीनें ग्रही बांहिं, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राह, श्वापद जिहां वांका वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इठ, देखी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अनिठ, इण सूलें माहारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी हणवुं के वनवास, सुसरें निश्चय आदिस्यो होलाल ॥ होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाण्यो देख्यो किस्यो होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित हुआं फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो माठा मर्म, बनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधां आपणां होलाल ॥ होजी दारुण कर्म अतीव, छूटे नहीं चाख्या विनां होलाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संभारि, जाणती नियति निहालिनें होलाल॥ होजी मूकी वन संचार, आघुं पाछुं भालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी ठानो ऊनरू पाहारू, विषम थलीमांहे धरी होलाल ॥ होजी अहसमे भीम भिराड, आव्या जण नगरें फरी होलाल ॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, नृपति महीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित ते नारि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल॥ होजी दीठी

नहि किण वार, नूप जाणे नाठी खरी होलाल ॥ २३ ॥ होजी त्रीजे खंमें रसाल, ढाल कही ए बारमी होला ल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जीती तेह किरात ॥ तात चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया जवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक चरित्र त्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कुमर निसासो नाखतो, बे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंठ मन, करे एम उल्लाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ नूपतिजी कांई कीधुं हो फुःख दीधुं मलया बालने, हाहा नूलो कांहीं ॥ चित्तमां कां न विचास्यो हो नवि धास्यो अवसर आपशुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं ॥ नू० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ जाला ज्युं चित्त खटके हो अति जटके अग्निसमा थइ, काम कस्यां विण मर्म ॥ नू० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो बल जारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जोव

रावो किहां दीसे हो पूछी शें कारण मूलथी, एहनां एह कुसूल ॥ नृ० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ नृ० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुजं प्रमदा प्रत्यें, साचुं सहि नरनाथ ॥ नृ० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लंछन चाढीउं, गोत्र ज मूक्युं एण ॥ उलंभा इम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मंदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ नृ० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूंठें हो नृप उठी आवे इमणो, उघारे घर ताल ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज ईठी दयिता राक्षसी, रूपें करती चाल ॥ नृ० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें दंरू ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, बांहमली करी खंरू ॥ नृ० ॥ ८ ॥ कुमलाणा कां मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संजालो घर सार ॥ अधमयकी जण हासो हो घर आथ विणासो जाणीयें, उंबा न सहे जार ॥ नृ० ॥ ए ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणानें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जइ वागो जिहां संजूषकी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी डुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मय कारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंज ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंज ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची वाहेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भंछी हो जणह थीकारें इहवी, काढी देशा ठेह ॥ नृ० ॥१४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीउं, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैहै मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो डुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संज्रमें,

फूंकि फूंकि जोलां खाय ॥ नू० ॥ १६ ॥ त्रीजे खं कें फावी हो रस नावी वग आवी नली, तातो तेर मी ढाल ॥ कांति कहे सांजलजो हो चित्त कलजो कविला चातुरी, श्रोता थई उजमाल ॥ नू० १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर अष्टांगवी, पुस्तक हस्त धरेय ॥ आव्यो एक निमित्तिउं, मह्बल पास धसेय ॥ १ ॥ स्वस्ति व चन मुख उच्चरें, नुज करी आघो सोय ॥ सचिवादि क तेहनें नमी, द्ये सत्कार सकोय ॥ २ ॥ नृप नि देशें आसने, बेठो नूपासन्न ॥ पेखी पुरातन पारखुं, खोले शास्त्र रतन्न ॥ ३ ॥ नक्ति युक्तिशुं मंत्रवी, पू छे करी कर कोश ॥ उपकारी नैमित्तिया, जूउं एक अम जोश ॥ ४ ॥ अकलंकित इण इणी परें, कुमर वधू सुगुणाल ॥ अम करथी तिम उतरी, जिम ढा लें परनाल ॥ ५ ॥ ता दुःखें महीपति हूउं, मरणो न्मुख सकुटुंब ॥ अशन वसन रस परिहर्यां, न सहे प्राण विलंब ॥ ६ ॥ तेह नणी कहो अम तणे, ना ग्यें नाग्य विशाल ॥ मलया मलशे जीवती, पन्नणो तेहनी नाल ॥ ७ ॥ जोशीनें साहमे मुखें, बेसी विनय प्रकाश ॥ नूपति बोल्यो तत क्षणें, वारुवचन विलास ॥ ८ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ जोशीयका रे नगर सीरोहीयो राय रे हो रसीया ॥ ए देशी ॥

॥ जोशीयका रे, लगन निहाली जोय रे हो सुगुणा, कहेने गुणवंती मलशे क्यां वली हो सु० ॥ जो० ॥ क्षण खटमासी होय रे हो सु० ॥ मलया दरिसणनो सुत कौतूहली हो सु० ॥ १ ॥ जो० ॥ कहत म लावे वार रे हो सु० ॥ सुत मत थावे दुःखके व्याकुली हो सु० ॥ जो० ॥ आतुर न सहे धीर रे हो सु० ॥ जगमां जिम न खमे पाणी पातली हो सु० ॥ २ ॥ जो० ॥ चित्तमांहे निरधार रे हो सु० ॥ लखिने लघु हाथें लगन लह्यो वही हो सु० ॥ जो० मलशे मलया नारि रे हो सु० ॥ अबला जीवती वरषांतें सही हो सु० ॥ ३ ॥ जो० ॥ कुमर सुणे तस वाणी रे हो सु० ॥ मीठकी जीवाकण सरस सुधा समी हो सु० ॥ जो० ॥ अवलंबे निज प्राण रे हो सु० ॥ काने पीयंतो कांई न करे कमी हो सु० ॥ ४ ॥ जो० ॥ पूछे कुमर जदंत रे हो सु० ॥ कहोने जीवंती किहां छे गोरकी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ जोशी तव पभणंत रे हो सु० ॥ सांभल सलूणा जे कहुं वातकी हो सु० ॥ ५ ॥ जो० ॥ जाणी न जाये क्यांहिं रे हो सु० ॥ निवसे वनमांहिं के पुरमां वली हो

नांख्युं आल रे हो सु० ॥ नयथी तुम आगें कही अ
छती छती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नाठी मुजथी जे
ह रे हो सु० ॥ सुहरूं ते करुणा रूमे संग्रही हो सु० ॥
॥ जो० ॥ विणठी मुज मति छेह रे हो सु० ॥ त्राठी ने
पेठी नरू हीयरूं वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ
प निंदे इम आप रे हो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन
देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रे हो
सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥
॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रे हो सु० ॥ मलियुं ते
साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो बाला र
यण रे हो सु० ॥ पहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी
हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंरूं ढाल रे हो सु० ॥
सुपरें ए नांखी रूमी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति
वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागें सरस सुधा
समी हो सु० ॥ १६ ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ कुमर नणे मलया तणा, जनक नणी अवदात ॥ क
हेवा चर चंद्रावती, पूरियें प्रेषो तात ॥ १ ॥ वीरधवल
पण आगमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो
पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

सु० ॥ जो० ॥ सुखिणी दुःखिणी थायें रे हो सु० ॥ वींटी परिवारके किंहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरपति तेड्या तेह रे हो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सुजटे मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय बीको सस नेह रे हो सु० ॥ आपीने पूछे मलया आशरी हो सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रे हो सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां ठवी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ ते कहे सा नय नीतरे हो सु० ॥ रोतीने मूकी विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवां चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन जाण्युं एहनें राक्षसी हो सु० ॥ जो० ॥ नृपति मन निर्विन्न रे हो सु० ॥ कुणही व्यामोह्यो खेलें साहसी हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुंण लेशे हत्या गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप रे हो सु० ॥ करणी ए नहीं छे रूमा लाजनी हो सु० ॥ ॥ १० ॥ जो० ॥ खांति गिरितटें ठेव रे हो सु० ॥ पमती आखमती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो० ॥ एकलमी स्वयमेव रे हो सु० ॥ मरशे रमवमती रखमती आफली हो सु० ॥ ११ ॥ जो० ॥ इम मन धारी बाल रे हो सु० ॥ रोती वनमांहें मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आवी

जांख्युं आल रे हो सु० ॥ जयथी तुम आगें कही अ
ठती ठती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नाठी मुजथी जे
ह रे हो सु० ॥ सुहणे ते करुणा रूणे संग्रही हो सु० ॥
॥ जो० ॥ तिणठी मुज मति ठेह रे हो सु० ॥ त्राठी ते
पेठी जरू हीयमें वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ
प निंदे इम आप रे हो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन
देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रे हो
सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥
॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रे हो सु० ॥ मलियुं ते
साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो वाला र
यण रे हो सु० ॥ पहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी
हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंमें ढाल रे हो सु० ॥
सुपरें ए जांखी रूमी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति
वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागें सरस सुधा
समी हो सु० ॥ १६ ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ कुमर जणे मलया तणा, जनक जणी अवदात ॥ क
हेवा चर चंद्रावती, पूरियें प्रेषो तात ॥ १ ॥ वीरधवल
पण आगमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो
पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

हीर फिरती आथरूती, किण कर चढशे रूती हे ॥
॥ स० ॥ के कोइ निर्दय श्वापदसाथें, कीधी हशे नि
ज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें जय जंगुर म
हिला, सहेती संकट डुहिलां हे ॥ स० ॥ यूथ टली
नहरणी सरखी, मरशे जूखी तरसी हे ॥ स० ॥
। ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीयकें में वारी
हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी डुःखमांहे नाखी, दीन वद
न हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ए ॥ गोरी तणो विरहो व
धाटें, करवत थईनें काटे हे ॥ स० ॥ मुज हीअडुं पत्र
थी काचुं, इणी वेला नवि फाटुं हे ॥ स० ॥ए ॥ सुकु
मालणी तुं चतुर चकोरी, द्ये दरिसण गुण गोरी हे ॥ स० ॥
॥ विबोहो अलवें जारी, न करो प्रीत ठगोरी हे ॥ स० ॥
सु १० ॥ संजारी इम गुण संदोहो, विलवे कुमर स
क हो हे ॥ स० ॥ अणीआलां जालां ज्यौं खटके, हि
॥ विरहो जटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पीता स
जावे लेखें, सुतनें वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण
सुत अरति पड्यो नवि समजे, विषम विरहमां अलजें
हे ॥ स० ॥ १२ ॥ वचन निमित्त तणुं चित्त धारी, कुमर
निरखण नारी हे ॥ स० ॥ ग्रही खड्ग बानो जली जांतें,
निकल्यो माझिम रातें हे ॥ स० ॥ १३ ॥ हूर्ज प्रजात त

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥ स० ॥ कुमर गयो जोवा दयिताने, इंम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥ १४ ॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पालो कि म वहेशे हे ॥ स० ॥ भूमि शयन करशे किम बालो, नंदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहि त सुत मुखकुं जोस्यां, तहीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ ॥ स० ॥ मात पिता इंम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ भूख गई सुख निद्रा था की, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर क रत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥ १७ ॥ श्री पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे ॥ स०॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंड वखाण्यो, मलय चरित्र थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इंम भां खी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुंद रीचरित्रे पंडित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुरकुलसमागमनामा तृतीयः खंडः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचतुर्थखंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनलता, वान वधारण मेह ॥ जिन सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सुणतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोमि ॥ कहेतां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोमि ॥ २ ॥ मलय कथा उचितारथा, करे व्यथानो बेह ॥ कथ विचें विकथान्यथा, वृथा यथा ससतेह ॥ ३ ॥ त्रीजो खंम कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंम ॥ उबाहें आदर करी, कहेशुं चोथो खंम ॥ ४ ॥ हवे महाबल बालही, मूकी निशि वन गेर ॥ कर्ण कठिन श्वापद तणा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती मरती हिये, करती आंसू नयण ॥ आरमती पमती कहे, विरहालां इम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी पाणीमां गइती तलाव हे, हे मारुमे मेहेवासी मेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, सुसरे न पूछ्यो मुज को वंक हे, हे कोपेंनें कलकलियो राणो मोपरें हे

॥ अझमां० ॥ ठवीनें कूडुं काइ कलंक हे, हे ठानेशुं अपमानें काढी बाहिरें हे ॥ १ ॥ अ० ॥ अटवी ए विषमी दंझाकार हे, हे हियझुं थरकावे नयणें देखतां हे ॥ अ० ॥ सिंहना इहां बहुला संचार हे, हे शूरानें झझकावे विरुआ पेखतां हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुहरी गूंजे गोहा ठेली हे, हे चित्तानें वनकुत्ता चोटे दोटथुं हे ॥ अ० ॥ हलके गवरिया टोला टोलि हे, हे खेलंता आफलता नाखर कोटथुं हे ॥ ३ ॥ अ० ॥ सकलके सूअरनां मातां यूथ हे, हे तांतां हवें ठजातां थाता आकुलां हे ॥ अ० ॥ वढता उछलता मांझे झुझ हे, हे रोषाला दाढाला वाघ महाबला हे ॥ ४ ॥ ॥ अ० ॥ धमके सींगाला झरता फाल हे, हे शंबरिया अंबरिया लगें अति कूदणा हे ॥ अ० ॥ रखझे कूकंता पोढा स्याल हे, हे रोमालां हठवालां रींछ फरे घणां हे ॥ ५ ॥ अ० ॥ खझता दझवझता दोझे रोझ हे, हे हींझे ते विण ठींझे पीझे मारका हे ॥ अ० ॥ दीपझ करता झदली सोजा हे, हे टीबरीया गुंबरीया मारकपारका हे ॥ ६ ॥ अ० ॥ वलगे घुररंताके स्याहघोष हे, हे पेंझामें मद बेंझा गेंझा आयझे हे ॥ अ० ॥ चमके चीत्तल झलिया रोष हे, हे जाझा वन पाझा आझा आरझे हे

॥ ७ ॥ अ० ॥ ळळले हुंकळती नाहरकोडि हे, हे डुंकडि यां वांकडियां दखवडियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती खेले गेलें जरखां जोडि हे, हे उघडता चळचळता झृ तळपा लीये हे ॥ ८ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मु ख फाडी हे, हे ससळा ते सळसळता तरु मूलें लुकें हे ॥ अ० ॥ सहके सुरहा मशक बिलाड हे, हे बिंजू ता अति खीजू मदमाता डुके हे ॥ ए ॥ अ० ॥ खसके खोचालो खांतें नीळ हे, हे हूके ठळ नवि चूके मांकड वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें विषधरनी अडखीळ हे, हे फुंकीनें परजाळे जाळां झींगरां हे ॥ १० ॥ अ० ॥ अ डके चमरी वांसांजाळ हे, हे वेडुने वळी सावज झूझें रोषमां हे ॥ अ० ॥ खडके नडके विहगा माळ हे, हे खच्चरिया ठळ नरिया दोडे सूसमां हे ॥ ११ ॥ अ० ॥ अरडे उन्नाला आरण भंट हे, हे दाढाला सुंढाला शर न घणा उमेहे ॥ अ० ॥ रडवडे रोहि बोहिड बूट हे, हे गोकरुणा कंदलिया भिलि बेसे खूके हे ॥ १२ ॥ ॥ अ० ॥ घुरले घूघडा मांझी घोर हे, हे नडहडतां ह डहडतां नूत घणां नमे हे ॥ अ० ॥ चरडा चोरा करता जोर हे, हे धाडानें लेई आवे आडा मागमें हे ॥ १३ ॥ ॥ अ० ॥ एहवा नीषण वनमां मुज हे, हे निर्दय नृप

ना सेवक मेली ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग
ल दुःख गुज्ज हे, हे विण अपराधें नृप धीठ थया हे
॥ १४ ॥ अ० ॥ जाउं इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे
पीयरकुंनें अलगुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पड्यां
दुःखथी साही हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ
हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानी शुं पलटी बु
द्धि हे, हे पछतावो हवे थाशे एहथी आगली हे ॥
॥ अ० ॥ पीजके लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमे
किम दाहाडा मो पाखें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
कां हुं न मुई कांई हे, हे दुःखडामां नवि पडती इणवेला
इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे मलवुं गोरी त्यांहिं हे, हे सं
जारे चित्त धारे श्लोक जणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥
अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे बालायें त्यां सुत प्रस
व्यो जलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
अवतरीयो सुरवरीयो पुण्यें ऊजलो हे ॥ १८ ॥ अ०॥ सु
तनें खोले ठविनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सूति
क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पत्नणे पुत्र वधावुं कांई हे,
पापिणी हुं इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १ए ॥ अ० ॥
सुतनुं मुखडुं जोती मात हे, हे हरखें ने तिम थरके
वन देखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परजा

त हे, हे ऊठीने नावाने नदीयें उतरी हे ॥ २० ॥ ॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन थईने बेठी बाला कांठमे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अ रिहंत नाम हे, हे संतोषे निज आतम वनफल मीठमे हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ठानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे हीयमले हेजाले लालें गह गही हे ॥ अ० ॥ चोथा खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें इम नलि नातें पन्नणी ऊमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे, सारथपति बलसार ॥ आवी नदीयें ऊतस्यो, वींट्यो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल बनातां पाथरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा महकता, कारुजणें जलठाण ॥ २ ॥ जल तृण इंधण कारणें, पसस्या जन वनमांहीं ॥ सारथपति पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन कुंजमां, पोहोतो मलया ठाम ॥ रुदन सुणी बालक तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आबू मन लागुं ॥ ए देशी ॥
॥ सारथपति पूछे हसी, एकलमी कुण आंहीं रे ॥ गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संभव अत्यें, कहे आकृति तुज प्राहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपह री, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पु त्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥ वनमांहिं बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥ ॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं बलसार रे ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर द्वीपें व्यापार रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ भलुं कस्युं जगदीश्वरे, मेलवतां तुं आज रे ॥ गो० ॥ मुज घरे आवो वही, मूकी मननी लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए न र चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें, करशे शील विभंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूमो उत्तर वा लतां, रहेशे शील अखंक रे ॥ गो० ॥ इम धारी बों ली त्रिया, सुण गुणरयण करंक रे ॥ गो० ॥ ७ ॥ तनुजा हुं चंमालनी, कलहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥ आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥ ॥ गो० ॥ ८ ॥ मेल मले किम ते घटे, जिम दिन

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे सघला लोग रे ॥ गो० ॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो तुमें, नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियां मुज मा बापनें, मलशुं जई इण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ कारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥ कपट पणें उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥ ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चिंतवी, बोल्यो वचन विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कदे, नहीं चाखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें मानिनी, स्वेछायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ इम कहेतो ऊमपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥ ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका ल रे॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंमन जयथकी, ते थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पूंठें चली, नंद न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ हरख वचन बोलावतो, बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोप वी, पेठो जई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर ती ठानें ठवी, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी एक प्रियंवदा, थापी करण संजाल रे ॥ गो० ॥ १७ ॥

अंबर भूषण भोजनां, आपें दाखी प्रीति रे ॥ गो० ॥
भांखे नहिं करूवुं मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥ गो० ॥
॥ १८ ॥ नाम पूछाव्युं अन्यदा, बलसारें करी शान रे
॥ गो० ॥ हलुयें सा कहे माहरूं, मलयसुंदरी अभि
धान रे ॥ गो० ॥ १९ ॥ व्यवहारी इम चिंतवे, मम कहे
ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीउं,
कुल एहनुं सुपवित्र रे ॥ गो० ॥ २० ॥ चाल्यो तिहां
थी वाणीयो, करतो पंथें मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि
तिलक पुर आपणें, पोहोतो कुशलें ताम रे ॥ गो० ॥ २१ ॥
पुत्र सहित छानी गृहें, राखी महिला तेम रे ॥ गो० ॥
दासी एक विना कहे, जाणी न पडे जेम रे ॥ गो० ॥
॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर इम पभणं
त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, आदर तुं गुण
वंत रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज संपदनी सामिनी, था
तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो,
रहेशुं आणाकार रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ पुत्र नाहिं को मा
हरे, ते छसें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय
मालिका, वधशे इम घरसूत्र रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ व
चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुद्ध रे ॥ गो० ॥
कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरुद्ध रे ॥ गो० ॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पमजो पण ए पिंरू रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम ऊजलुं, रहेजो शील अखंरू रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वार्यो बहुल प्रकारथी, नाख्यो वचन निठेरू रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो बापमो, न करे वलती जेरू रे ॥ गो० ॥ २८ ॥ रोषारुण घर बारणें, ध्ये तालक सुत लेय रे ॥ गो० ॥ प्रियसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥ ॥ २९ ॥ कहे सुंदरी ए पामीउं, बालक वनिका मांहि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नस्यो, रह्यो लक्षण अवगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यभिचारिणी को मारीयें, नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥ बीजी चोथा खंमनी, कांतें पन्नरमी ढाल रे ॥ गो० ॥ ३३॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रवल जिहाज ॥ पर द्वीपें चालण तणा, करे सजाइ काज ॥ १ ॥ देइ शीखामण नारिनें, पूछी स्वजन कुटुंब ॥ ठानी मलया जोरथी,

लेइ चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ साजित पूर्व जहाजमां, जई बेठो शुभ संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीधां नांगर खंच ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ईडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूर्‌यो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जलनिधिमां जल मारगें रे, वहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धसकीनें चाले बावर कूल ॥ हवे करशुं केहो सूल ॥ ध० ॥ इम चिंते सा सुधि भूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वेचशे रे, के देशे बूभाकी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गालि॥ध०॥२॥हूंणी इहां होजो हवे रे, पण मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयुं रे, जिम रोगी क्षय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिवन मृत सम ते त्रिया रे, गलगलती गलनाल ॥ पूछे प्रवहण नाथनें रे, वहेती आंसु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुं कीधो मुज नंदनो रे, कहे सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवुं रे, जो करे मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पक्षियो निरखी आपमां रे, वाघ नदीनो न्याय ॥ राखण शील सोहामणुं रे, ते रही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरियुं रे, वहेतुं प्रवहण थल ॥ कुशलें केते वासरें रे, आव्यो बावरकूल ॥ ध० ॥ ७ ॥ बंधारा उतरावि नें रे, आपी नृं

पने दांण ॥ व्यवसायी व्यवहारीठे रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ८ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकरू रोक ॥ ध० ॥ ए ॥ त्यां पण बहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे, ते पण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा डुठ जुवाण ॥ निस्सहेरा ठेले नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर नांखें करी रे, कृमिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत वा ला हुवे रे, नस नस पीरू प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ वि च विच अंतर गालीनें रे, पोषे अशनें अंग ॥ वलती महीरगतारथी रे, मांले रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ बाला चिंते में कीयुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पड्युं रे, मोटुं डुःख दोचाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा जूजारणी रे, कां सरजी किरता र ॥ देतां डुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजण हार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ गाम न हुंतुं डुरकने रे, तो आव्यो सो पाहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी वली किण देश ॥ जाल लख्युं बनी आवशे रे,

सुपरें तेह सहेस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दुःख पूरें अबला
जरी रे, नाणे मनमां रोष ॥ एकांतें चिंते तिहां रे, स्व
चरित कर्म्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाकें ठाकें
चढ्यो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही
रे, अहो नव विषम बनाव ॥ ध० ॥ १९ ॥ घरकी तन
लोही लीयुं रे, मूर्च्छाणी नूपीठ ॥ खरकी रुधिरें एकदा
रे, पक्की नारंक शूनि दीठ ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखी नन
थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंक ॥ चंच पुटें लेई ऊ
क्रियो रे, सहसा ते नारंक ॥ ध० ॥ २१ ॥ नन मार्गें
ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांहि विहंग ॥ तेहवे बीजो
सामुहो रे, आव्यो नारंक तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ आ
मिष लोनें तेहशुं रे, मंके जूऊ तिकोई ॥ लक्कतां चंच
थकी पके रे, ठटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आसु
रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के
कोई नोगिणी रे, जलमां रमवा ज़ाय ॥ ध० ॥ २४ ॥
के धारा हरिवज्रनी रे, के दामिणी द्ये दोट ॥ इम
क्षण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊंची कोट ॥ ध० ॥
॥ २५ ॥ बाला गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनवका
र ॥ तरता गज मत्स्य ऊपरें रे, पक्की सुकृत आधार
॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खंकें ए थई रे, निरुपम त्रीजी

ढाल ॥ पुण्यथकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय
माल ॥ ध० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पमी, जखपूंठें निर नाथ ॥ पण
जो ए जल बूमशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मर
ण समय इम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आरा
धन हेतुक नणे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार
पद सांनले, जख वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी
सूचवे, पूर्वागत संबंध ॥ ३ ॥ रहि क्षणिक थिर चित्त
ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, नुज
लंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदयनी दिशा, हजी
अछे केतीक ॥ हाले नहीं जल उदरनुं, चाले इम म
त्स ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दी
संत ॥ के सुरपादप वेलमी, चलगिरि शिर विलसंत
॥ ६ ॥ संशय एम पमामती, खगकुलने गजगेल ॥ चा
ले ठांटी जलकणें, जोती जलनिधि खेल ॥ ७ ॥ सुखें सुखें
प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिठ ॥ उदधितिलक वेला
उलें, कुशलें पोहोतो मछ ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प नामें नूपा

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चढिउं अरिनो सालो॥ चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिभि डुमाभें देवा सी झंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वींट्यो सु जट उद्वंठे ॥ जीराजेंद्र जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे डुर्दंत, सीमाला जांज वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर साहामो जब आवतो रे, जलमां नृपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, बेठो तेहनी पीठो ॥ बेठो तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ एक जणे गरुमें चरुयो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे ठे स्वछंदो ॥ आवे ठे नृप जांखे मानो, कोलाहलथी जाशे पाठो ॥ मौन धरी नि रखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही थाटें ॥ जी० ॥ ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥ शुंढादंडें सुंदरी रे, उतारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रही बाहिर मोकें, सुंदर थल नूमि जइ ठोके ॥ प्रणमी व लियो पाठो ठानो, वली वली जोतो मुख प्रमदानो ॥ जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य महा जलें रे, रयणायरमां मीनो ॥ नूपति त्यां मलया कन्हे रे, आवे विस्मय लीनो

नो ॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आदें सकल चवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम भीनें, मूकी इम कहुं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि नेहथी रे, मछ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां रे, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक चक्रनां व्रण जुवे गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही, नसीय घणुं दीसे जलमांही जी० ॥ ६ ॥ कोपवशें को वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण जांगे पडी रे, मछवांसे किहां दूरें ॥ मछवांसें वेठी इहां आवी, इम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो नायक, कंद्रप नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांइ म वीहे ॥ कुंण तु किम मीनें धरी रे, आफलती छुःख दीहें ॥ आफलती आवी पुर एणें, हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मुज दीहा धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो लहुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरित्रार्थ होये छुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज विहुं पखनो वेरी ॥ जी० ॥

॥ ए ॥ ए नृपनें हुं उलखुं रे, तात श्वसुर कुल द्वेषं ॥ शीलविखंरूी माहरुं रे, लेशे सुत संपेखी ॥ लेशे सुत इम चिंती निःशासी, बोली बाला डुःरक चकासी। मुज चिंता तुमनें ठे केही, पुण्य विना रजलुं बुं एही ॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पन्नणे नृपनें रे, नारी ए डुख नारें ॥ न शके इष्ट वियोगथी रे, कहेवुं कांई करें ॥ कहेवुं कांई शंके मत पूठो, डुःखमां वली वल लागशे ऊंठो ॥ मीठें वयण हवे आसासी, उपचरण कीजें कांई खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वली नृप पूठे मानिनी रे, तो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें कहे माहरुं रे, मलया नाम निकाम ॥ मलया नाम निकाम नगारो, तेहथकी न लह्यो डुःख आरो ॥ सन्मानी नृप मंदिर आणी, सुख साजें राखी जिहां राणी ॥ जी० ॥ १२ ॥ व्रण संरोहण उषधि रे, रूझवियां व्रण तासो ॥ दासी दास समीपनें रे, थापी पृथग आवासो ॥ थापी पृथग वसन शणगारें, संतोषी नृपें तेणी वारें ॥ मुजनें इम नृपति सतकारें, वारु नहीं आगें इम धारे ॥ जी० १३ ॥ ते दिनथी ततपर हुई रे, करवा धर्म विशेष ॥ ध्यान धरे अरिहंतनु रे, ठांकि भ्रम विश्लेष ॥ ठांकि भ्रम विश्लेष विवेकें, आ

राधे जिनधर्म सुटेकें ॥ चोथे खंमें चोथी ढाला, कांति कहे रहे सुखमां बाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपति जणे, मलयानें धरी राग ॥ ज डे मुजनें आदरी, कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बं ध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिय लाग ॥ उचित हेम मय मुद्रिका, अहेवा मणि पर जाग ॥ २ ॥ तुज वच नामृत चंद्रिका, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दयिता मोजमी, तुं शिरशेखर गोर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ बे पख निवहे रस दिये, जिम रथ चक्र युगेण ॥ ४ ॥ मुज मन लागुं तुज्ऊ शुं, वाखुंही न रहंत ॥ कोमि विकल्प कदर्थना, लत्ता पात सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाणये आदरे, तो रस व धतो होय ॥ नहीतो पण छे मुज वसू, हीये विचारी जोय ॥ ६ ॥ जाश्श कीहां पाने पमी, नहीं मूकुं हवे दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥ ॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे हवी, छानी हीये निघट्ट ॥ वचन गर्भे ते दुष्टता, नृपें करी प्रगट्ट ॥ ८ ॥ धिग मुज यौवन रूपनें, लवणिम पमो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी, लहुं लाख जंजाल ॥ ए ॥ बूमी कां नहीं जलधिमां, ऊ

खे उतारी कांइं ॥ नरकोपम दुःखमां पमी, हे हे पाप प साइं ॥ १० ॥ चाहे शील विखंरूवा, कामंधल नृप धी ठ ॥ मरण शरण जीवित थकी, अकल व्रतनें इठ ॥ ॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, जाणो निरखी बा ल ॥ वधिशुं तन मन संवरी, बोली इम ततकाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ठेलो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ ठेलो नांजी, नांजी नांजी नांजी, ठेलो नांजी ॥ नारी नरकनी कूंमी ॥ ठे० ॥ आपे दुर्गति जंमी ॥ ठे० ॥ अनुचित करतां मीठमा बोलां, लोक कहे हा हाजी ॥ केई विरला हित मारग दाखे, तेहिज वाजी साजी ॥ ठे० ॥ १ ॥ परनारीथी संपद निकसे, विकसे अपयश माला ॥ पुरुष पतंगा ऊंपण एतो, विषम अगनिनी जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे, लागो जिम मशि बिंदु ॥ तिम परदारा संगति राहु, म लिन करे गुण इंदु ॥ ठे० ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट वि णासाके, परनारी रस गंटो ॥ उत्तम कुल कीरतिपग वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ कंपत क र विषधरनां मुखमां, जिम जीवितनो सांसो ॥ तिम सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे० ॥ ॥ ५ ॥ निज नारीथी भूख न भांगी, शुं विलखे मुज

माटे ॥ भृत चाणे जो तृप्ति नहीं तो, शुं एवुं कर चाटे ॥ बे० ॥ ६ ॥ काननना तृणमांहे तुं सूतो, आग उशीसें सलगे ॥ शीखम्हली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥ बे० ॥ ७ ॥ हीये विचारी निरख रे घेला, महि लामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इन्द्रायण फल साचे ॥ बे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलह नुं, मोक्षपथिक पग बेमी ॥ अति आसंगें अबला विलगी, नाखे कुगति उथेमी ॥ बे० ॥ ए ॥ शठ जन नें पण वलगी खटके, जिम खर पूंठे ढांची ॥ परदा रा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ बे० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवने आहूति देवा, नारी हुताशन कुं मी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिं मी ॥ बे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अति रागें ॥ तुं नय बंमी अनय मग हींमे, तो कहीयें को आगें ॥ बे० ॥ १२ ॥ चूकवतां दु ष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां हुये दु लहो जीवंते, दृग विष नाग नगीनो ॥ बे० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह ज णी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ बे० ॥ ॥ १४ ॥ वंश विशाल विमल कुल ताहारुं, जरियो गुण

खे उतारी कांइं ॥ नरकोपम दुःखमां पडी, हैहै पाप प
साइं ॥ १० ॥ चाहे शील विखंडवा, कामंधल नृप धी
ठ ॥ मरण शरण जीवित थकी, अद्भुत व्रतनें इठ ॥
॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, जडो निरखी बा
ल ॥ वधिसुं तन मन संवरी, बोली इम ततकाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ ठेडो नांजी, नांजी नांजी नांजी, ठेडो नांजी ॥
नारी नरकनी कूंडी ॥ ठे० ॥ आपे दुर्गति ऊंडी ॥ ठे० ॥
अनुचित करतां मीठडा बोलां, लोक कहे हा हाजी ॥
केई विरला हित मारग दाखे, तेहिज बाजी साजी
॥ ठे० ॥ १ ॥ परनारीथी संपद निकसे, विकसे अपयश
माला ॥ पुरुष पतंगा ऊंपण एतो, विषम अगनिनी
जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे,
लागो जिम मशि बिंदु ॥ तिम परदारा संगति राहु, म
लिन करे गुण इंदु ॥ ठे० ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट वि
णासाडे, परनारी रस छांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिपग
वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ दीपत क
र विषधरनां मुखमां, जिम जीवितनो सांसो ॥ तिम
सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे० ॥
॥ ५ ॥ निज नारीथी सूख न जांणी, शुं निरखे मुज

माटे ॥ भूत जाणे जो तृप्ति नहीं तो, शुं एवुं कर चाटे ॥ ले० ॥ ६ ॥ काननना तृणमांहे तुं सूतो, आग उशीसें सलगे ॥ शीखरूली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥ ले० ॥ ७ ॥ हीये विचारी निरख रे घेला, महि लामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इंद्रायण फल साचे ॥ ले० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलह तुं, मोक्षपथिक पग बेरूी ॥ अति आसंगें अवला विलगी, नाखे कुगति उथेरूी ॥ ले० ॥ ए ॥ शठ जन नें पण वलगी खटके, जिम खर पूंठे ढांची ॥ परदा रा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ ले० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवने आहूति देवा, नारी हुताशन कुं रूी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिं रूी ॥ ले० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अति रागें ॥ तुं नय ठंरूी अनय मग हींडे, तो कहीयें को आगें ॥ ले० ॥ १२ ॥ चूकवतां दु ष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ अहतां हुये दु लहो जीवंते, दृग विष नाग नगीनो ॥ ले० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह न णी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ ले० ॥ ॥ १४ ॥ वंश विशाल विमल कुल ताहारुं, जरियो गुण

य ॥ मुख ठवि फल सहकारनुं, गयणें ऊड्यो जाय ॥ १ ॥ चंचथकी नारें खिस्युं, जिहां अगासें राय ॥ नन्नथी नृपना अंकमां, ते फल पमियुं आय ॥ २ ॥ चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अव सर विण किहांथी पम्युं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥ अछे एक पुरपरिसरें, छिन्नटंक गिरितुंग ॥ तास विषम शिखरें सदा, वनना अंब अनंग ॥ ४ ॥ आएयुं तिहांथी सूम्ले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पम्युं तस वदनथी, नारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व ल्लन प्रत्यें, के आरोगुं आप ॥ क्षण एक एम विमा सतो, नूपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुन्नटने फल ग्रही, पोहोचो मलया पास ॥ अंतेउरमां आणजो, आपी अति विशवास ॥ ७ ॥ नूपति वचन तथा क री, सुन्नट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरशुं तेणें जई, मल यानें फल दीध ॥ ८ ॥ विणकालें किम संन्नवे, ए फल अनुपम आज ॥ विस्मित इंम नृपजणथकी, ली ये अंब तजी लाज ॥ ९ ॥ सत्यापी फल आपीनें, थापी नूपति धाम ॥ उत्थापी कहे रायनें, पापी निजकृत काम ॥ १० ॥ महादुःखें दिन नीगमे, तकत

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस्त हूउं दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ बींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एतो जूंठो मुज मन त्रासे हो ॥ नृपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, कांइ न चढें मन विशवासें हो ॥ नृ० ॥ १ ॥ सुंदर शील वी गोशे, आकुं नें अवलुं न जोशे हो ॥ नृ० ॥ शाख लाखीणी खोशे, तो सूल किश्यो हवे होशे हो ॥ नृ० ॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी जगिनी शी ज ज्जा हो ॥ नृ० ॥ बांधे चावी धज्जा, नवि जाणे ख ज्जा अखज्जा हो ॥ नृ० ॥ ३ ॥ इम धारी वेणी टंटो ली, काढी कचमांथी गोली हो ॥ नृ० ॥ आंबा रस मां चोली, बींदी करी सूधी घोली हो ॥ नृ० ॥ ४ ॥ नर हूउं फीटी नारी, दिव्य रूप कला संचारी हो ॥ ॥ नृ० ॥ सुंदर यौवन धारी, जाणे मन्मथनो अवता री हो ॥ नृ० ॥ ५ ॥ बेठो मंदिर जालें, अंतेउर ख्या ल निहाले हो ॥ नृ० ॥ सूतो जिम रह्यो आलें, सुर तरुनी राल विचालें हो ॥ नृ० ॥ ६ ॥ अद्भुत रूप निहाली, थई राणी सवि कोंनाली हो ॥ नृ० ॥ जा णे संचे ढाली, इम थंत्री रही विरहाली हो ॥ नृ०

॥ ७ ॥ चिंते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु हो ॥ नृ० ॥ ए सुरपति अवतारु, कहुं अवर पुरुष ते कारु हो ॥ नृ० ॥ ८ ॥ वसुधाथी नीसरियो, कोइ प्रत्यक्ष ए सुरवरियो हो ॥ नृ० ॥ विद्याधर गुणें जरियो, के सिद्ध पुरुष अवतरियो हो ॥ नृ० ॥ ९ ॥ पीडी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥ नृ० ॥ वेधी आरें पारें, तस रूप महारस धारें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १० ॥ यामिक संशय पेठो, जोखें कुंण गोखे ए बेठो हो ॥ नृ० ॥ अंतेउर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें हो ॥ नृ० ॥ ११ ॥ नृपतिनें वीनवियो, आव्यो नृप त्यां धसमसियो हो ॥ नृ० ॥ नीरुपम तरुणो दीठो, अति शांत सुखासन बेठो हो ॥ नृ० ॥ १२ ॥ कुंण ए पेठो सौधें, चिंते नृप चढिउ क्रोधें हो ॥ नृ० ॥ मलया बदले योद्धें, कुण मूक्यो मुज अवरोधें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दबावी, पूछ्या नरु भृकुटी चढावी हो ॥ नृ० ॥ ते कहे मलया आणी, न गई क्यां बाहिर जाणी हो ॥ नृ० ॥ १४ ॥ बेठा गां घर द्वारें, राजेसरजी निरधारें हो ॥ नृ० ॥ कहे नृपति चित्त धारी, नर ए थयो तेहीज नारी हो ॥ नृ० ॥ १५ ॥ नृप पूछे जई पासें, तुम रूप किस्युं ए नासे हो ॥ नृ० ॥ ते कहे

जेहवुं देखो, तेहवो बुं इहां शुं लेखो हो ॥ नृ० ॥ ॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो, सिद्ध साधकथी पण न्यारो हो ॥ नृ० ॥ मलयानां इणें उमही, पहेर्यां बे पट ते तिमही हो ॥ नृ० ॥ १७ ॥ में रति रस सागतें, नर रूप धर्युं कोई तंतें हो ॥ नृ० ॥ जाणुं मलया एही, बेठी ठलवानें सनेही हो ॥ नृ० ॥ १७ ॥ महीपति कहे सेवकनें, ईम अंतेउरमां न बने हो ॥ नृ० ॥ करशे अनरथ गाढो, कर साही बाहिर काढो हो ॥ नृ० ॥ १ए ॥ मलय सुंदरी इति नामें, काढ्यो बहि भुज ग्रही तामें हो ॥ नृ० ॥ बाह्य गृहे नृप राखे, एक दिन वली एहवुं नांखे हो ॥ नृ० ॥२०॥ रूप कर्युं शे योगें, नरनुं कुण तंत्र प्रयोगें हो ॥ नृ० ॥ हतुं स्वाभाविक जेहवुं, थाशे किम क्यारें तेहवुं हो ॥ नृ० ॥ २१ ॥ तव चिंते सा हियडामें, विलखे जूउं नोगनें कामें हो ॥ नृ० ॥ मौन कर्यानी वेला, रहेशे बकी एहनी मेला हो ॥ नृ० ॥ २२ ॥ मलया बाजी जीती, नृपतिनी मति गति वीती हो ॥ नृ० ॥ ठही जोश्ये खंतें, कांतें कही ढाल धसंतें हो ॥ नृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा

॥ कसी कसी नृप पूठीयुं, हसी न मेले मीट ॥

तींखो लागो ते तदा, जिम बावलनो शीट ॥ १ ॥ मलयकुमरी ऊपर हूउं, रोषारुण भूपाल ॥ संतावे तन तर्जीना, दिन दिन बूरे हवाल ॥ २ ॥ ताम्हे ताते ताजणे, मारे लाठी लात ॥ मुक्की वली चूकी दीये, पाम्हे नाम्ही घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश भूतलें, आकर्षे पग बंध ॥ हर्षे पर्षद निरखतें, धर्षे दे पग खंध ॥ ४ ॥ सिंचे नीचें कूपमां, निहणे पूंठि निबंध ॥ मोटे सोटें चोटीनें, नर्म करे तन संधि ॥ ५ ॥ नृपसुत इम ताम्ही जतो, चिंते हे किरतार ॥ कहीयें इहांथी नीसरी, लहीशुं डुःखनो पार ॥ ६ ॥ एक दिवस निद्रावशें, पड्यो निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरें, वहे कुमर मधरात ॥ ७ ॥ पथिशालायें वीशम्यो, धरी मरण मन आश ॥ दीठो भमत इहां तिहां, अंध कूप तस पास ॥ ८ ॥ तस कंठें ऊभो रही, चित चिंते दिलगीर ॥ पम्हशुं जो कर भूपनें, तो दहेशे बे पीर ॥ ए ॥ शरण नहिं म्हारें इहां, मरण विणा कोइ ऊेर ॥ इष्ट संभारी आपणो, इम बोली तिण ठोर ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ ऊधवजी कहेशो बहु न कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी डुःखणी कांइ हुं सरजी ॥ ए आंकणी ॥

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटीकरे हिय पूर जी ॥ प्रीतम विण न शके कोइ सांधी, लाख मले जो दर जी ॥ प्रनु० ॥ १ ॥ वाहालानो मुज देई वीठो, डुःख संकटमां नाखी ॥ नाग्य रहित ज्यां त्यां हुं नटकुं, मधु नूलि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ देव अटारा महाबल साथें, ए नव दीधो वियोगो ॥ परनव कंत पणे मुज तेहनो, मेलवजे संयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूआ शिर ऊनी नररूपें, देती इम उलंना ॥ सज्ज हूइ कूपें ऊंपावा, प्रेम नरी निरदंना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें जोतो, महबल ते दिन शेषें ॥ पहियशालमां रातें सूतो, निंद लही नवि लेशे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावुं जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मलयायें जे दीया उलंना, ते कानें जइ वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अपूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागनां सूचक आहें, पमठंदे नन मागें ॥ प्र० ॥ ७ ॥ संन्रमथी ऊठ्यो त्यां नमकी, कहेतो इम मुख वाणी ॥ विफल महा साहस रस खेलें, मरण लीये कां ताणी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुनुं, इम कही ऊंपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूठें तिमहिज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ए ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा नाख्यो, लघु सादें इम नांखे ॥ मुज अब लाने ए दुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो ऊठी पासें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधे, इणे मुज नाम संनाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुःखमां हियरू धाख्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे साचुं कुंण तुं बे, कां पमियो इम कूपें ॥ उंलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तूं बे किम आयो कूपें, पमियो कां मुज केमें ॥ इत्यादिक पूछी सहु पाछें, काम करो एक नेमें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज बिंदी, नांखुं जिम स्वसरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप नींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ दुर्लन दयिता दर्शन देखी, उत्कंठ्यो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आनें वूठा घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥ इम

कहीनें नयणें जल जरतो, पूछे तस विरतंत ॥ सापि कहे हियमे डुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र० ॥ १ए ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी डुःख श्र नुखंगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह्यां किम श्रंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे बलसारें, जरूपीनें सुत लीधो ॥ श्रठे किहां ते सा कहे शेठें, मू क्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेस्यो किम नं दन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सवि होशे जो इहांथी, बूटक बार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥ मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूढ्युं वली दायतायें ॥ श्राप चरित्र सघलां ते जांखे, कुमर यथा इज्ञायें ॥ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजाषण करतां बेहु,, रजनी त्यां निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पजणी कांतें उ माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

ट्यो नाहिं नगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोने अनुपम जोमलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अनय हजो तुमनें विन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस वंठ ॥ ५ ॥ नूपें बिहुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीउनें नूपति तणो, मलया नणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाठें कम जात ॥ कीधी कोमि कदर्थना, कासांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी निखर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप थी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा योग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूमी जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उद्धरीयें रंगमां रू० ॥ बेठो इम कहे तो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नूपति कहे जणनें पहेली धणनें खांचीयें रू० ॥ इम उचें नीचें सेवक खींचे

जोरशुं रू० ॥ गयणंगण गहेरो कीधो वहेरो सोरशुं रू० २ ॥ आतम उतवंरूक जाणे कररूंक सापना रू० ॥ निरखंत नराणा कलश पूराणा पापना रू० ॥ अंध कूपक आरें आवे करारें ज्यां त्रिया रू० ॥ नूपें लहि ताघा बे कर आघा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ सुख माहिं उतारी बाहेर नारी राजिये रू० ॥ बेठी पिउ विहुणुं ऊणुं डुणुं मन किये रू० ॥ महबल तस केमें आव्यो नेमें कांठमे रू० ॥ कोपें कलुषाणो नरनो रा णो दीठमे रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रूपें अधिको मोपें उपीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वर कीयो रू० ॥ मुज मीटथी रमणी लावी जमणी ए जुवे रू० ॥ मीठो गोल पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥ मादलिउं मास्यो स परिवास्यो गोठिनो रू० ॥ नाखुं अं ध कोठीमां जिम पोठी पोटिनो रू० ॥ थापी इम टूं की कापी मूकी दोरमी रू० ॥ बंधनथी बूटी मांची त्रूटी उथमी रू० ॥ ६ ॥ पम्जिउ ततखेवा खातो ठेवां कोरनां रू० ॥ नीचें ढल नाग लागा कांठा जोरना रू० ॥ नारी तस पूंठें पकवा ऊठे साहसें रू० ॥ नू पें कर साही राखी वाहीनें तिसें रू० ॥ ७ ॥ आणी आवासे राय प्रकासे तेहनें रू० ॥ कुण ए रस नरि

यो तें आदरियो जेहनें रू० ॥ पूछी नवि बोले आंसू
ढोले दुःखनां रू० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न त्रोटे
इकमना रू० ॥ ॥ ८ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा लागी
एहवो रू० भोजन पिउ पाखें न करुं लाखें जेहवो
रू० ॥ मूकी एक महेलें थाप्या गयलें पाहरु रू० ॥
वेगो जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ए ॥ आ
शे किम कूपें नाख्यो भूपें नाहलो रू० ॥ नीसरशे क्यां
थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर
ती इश्युं भरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर
ती दाहाडो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां अण ल
हेती, विरहें दहेती देहमी रू० ॥॥ निशिमां एक मा
गें भूतल भागें ते पमी रू० ॥ रुंकी विषधरियें रोषें
भरिये क्यांहिंथी रू० ॥ बोली अहि विलगो न रहे
अलगो आंहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संभारे जिन
मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा
धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उछाल्यो
वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो भूपति आयो व्याकुलो
रू० ॥१२॥ उपचार घणेरा कीधा भलेरा जे घट्या रू०॥
साहमा विष जोला लहेर हिलोला ऊमट्या रू० ॥
इंद्री थयां शून्य चेतन ऊना घारणें रू० ॥ एक सास

उसासो मंन्दित मासो क्षण क्षणें रू० ॥ १३ ॥ ते दुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥क रवा तन ताजी प्रगट्यो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप तिवारें अति दुःखें रू० ॥ पम्हो वजमावे साद पमावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कंन्या बंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फस्या रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पथ थोंके संचस्या रू० ॥ १५ ॥ थानक सत्रि नटकी पाछा ठटकी नें वल्या रू० ॥ नृप नवननी वाटें आवे उच्चाटें खल नल्या रू० ॥ चोथे खंमें चावी ढाल सोहावी आठमी रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें ए गमी रू०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अभिनवो, पम्ह ठवे त्यां आय ॥ नृप सुनटें नृपति कन्हें, आण्यो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ दैव हण्यो मुज वैरीयें, कीधो केण कुकज्ज ॥ मुजनें अल गो जाणीनें, काढ्यो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ इम चिंति

शे कुण प्रतिबंध रे ॥ मो० ॥क०॥ ५ ॥ मो० ॥ संकट पडि यो महीपति, कहे तुज देईश तेह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ बीजां पण मुज केटलां, काम करीश जो ठे ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे कहेशे नृप का म ते, करिशुं तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ले जाईश निज नारजा, चिंते एम सगर्व रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नृप वचन अंगी करी, आव्यो मलया समीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मूर्छांगत दीठी त्रिया, मूकी गरल उद्दीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ८ ॥ ॥ मो० ॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जलजरें नय ण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रोवें मन कालुं करी, बो ले इम वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ए ॥ मो० ॥ ग त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ तोपण अंगें आगमी, करशुं हुं प्रतिकार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥ प्र सर निषेधी लोकनो, धरणी करो जल सिक्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तिमहिज नृपने सेवकें, कीधी धरा सुपवित्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो० ॥ नृपति आदें जन सवे, बेठा बाहिर आय रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ कुमरें मंडल मांडीयुं, विष वालक

नो उपाय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १२ ॥ मो० ॥ मंडल
मां पूजी विधें, ध्यान धरी महा मंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, विष वालक मणितं
त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १३ ॥ मो० ॥ ढाली मणि
जल सिंचीयुं, विकस्यो लोयण लेश रे ॥ मो० ॥ क० ॥
मो० ॥ ढांक्या ज्यौं रवि तेजथी, कमल हशे एक दे
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल
सिंच्युं तदा, वलिया सास उसास रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ लोचन पूरां उघड्यां, कमल ज्यौं पूर्ण प्रका
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १५ ॥ मो० ॥ सर्वंगें जल सिं
चीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥
उठी आलस मोडती, करती हाव विशेष रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पउधार्या प्रभुजी इहां, कू
पथकी किण रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी
मुजनें किम करी, पूछे सा धरी प्रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ १७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पडीयो हुं
जई हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजें
एक शिला, दीठी मणिधर हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १८ ॥
॥ मो० ॥ ठाने जइ मूठी हणी, उघडियुं तदा बार रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर सलक्यो पर मुहें,

पेठो हुं तिण गार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १९ ॥ मो० ॥ साहस धरि हुं चालीयो, विवरें धरणी मांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीवीधर थयो, आवे पूंठें उछांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ एह सुरंगा चोरनी, तिण वली बीजुं बार रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवुं चिंतवी, आघो कीधो प्रचार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे मुख आगें थई, मणिधर नाठो तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल उल्लस्युं, जिम जमता जम चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुसारें हुं चालतो, आथमीयो जई द्वार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ चरणें हणी बीजी शिला, नाखी उलटी तिवार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ बार विवरनुं उघरुयुं, नीसरियो बहि आय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ जन्म्यो गर्भावासथी, चिंत्युं इम अकुलाय रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आघेरो चाल्यो वही, जोतो अहिगति लीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ शिलाशिरें दीठो अही, बेठो थई निर्भीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २५ ॥ ॥ मो० ॥ मंत्र भणी ते वश कीयो, लीधो तस मणि नंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीयें सम

शानमां, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥ ॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे सूउं, चिंती इम शिल तेथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांकी वार सुरंगनें, नीसरियो उमहेय रे ॥ मो० ॥ क०॥ २७ ॥ मो० ॥ ठाने पुरमां पेसतां, निसुण्यो परूह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पूब्युं जाण्युं ताहरें, व्याप्यो विष उन्माद रे० मो० ॥ ॥ क० ॥ २८ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सांसही, परूह ठब्यो पण बंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणि योगें साजी करी, गाब्यो विषनो गंध रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ २९ ॥ मो० ॥ बांध्यो वचनें सांकलो, धीठो पण नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ देशे तुजनें मुज नणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ ३० ॥ मो० ॥ पीयु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खंरु विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय नांखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरें नूपति तेमीउं, आव्यो अधिक प्रमोद ॥ निरखे बाला हरखथी, करती वात विनोद ॥ १ ॥ शिर धूणी नूपति नणे, अहो शक्तिनो खेल ॥ अम फुःख साथें जेणीयें, फेंक्यो गरल उवेल (प्रवाह) ॥ २ ॥

अति विस्मित वसुधाधवें, पूछ्युं नाम निवेश ॥ सिद्ध पुरुष इति तेहनी, निज कहे नाम निर्देश ॥ ३ ॥ जि मी नहीं गत वासरें, विरची बाला एह ॥ उचित जमा मो तेह जणी, कहे नृप ससनेह ॥ ४ ॥ पय पाकुं सा कर रसें, पावे कुमर सहाथ ॥ स्वस्थ हुई वातो करे, ते नृप सुतनी साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पंथीमा रे संदेशमो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर जणे नृपति प्रत्यें, करो शीख सुजाण ॥ द्यो मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण ॥ १ ॥ हुं रे विदेशी पंथियो, न सहुं ढील लगार, ॥ मुज मन ऊ ठ्युं इहांथकी, चालण निरधार ॥ हुं० ॥ २ ॥ कांइ विचारो राजिया, करो कांइ विषाद ॥ रुसवा थाशो लोकमां, मूक्यां मरयाद ॥ हुं० ॥ ३ ॥ रवि जलधर जलनिधि शशी, मूके नहिं स्थिति आप ॥ तिम नृप पण नवि उथपे, कुलवट स्थिति थाप ॥ हुं० ॥ ४ ॥ आपो मलया एहनें, थाउ राजि प्रसन्न ॥ दंपती दुः खियां मेलवी, करो सत्य वचन्न ॥ हुं० ॥ ५ ॥ सम जावे इम नृपनें, पुरनां लोक समस्त ॥ आपूछ्यो ते सांजली, कोपें मदमस्त ॥ हुं० ॥ ६ ॥ क्षण एक अ ण बोल्यो रही, मांके बीजी वात ॥ है है निठुर पणा

तणी, जूठे जूठी धात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूछे नरपति सिद्धनें, लोयण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहशुं, श्यो सगपण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी, पामी मुज विजोग ॥ दैवदयाथी माहरो, लही आज संयोग ॥ हुं० ॥ ए ॥ अवनीपति आखे वली, कर एक मुज काम ॥ ढील नहीं देतां पछे, तुजनें एह वाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ दुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे च लाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां वाली तेहनुं, कीजें जस्म शरीर ॥ लेपें शिर पीका हरे, तेह जस्म सनीर ॥ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ उषध ए तुजनें जजें, करवुं माहरे काज ॥ सोंप्युं दुष्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ लुब्ध्यो मलया देखीनें, निर्लज ए नरराज ॥ मुजनें हणवा कारणे, सोपें एहवुं काज ॥ हुं० ॥ ॥ १४ ॥ अधमें मुजनें सूचव्युं, पहेलुं पण एह ॥ करशुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे छेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥ मरण विना कुण करी शके, दुःख संजव काज ॥ अंगीकस्युं में धुरथकी, न कस्या मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ एम धारी साहस ग्रही, बोल्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिंता न करो राजिया, कारज ए में लीध ॥ हुं० ॥ १७ ॥

दुर्लन्न उंषध ताहरुं, करवुं में निरधार ॥ तुं पण प्रम
दा आपतां, मत करजे विचार ॥ हुं० ॥ १७ ॥ फो
गट गाल फुलाविनें, कहे नूप हसंत ॥ उपकारकनें
आपतां, कहो शुं खटकंत ॥ हुं० ॥ १ए ॥ कठिन हृदय
नरराजियो, हरख्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दंपती जूजू
आं, जण थापी निःकृष्ट ॥ हुं० ॥ २० ॥ मंदिर आवे
मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खंमनी,
कांतें कही ढाल ॥ हुं० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा उचित विधान ॥
काठ शकटन्नरि जोतरी, मूके ज्यां समशान ॥ १ ॥
निरखी विषम कर्त्तव्यता, डुःखियां पूस्यां लोक ॥ हाहा
नरमणि विणसशे, इंम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ बे
हलां आन्नूषण धरी, वींट्यो राज सुन्नट्ट ॥ पश्चिम पो
होरें पितृवनें, पोहोचे कुमर प्रगट्ट ॥ ३ ॥ व्यतिकर
लोकथकी लहे, मलया पिशुनो आप ॥ संतापी विर
हानलें, विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ ऊठ कलालणी न्नर घ
मो हे, दारुमारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज यौवन रूपनें हे, धिग मुज जनम अ

काय ॥ आपद घणियो जेहथी हे, मोहें लोजाणो ना थ ॥ प्राण प्यारो बलवा हे कांइ जाय० ॥ १ ॥ पहेलो डुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरङ ॥ ए वेलामां साहेबा हे, कुंण ग्रहशे तुज हङ ॥ प्रा० ॥ २ ॥ काठ कुठी मां नीमियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशे क्यां थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा ही नृपतिनरूं हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे कि म पीमा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय ॥ कांइ जीवाम्ी पापिणी हे, हुं हुइ जे डुःखदाय ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियमे दे घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोमीयां हे, ए वेला जगदीश ॥ तरबोमी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ प्रीतमली हीयमे वसी हे, लागें मीठी गा ढ ॥ साले बूटी अधरसें हे, जिम तीखी यसदाढ ॥ ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पमजो शिल शिर तेहनें हे, पाड्यो जेणे वियोग ॥ पारजन तेहनां रखमजो हे, जिम का प्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ए ॥ विलपत प्रमदा खीज ती हे, डुःख पूरी मद्दे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें

हे, थे जल अंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं नयणें नाहलो हे, तो मुज भोजन वात ॥ बेठी एहवुं आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप नंदन समशानमां हे, इहां तिहां निरखी ठोर ॥ खमके इच्छित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ साहस देखी तेहवुं हे, पुर जण मलिया धाय ॥ दिल गिरी धरता हिये हे, नृपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥ ॥ १३ ॥ देव विचास्या विण ईस्यो हे, मांड्यो कवण अन्याय ॥ राखजिशें पशुनी परें हे, हणियें नहीं सि ऊराय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो भलें हे, पण मारो कां एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी करुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नृप भणें ए भामिनी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी काठी हुवे हे, जो नर ए जीवंत ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ ए बाला विण मा हरे हे, न पमे जक पल मात ॥ मत पमजो ए वात मां हे, सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय तव तिहां बोलीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहनी तुमनें पमी हे, मेलो बो इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ पोतानें पापें पची हे, मरशे जो दुःख आणि ॥ तो नगरीमां केहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

राजानें मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ने हवा नररत्ननें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ गारमिशें आरंजियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि डुर्मति ए बेहुनें हे, गरज पमशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज गाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पिउ लेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंमें अग्यारमी हे, कांतें पन्नणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संन्नारी आपणो, परवरियो नरवृंद ॥ दक्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पुरजन मुख हाहा रवें, आपूरयो आकाश ॥ लोक हृदय कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृपसुत उतपति, पमे चितामां जाम ॥ ततक्षण पुरजन नेत्रथी, पसरयां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तमाके तोमी ठे डुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुन्नट विकट चयमांहि, पेठो कुमर जिवारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाव्यो, पसरी जाल तिवारें ॥ १ ॥ जबाकें जलकी ठे दिगमाला,

तापें कटकण लागा काठ ॥ चमाकें चमकी छे सुर बाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी, दिशिदिशि अंबर छायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूपें, जाणे पावस आयो ॥ ऊ० ॥ २ ॥ वन्हि पतंग उमे तगतगता, खजुआ जिम चिहुं ओरें ॥ जाल वीज ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ ऊ० ॥ ३ ॥ सात जीन्न शतजीन्न थईनें, नन्नतल चाटण लागो ॥ तस उद्दीपक पचनसहायी, विशमो थई त्यां वागो ॥ ऊ० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, तस हा रव अण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानल देखी, सुन्नट वव्या गुण शुणता ॥ ऊ० ॥ ५ ॥ जिम कीधुं तेणें तिम नृप आगें, जांख्युं सकल बनावी ॥ नृप प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥ ऊ० ॥ ६ ॥ हुउं प्रन्नात विन्ना तनु तारा, ढांक्या सूर प्रन्ना वें ॥ तव शिर रक्षा पोटि धरीनें, आवे सिद्ध स्वन्ना वें ॥ ऊ० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग प ग एहवुं पूछे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांथी, शि शें एह कीस्युं छे ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा लेइ हुं, आव्यो छुं नृप काजें ॥ इम कहेतो पोहोतो नृप न्नवनें, सिद्ध पुरुष शुन्न साजें ॥ ऊ० ॥ ए ॥ राख पो

टली आपे नृपनें, कहेतो एहवुं रंगें ॥ ए नाखो निज साथे एहथी, रहेजो निरुआ अंगें ॥ ऊ० ॥ १० ॥ नृप जाणे शुं न बल्या चयमां, आव्या दीसे साजा ॥ आग सगी नहीं जगमां केहनें, न गणे सतियां आजा ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूडा आगें, वनशे कू डुं बोल्युं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो चयमां, मन साहस नवि डोल्युं ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण रीज्या, अमृत रसें चय ठारे ॥ थयो सजी चित्त फरी हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ ठा र पोटली तिहांथी लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ वाचा तेह पले तो रूडी, बोली जेह महीपें ॥ ऊ० ॥ १४ ॥ नृप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी वंची ॥ ॥ इहां र ह्यो ठाली चय बाली, सुभटें करी दृग ऊंची ॥ ऊ० ॥ ॥ १५ ॥ कांत समागम जाणी मलया, मलवानें धसी आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटी, निरखत हरख न मावी ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पा वक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मल्या तें नांखो, पी यु कहे अवसर पामी ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ अंध कूपं गत जेह सुरंगा, ते मुख में चय खडकी ॥ पृथुल गर्त्त घ रनें आकारें, द्वार शिलायें अडकी ॥ ऊ० ॥ १८ ॥

पेठो हुं चयमां थइ ठानें, द्वार सुरंग उघाडी ॥ सबल सुरंग शिला तस द्वारें, दीधी पाठी आडी ॥ रू० ॥ १ए॥ सुन्नटें चय सलगाडी मूकी, बली बली थइ टाढी ॥ द्वार उघाडी कुशलें आव्यो, ठार नृपति शिर चाढी ॥ रू० ॥ २० ॥ सुंदरी गुह्य कथा ए माहरी, कोइ आगें मत नांखे ॥ डुष्ट नृपति मुज ठिड्र विलोके, तुज लेवा अनिलाखे ॥ रू० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें थइ द्वादशमी, ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे धणनी पिउ संगें, विरह व्यथा सवि नीठी ॥ रू० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो नरपति तेहवे, कहे सिद्धनें जंत ॥ नोजन द्यो मलया नणी, अम हाथें न करंत ॥ १ ॥ तरुणी तुरत जमाडीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधुं कारज ताहरुं, हवे अम दीयो विदाय ॥ २ ॥ आपो मुज धण आदरें, थापो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन सु णी महेराण ॥ ३ ॥ संकल्पी जगव्यो वली, मंत्री ठल नुं धाम ॥ अहो सिद्ध साध्युं सबल, नृपतिनुं ए काम ॥ ४ ॥ उपकारी शिर सेहरो, महा सत्त्ववर सिंधु ॥ बीजुं पण महीपति तणुं, कर एक कारज बंधु ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कुंळे मुख लांकमो
रे विंजा, किस करी करुं रे झकोल ॥
रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकमो रे मित्ता, नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिद्ध रूना, सयण म्हारा ॥ ॥ सा० ॥ विषम ऊरध शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब अछे निरकंक ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें वारही मास ॥ सि० ॥ सा० ॥ ते शिखरें ऊंचा चढी रे मित्ता, तलपी हवे आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें आंबा शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ ऊंपावो वली अंबथी रे मित्ता, भूतल भा ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें वही रे मित्ता, मूको फल नृप भेट ॥ सि० ॥ सा० ॥ पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मि त्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ थानक मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० विहुं वातें

मृत्यु माहरुं रे मित्ता, पमिया भूमि बे हाथ ॥ सि० ॥ ॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रभावथी रे मित्ता, करशुं डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज सुंदरी रे मित्ता, बे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरें रे मित्ता, मंत्री वचन तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी ऊठ्यो धसी रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥ मलया जल नयणें भरे रे मित्ता, डुःख पूरें दिलगीर ॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींट्यो घणे रे मित्ता, आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम गिरि ऊंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥ ॥ सि० ॥ सा० ॥ भूपतिनें मंत्री हश्ये रे मित्ता, वाधे हर्षना थोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोभे गिरि टूंके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ नृप सुभटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अंब देखाड्यो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रूकुं जे में उपार्ज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥ सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० इम कहेतो अंबा थकी रे मित्ता, आपे झंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कुहे नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पडछंद्यो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साहस देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पडतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, धे खेचरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुउं जन देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंड ॥ सि० ॥ सा० ॥ पडतां एहना हाडनो रे मित्ता, जडशे कहो किहां खंड ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं दाखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहर्में सकल सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥ ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रभातें आवियो रे मित्ता, लै सहकार करंड ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंड ॥ सि० ॥ १९ ॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

धूजशो कांइ ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इंम जन वीं टीयो रे मित्ता, नृप जवनें गयो धाई ॥ सि० ॥ २०॥ ॥ सा० ॥ श्यामवदन राजा हूठ रे मित्ता, वीहीनो निरखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहवे मंत्रवी रे मित्ता, कुशल्यो किम तुं मित्त ॥ सि० ॥ २१ ॥ ॥ सा० ॥ इंमहीज इति मुख बोलतो रे मित्ता, मूके अंब करंक ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए ल्यो खाउ सहू रे मित्ता, पित्त समावो उदंक ॥ सि० ॥ २२ ॥ सा० ॥ वीहीना हाकें बापडा रे मित्ता, नृप प्रमुख करे मून ॥ सि० ॥ सा० ॥ वे त्रण तेह करंकथी रे मित्ता, सिद्ध ग्रहे फल धून ॥ सि० ॥ २३ ॥ सा० ॥ नृपनें पूठी संचरे रे मित्ता, मलया पास हसंत ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ सा घनथी जिम मोरडी रे मित्ता, पीउ दीठे विकसंत ॥ सि० ॥ २४ ॥ सा० ॥ सकल उचित वि धि साचवी रे मित्ता, बेठी पीउ संग बाल ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ पंडितजी रे चोथे खंडे तेरमी रे मित्ता, कां तें कही ए ढाल ॥ सि० ॥ २५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी कामिनी कहे, चांखो कंत उदंत ॥
गत दिन रात आगल कथा, तव महबल पभणंत ॥

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंकमां, थयो व्यंतर तेह ॥ २ ॥ ते व्यंतर इहां अंबमां, वसिउं मुज जाग्येण ॥ गिरिथी पमियो वचन वदे, उंलखियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें मुजनें ग्रही, बोल्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म बीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं ति णें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वी ती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनकुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजा ण रे ॥ थावो अम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उठीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचवुं, कहे तुं मुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं, जिम जग नृपनी छाप रे ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ तव हुं बोल्यो ते प्रतें, सुण बांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ पण बांध्यो में जेहवो, तेहवो हुये सुकयछ रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमछ रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ बोल्यो सुर सुण मित्रजी, ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

चाहे तुजानें, कहे तो द्युं हवे शीख रे॥मु०॥६॥ सें चांख्युं एह एटले, नहिं विरमे जई आप रे ॥ तो एहनें सम जावशुं, करी कूडो उपजाप रे॥ मु० ॥ ७ ॥ विषम प्रयोजन ताहरे, आवी पडे कोई जेथ रे॥ संजास्यो हुं ततक्षणें, करशुं सांनिध्य तेथ रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ इंम कहेतो सुर किहांथकी, लाव्यो एक करंड रे ॥ सरस रसाल तणे फलें, जरीयो तेह अखंड रे ॥ मु० ॥ ए ॥ मुजनें तेह करंडशुं, सुरवर आप उपाडी रे॥ मूकयो पुरनें उपवनें, जिहां जिन मंदिर आडी रे ॥ मु० ॥ १० ॥ सुर बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे ॥ अदृश्य गुप्तिक रूपें जिहां, आवीश हुं तुज साथें रे ॥ मु० ॥११॥ जे जे घटशे काम त्यां, करशुं छाने हुं तेह रे ॥ शीख दियो इंम मुजानें, देवें आणी सनेह रे ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ थाप्यो तेह करंडीउं, नृपति आगलें जाई रे ॥ लेई अनुज्ञा तेहनी, वेगे हुं इहां आई रे ॥ मु० ॥ ॥ १३ ॥ एहवे तेह करंडथी, कडकडतो स्वर क्रूर रे॥ उछलियो बलियो महा, पडछंदे जरपूर रे ॥ मु० ॥ ॥ १४ ॥ खाउं पहेलो हुं नृपनें, के धुर खाउं प्रधान रे ॥ एक जणनें बिहुं मांहिथी, नहिं मूकुं हुं निदान रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पडि

यो चिंतानी जाल रे ॥ थरथरतो कहे सचिवनें; कर माहारी संभाल रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ सिद्ध पुरुष कोई सिद्ध ए, गूढातम विपरीत रे ॥ डुष्कर काम करे हसी, अण चिंत्युं केणी रीत रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ फल मिशें एह करंमसां, आणी कांइ वलाय रे ॥ आपणनें क्षयकारिणी, वलगाम्री कुपलाय रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ सचिव कहे नृपनें प्रभु, एहनें मुख दियो धूल रे ॥ इम कहीनें वारी जतो, आवे करंमनें मूल रे ॥ मु० ॥ १ए ॥ क्रूर सुणे रव तेहनो, जिम यमडुंडुभिनाद रे ॥ कर्ण विवर विष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ मु० ॥ २० ॥ फल ग्रहेवा तस ढांकणुं, ऊघाम्रे ततकाल रे ॥ वज्रा नल सरखी तदा, प्रगट हुई माहाजाल रे ॥ मु० ॥ २१ ॥ भग भग शब्दें गाजती, प्रत्यक्ष जेम भग धाम्रि रे ॥ तेह करंमथी नीसरी; ऊरध नाग धूमाम्रि रे ॥ मु० ॥ ॥ २२ ॥ डुष्ट प्रधाननें तेणीयें, जाल्यो जेम पतंग रे ॥ क्षणमां जीवो त्यां हुर्ज, निर्जीवित दहि अंग रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांठें सलगिउं, अगनि म हा डुरवार रे ॥ बीहितो नृप तव सिद्धनें, तेमावे तिणि वार रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां, दीसे ठे कांइ कीध रे ॥ इम धारी नृपति कनें, आवे

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा जियो, बोल्यो एम रूरंत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें, त्रिज्वर एह डुरंत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल छांटीयुं, अनल हुउं उपशांत रे ॥ ढांक्यो अंब करंमी उं, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते ह करंमनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शिं दरी, देखी कुण न रूराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें सिद्ध करंमीयो, उघाडी फल लेय रे ॥ विस्मित नृपा दिक जाणी, आपहथु जव देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त व महीपति रूरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥ थापी बीजानें करें, लेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥ जीवानो नंदन वमो, सचिव कस्यो गुण खाणी रे ॥ चोथा खंमनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम ऊगल्यो, एह महाजय सिद्ध ॥ मंत्रीनें जेणें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ ल एहनां, लहेशो तुं प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं महीपति, जेह करे नय पोष ॥ नासे आपद तेहथी, वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणो,

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय सयंवरा, निरखी नृप नय छेक ॥ ४ ॥ तेह भणी नय गोचरें, निगम विचारी गुझ ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महि ला सुझ ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए चयण ॥ अनय रसें कोपावको, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पडीयो विमासण मांहिं रे ॥ नारि रस रातो, पेखो ऊपांपल गोचरें होलाल ॥ हियडे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्राहीं रे ॥ करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥१ ॥ मंत्र तंत्रादिक योगना रे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥ साधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह भणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अन्यंत र कोई, दुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कार ज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे ज शीयाला, जोंगो पकशे बापको होलाल ॥ फरि नहीं मा गो सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे कीधी, मलशे नहीं वली ताकनो होलाल ॥ ३ ॥ इंम करे फावशें प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ न हीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

त्रीजुं काम करे हवे रे, तो तुं महिला संभाल रे ॥ आठी ए तुजनें, वचन थकी हुं न कोलीयो होलाल ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखुं सदा रे, पुंठि विना मुज अंग रे ॥ तेमाटे वांसो, देखुं हुं तेहवो करो होलाल ॥ मुज उपर करुणा करी रे, पूरो एह उमंग रे ॥ सुगु णा सोभागी, मानीश पाड इहां खरो होलाल ॥ ५ ॥ नृपनंदन चींते ईस्यो रे, एह स्यो सोंपे काम रे ॥ नृप हसवा सरिखो, कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥ रीशाणो कहे रायनें रे, ए स्यो मांड्यो उधांस रे ॥ ए हथी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नवी होलाल ॥ ॥ ६ ॥ पुंठ जोवे कोण आपणी रे, जो पण होय दक्ष हास रे ॥ ईम कहीनें खांचे, नाळी नृप ग्रीवा तणी हो लाल ॥ उलटी मुख वांकू वल्युं रे, आव्युं ग्रीवानें ठा म रे ॥ ग्रीवा मुख ठामें, आवी रही तव आपणी होलाल ॥ ७ ॥ पूंठ निहालो खंतशुं रे, काम थयुं तुज ठीक रे ॥ नृपति गुण मानो, वचन सुणी ईम तेहवे होलाल ॥ सचिव नवो रोषें भर्यो रे, बोल्यो थई साहसिक रे ॥ सुण धूरत धीठा, लाज नहीं तुज ने हवे होलाल ॥ ८ ॥ जनक हण्यो तें माहरो रे, जीवो नामें वजीर रे ॥ खुनी अन्यायी, वीहितो नहीं

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नूपनें रे, कां दुःख द्ये बे पीर रे ॥ मरकी गलनाकी, कांई मरे वाह्लो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सन्नामां वाधीयो रे, सघलो हालकल्लोल रे ॥ देखी नृप विरुद्ध, लोक मल्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातकी रे, पमियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, वीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे ॥ नूपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें ठवे होलाल ॥ पमती रमती सिरू नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउ होलाल ॥ पति निक्षा अमनें दीउ रे, दातारां शिर उत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताण्यो न खमे तांतुउ होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रूप बनाय रे ॥ सांचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे ॥ मोहन रंगीला, न हीं होय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्षा दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

शे, तो थई छे एटले घणी होलाल ॥ सिद्ध विमासी ए
हवुं रे, बोल्यो एह जो दोट रे ॥ पाये अणुवाणे,
वनमां जिन प्रणमे शुणी होलाल ॥ १४ ॥ श्रीजिन
अजित जुहारीनें रे, पायें आवे आंहिं रे ॥ तो थाशे
साजो, बीजो उपाय नहीं तिश्यो होलाल ॥ असमरथू
पण राजियो रे, कहे हवे चालो त्यांहिं रे ॥ साजो जो
थाउं, तो मुज अजर अछे किश्यो होलाल ॥ १५ ॥
लोक कहे निज पापथी रे, वलगो आवी वींग रे ॥ नृ
पतिनें पूछें, करशे नहीं हवे खोजणी होलाल ॥ रूप
बन्युं जोवा जिश्युं रे, प्रत्यक्ष जिम जोटींग रे ॥ दीसे
छे कोई, खेधें लत पाम्यो घणी होलाल ॥ १६ ॥ पुर
जन जोवा पेखणुं रे, चढिया गोखें धाय रे ॥ तिहां
होडा होडें, ठामें ठामें टोलें मल्यां होलाल ॥ चाल
ण मांडे नृपति रे, पण न पडे वग कांइ रे ॥ जोतां
दुःखदायी, कारण बे वांकां मल्या होलाल ॥ १७ ॥
जो मांडे पग पाधरा रे, तो दीसे नहीं माग रे ॥ लो
चन उपरांठे, लड थडतो पगें आथडे होलाल ॥ अ
वले पग ज्यां संचरे रे, लेतो मारग लाग रे ॥ घरणि त्यां
वाधे, प्रेरण शक्ति विना पडे होलाल ॥ १८ ॥ बिहुं
वातें पुर लोकनें रे, करतो कौतुक दुःख रे ॥ जई आ

ठ्यो पाठो, साले मार कुत्त्योटनी होलाल ॥ लोक स मझु समजाविर्ड रे, थाशे हवे अग्निमुख्क रे॥ चिंते इम बीजी, खांचे नशा शिऊ कोटनी होलाल॥ १ए॥ वइन वलीनें पाधरुं रे, वेतुं पाडुं गाम रे ॥ लागी न हिं वेला, हूर्ड अंतेउर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो मी कहे सिद्धनें रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा ससनेही, जोईयें ते मागो हसी होलाल ॥ २०॥ सि ऊ हवे मागशे इहां रे, चोंपे मलया बाल रे॥ नृपति पासेंथी, अरज करावी तेहशुं होलाल ॥ चोखी चो थी खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ नांखी रस ने ली, कांतिविजय बुध नेहशुं होलाल ॥ २१॥

॥ दोहा ॥

कुमर कहे राणी प्रत्यें, वंछित आप विचार ॥
जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥
गोरमीयां गुणवंतियां, जो देवरावो वाम॥ तो थाकामां प्रीछजो, सरियां मुज लख काम ॥ २ ॥ वचन सुणी राणी सवे, आवी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण त णी, करे कोमि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तर न दीये महीप ति, पाठो कांइ प्रगट्ट ॥ आने कानें काढतो, चिंते एम

निपट्ट ॥ ४ ॥ जाती मलया सुंदरी, राखुं किस जग दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे, जेहथी फवे सदीस ॥५॥

॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
गायशुं राजीमती सतीजी ॥ ए देशी ॥

एहवे अनल उदंक, वाजीशालामांहिं जागीउ जी ॥ उंचो जाल अखंक, दारुण गयणें लागीउंजी ॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिद्धप्रत्यें पभणे इस्युं जी ॥ चोथुं वली मुज काज, एक अछे करवा जिस्युं जी ॥ २ ॥ वारू पाट केकाण, एह बले हयशालमां जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमां जी ॥ ३ ॥ रीज्यो हुं तुज नारि, आजज सोंपुं ए घ रीजी ॥ जोतां जण दरबार, वलीयो मणिमय पाघ री जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, नांखे ए नृप चातस्योजी ॥ पाम्या शीक्षा रोक, तो वली इम कां पां तस्योजी ॥ ५ ॥ अति दुष्टाध्यवसाय, छोके नहीं ए दु र्मतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय, योग्य दीयुं शीक्षा रति जी ॥ ६ ॥ ध्यातो एहवुं त्यांहिं, उछाहें बमणो थई जी ॥ पेसण हुतभुज मांहिं, वाजी शालें उभो जई जी ॥ ७ ॥ मनमां नृपनें आप, निंदे आक्रोशें घणो जी ॥ वांध्यो कोपनें व्याप, इष्ट संभारे आपणोजी ॥

॥ ८ ॥ संजारे तेह देव, करवा सफल मनोरथाजी ॥ झंपावे ततखेव, दीपें पतंग पडे यथाजी ॥ ए॥ हाहा कार करंत, शोक जस्या पुरजन तदाजी ॥ आंसूडे व रसंत, लोचन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो नूप प्रमोद, कुमर झंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य सिद्धराज, अगनिथी नीसरिठे तवेंजी ॥ दीसे जि म सुरराज, आराह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन नूषण धस्यांजी ॥ झलहल ज्यो ति तुखार, अंगें साज जला जस्याजी ॥ १३ ॥ धौ रादिक गतिपंच, (१ धौरितं २ वलितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं) जेदें तुरंग रमाडतोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाडतोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक नूपतिने पालटीजी ॥ मनसां अति आल्हाद, धरतो इम कहे उलटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी नूमि, एह छे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पमियो हुं इहां आज, बीजो तुरं गम ए वलीजी ॥ वलतां सिद्धतां काज, एहवा थया माग टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी अम अंग, रोग

जरा नहीं संक्रमेजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसंग, अमर हुआ विहुं रंगसेंजी ॥ १७ ॥ सांभली वायक एह, राजादिक सवि जूजूआजी ॥ बलवा अगनिमां तेह, पखानें ततपर हूआजी ॥ १९ ॥ जो जो प्रत्यक्ष ख्याल, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हूआ बेहु निहाल, तीर्थ प्रभावें इणी परेंजी ॥ २० ॥ आपणनें इण ठाम, तन होम्यां फल छे बहूजी ॥ धरता मोटी होहांम, आव्या नर पखवा सहूजी ॥ २१ ॥ बोल्यो सिद्ध विचार, रे रे क्षण एक पखीयेंजी ॥ आणो घृत निरधार, अगनि जुगतिशुं पूजीयेंजी ॥ २२ ॥ आण्या घृतना कुंभ, ॐ दह दह पच पच इस्योजी ॥ भणतो मंत्र सदंभ, आहूति द्ये मन उल्लस्योजी ॥ २३ ॥ पहेलो पेशीश आंहिं, हुं इम कही नृप पेशीउंजी ॥ पूंछे सचिव संबाह, जई नृप पासें बेसीउंजी ॥ २४ ॥ कुमरें वार्या लोक, पखता अवर हुताशनेंजी ॥ पखो पखो स्तोक, आववा द्यो नृप सचिवनेंजी ॥ २५ ॥ लागी वार विशेष, राय सचिव किम नावियाजी ॥ वेला तुमनें हो रेख, लागी नहीं जव आवियाजी ॥ ॥ २६ ॥ इम पुरलोकना बोल, सांभलीनें सिद्ध बोलीउंजी ॥ कांरे भूल्या अटोल, अगनि पड्यो कोण

जीवीउंजी ॥ २७ ॥ अगनि पजिउं हुं आज. सुरसा न्निध्ययी नीसस्योजी ॥ बोली सकल समाज, वैर वाल ण रूमो कस्योजी ॥ २७ ॥ फलियो अनय कुवृक्ष, नृ प मंत्रिसुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दक्ष, बोल्या न्न ली आसंत्रिनेंजी ॥ २ए ॥ राज्य निवाहक सिद्ध, हो जो राजा आपणेंजी ॥ इम कही राजा कीध. महो त्सव आरुंबर घणेंजी ॥ ३० ॥ मान्यो जन सिरूरा ज, पाले राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां शिरता ज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३१ ॥ अरुके विषसे काम, लेजे सुरू संजारिउंजी ॥ आजाखी सुर आम, सिद्धें तेह विसर्जिउंजी ॥ ३२ ॥ चोथा खंमनोपंग, मलय चरित्रथी संग्रहीजी ॥ कांतिविजय मन रंग, ढा ल शोलमी ए कहीजी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा

॥ आव्यो देशांतर थकी, तेहवे तिहां बलसार ॥ लेई निरुपम न्नेटणुं, चली आवे दरबार ॥ १ ॥ नृप न्नेटी वेठे तिहां, दीठी मलया बाल ॥ मलयायें पण पेखीउं, सारथपति ततकाल ॥ २ ॥ एक एकनें उंलख्यां, थातां नयणां न्नेट ॥ मलियां शत वर्षांतरें, चतुर न जूले न्नेट ॥ ३ ॥ रूरतो तुरतज उठीउं, आव्यो मंदिर आप ॥

चिंते हैहै आवीयां, उदय महा मुज पाप ॥ ४ ॥ अ हो महोदधि परतरूं, आव्यो एहनें ठोरू ॥ दैवें किम ए नृपशुं, मेली सांधा जोरू ॥ ५ ॥ जे कीधुं में एहनें, अनुचित करण अन्याय ॥ कहेशे ते जो नृपनें, तो मुज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात' प्रणमुं हो प्रिया प्रणमुं पग नाथें करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो हो प्रिय निसुणो जे आव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रिय नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणीयोजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, विधविध हो प्रिय विध विध दुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो हो प्रिय राख्यो ठानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत करतां अभ्यर्थना जी ॥ २ ॥ इणी परें हो प्रिय इणी परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परिकर हो निज परिकरशुं कांठें दीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी हो नृप कीधी क्रियाणें छाप, वांकज हो वरू वांकज तास जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां विमासे आप, सार्थप हो इम सार्थप चिंता लावीयोजी ॥ ४ ॥

छूटण हो मुज छूटण कोई उपाय, दीसे हो नहीं दीसे नहीं कोई आशरो जी ॥ आवे हो वली आवे ठ एक दाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वैरी दोय, परिचित हो मुज परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर समोय, धींगरू हो बल धींगरू वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जीती हो तेह जीती एहनें ताम, ठगण हो मुज ठगण विधि करशे वहीजी ॥ अरूलख हो हवे अरूलख सोवन डाम, परठी हो तस परठी जन मूकूं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ, आण्या हो घर आण्या परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी ठाठ, बूटीश हो हुं बूटीश एह जेदें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो ठगनो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राजवीजी ॥ डुर्गम हो अति डुर्गम तिलक गिरि त्यांहि, जीषण हो जिहां जीषण जिहां रुद्राटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

हवी जनमुखथी कहीजी ॥ पल्ली हो तिण पल्लीपति किम ज्ञाति, जीमें हो वन जीमें मलयानें ग्रहीजी ॥ ११ ॥ आव्या हो तिहां आव्या बेहु नरिंद, निज निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ दुर्जो य हो तेण दुर्जोय भीम पुलिंद, रमतो हो रण रमतो रण बांध्यो ग्रहीजी ॥ १२ ॥ जोतां हो तिहां जोतां मलया बाल, दीठी हो नहीं दीठी नहीं किण थानके जी ॥ वलीया हो नृप वलीया नृप तिण काल, मलियो हो जई मलियो सोम अचानकेंजी ॥ १३ ॥ वीरप हो नृप वीरपनो आदेश, पामी हो वर पामी वर तिस वीनवेजी ॥ सार्थप हो तेह सार्थपनो संदेश, सुणतां हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ आधुं हो ध न आधुं देतो वीर, आखे हो विधि आखे शूर प्रत्ये ह सीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शौंडीर, लोकें हो बहु लोकें वात ग्रहे धसीजी ॥ १५ ॥ नृपकुल हो एह नृपकुल साथें द्वेष, चाल्युं हो नित्य चाल्युं आवे आ पणेजी ॥ बेठो हो कोइ बेठो नूतन एष, तेहनें हो हवे तेहने हवे हणशुं रणेंजी ॥ १६ ॥ सर्वस्व हो तस सर्वस्व लेशुं लूंटि, सार्थप हो वली सार्थपनें मुकावशुंजी ॥ थाशे हो अम थाशे यशनी लूंटि, अरिनो हो वली अरिनो

वाम चूकावशुंजी ॥ १७॥ मंत्री हो इम मंत्री दोय नरेश. करवा हो रण करवा सिऊ नरिंदशुंजी ॥ चाल्या हो धकि चाल्या कटक निवेश, करता हो पथ करता पथ स्वछंदशुंजी ॥ १८ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ वा दल हो दल वादल उंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा मेरा फावताजी ॥ १ए ॥ बे नृप हो हवे बे नृप मूकी दूत, आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा हमो हो नृप साहमो सेन संजुत्त, करवा हो रण क रवा रसमां आवशेजी ॥ २० ॥ चोथे हो एह चोथे खंमें ढाल, नांखी हो इम नांखी सत्तरमी नावथीजी ॥ सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य आवे कांतें सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरप शूर बन्ने मली, शीखावी अदनूत ॥ सि ऊ नरेसर उपरें, मूके डुर्द्दम दूत ॥ १ ॥ अवसरविद वाचाल मुख, साहसिक निलोंज ॥ स्वामीनक्त हित मग कथक, परखद मांहे अक्षोन्न ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी दीरघगति, सर्वसह मतिवंत ॥ नीति निपुण ग्राहक पिशुन, (शत्रुनो चाकिर्ज) ए गुण दूत वहंत ॥

॥ ३ ॥ असवारस्यो केकाण रथ, पहेस्यो जाव ऊलिम्म ॥ सिद्धराय भवनांगणें, जइ पोहोतो जालिम्म ॥ ४ ॥ द्धारपाल नृप वीनवी, दीधो भवन प्रवेश ॥ करी स लाम सिद्धरायनें, भांखे इम संदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ उदया ते पुररो मांरुवो रे, गढ अरबुदरी जान महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीठाणनो राजीउ रे, शूरपालण शूरपाल ॥ महाराजा ॥ दम दांतोने फोज लइनें रुफेजी आवे ॥ चं ड्रावती नगरी धणी रे, वीरधवल ठोगाल महाराजा ॥ द० ॥ १ ॥ ए बेहु एकमतुं थया रे, रूठो तोपर आ ज म० ॥ द० ॥ खेलि रण रस खांतशुं रे, लेशे ताहारुं राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो कियो रे, नामें जे बलसार म० ॥ द० ॥ ते साथें वे भूपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा ता जग व्यवहारीयो रे, सहुनें बांधव तुल्य ॥ म० ॥ ॥ द० ॥ पेशाकसी करता भली रे, मागे नहीं कांइ मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बांधव परें रे, जाणे एहनें भूप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सहेशे प ड्यो रे, देखी दुःखने कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणे जाते आवते रे, कीधो अमशुं नेह म० ॥ द० ॥ तु

म नगरें वासो वसे रे, ते जणी मूको एह म० ॥ द० ॥
॥ ६ ॥ कहेवाऱ्युं महारे मुखें रे, अम नृपें इम तु
ज्ज म० ॥ द० ॥ सत्कारी मूको परो रे, पालो राज्य
सबुज्ज म० ॥ द० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनो
रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ द० ॥ पऱ्यिा पण मुख
के ग्रह्या रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ द० ॥ ७ ॥
वाहाली पाटु गायनी रे, जो आपे पयपूर म० ॥
॥ द० ॥ मीठा माटे खाइयें रे, एवुं पण मासूर म० ॥
॥ द० ॥ ए ॥ धनपति कदिहिक पांतरे रे, तो ते कि
म न खमाय म० ॥ द० ॥ खिरतो पण दल अंगणे
रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ द० ॥ १० ॥ अ
म नृपें बांहें ग्रह्यो रे, ते दुःखीयो किम थाय म० ॥
॥ द० ॥ गूंजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न वसा
य म० ॥ द० ॥ ११ ॥ शूर अछे तुं साहेबा रे, पण
तुज कटक अलप्प म० ॥ द० ॥ सायरमां जिम सा
थुछे रे, थाइश त्यां तुं गरप्प म० ॥ द० ॥ १२ ॥
ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥ द० ॥
एह वातें मत आणजे रे, शंका बल उमहेइ म० ॥
॥ द० ॥ १३ ॥ थाइश मां तुं आकलो रे, भुजबल
नें विशवास म० ॥ द० ॥ बे जण उंषध एकनुं रे, ए

हवो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ म परीश माता मोहमां रे , लंकेश्वर जिम मूंज म० ॥ द० ॥ उ चित हितारथ धारियें रे,आणी मननी सूज म०द०॥१५ ॥ दूत वचन सुणी लहे रे, आव्या सुसरो तात म० ॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणुं रे, बोल्यो फेरवी धा त म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणुं जो नृपनें रे, तो शुं नहीं तुज दोय म० ॥ द०॥ एक एक देह नहीं किश्युं रे, केवल नर नहीं होय म० ॥ द० ॥ १७ ॥ एकलको पण दिणयरु रे, तेज तणो अंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोमिग मे तारातणुं रे, हरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥ ॥ १८ ॥ आफलतो आला लगें रे, मानीमां शिरदार म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे, गाले गजमद चार म० ॥ द० ॥ १९ ॥ तिम हुं जो पण एकलो रे, ते नृप ते बल साज म० ॥ द० ॥ बाणे रणमां ते होनी रे, फेरीश तुजनी खाज म० ॥ द० ॥ २० ॥ वा हलो पण अन्याइयो रे, शीखवीयें सुत आप म० ॥ द० ॥ अन्यायें थाता परू रे, लाज्या नही अद्याप म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नेही ठे नृपनो रे, तो अम केहो लाज म० ॥ द० ॥ अम साथें तो ठेलतां रे, न रशे बाथां आज म० ॥ द० ॥ २२ ॥ न दीयें शिक्षा

दुष्टनें रे, न गणे साजन शर्म्म म० ॥ द० ॥ तो अ म सरिखानें रहे रे, केहो नृपनो धर्म म० ॥ द० ॥ २३ ॥ अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग ॥ म० ॥ ॥ द० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग सार्खें रण जंग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे, पूरीश हुं इणवार म० ॥ द० ॥ जा कहेजे तुज पूठलें रे, आव्यो हुं निरधार म० ॥ द० ॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो वही रे, चोथे खंडे अनुप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए अढारमी रे, कांतिविजय करी चूंप म० ॥ द० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, बहि मंडपमां आय ॥ ढका तिहां संग्रामनी, वजडावे सिद्धराय ॥ १ ॥ रणरातो मातो मदें, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मल या कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मल या जणी, दे रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, धरे आप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गजें, रण रंगे शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक विस्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गडगड्या, वागां वड रणतूर ॥ रसिया नाद नफेरिया, अंगि उलट्यो शूर ॥ ५ ॥ उंपां दे करवालने, टोपां कै पहेरंत ॥ तोपां

केता सज्ज करे, धोपां केई धरंत ॥ ६ ॥ गज गाजे हय हेषणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हूउं ब्रह्मंम ॥ ७ ॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा रण खेलाम ॥ रणथंचे जई वागियां, फोजां तणां कमाम ॥ ७ ॥ बे दल आसा साहमां, अमियां आई सबाहिं ॥ तामलिखणपेठा वही, ताम जम रण मांहिं ॥ ए ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कमखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप बे जमे सिमशुं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ उनम बनता महा मद ठवया हाथिया, जेम गिरिवर तमे आई ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढ्यो जेह ते गज चढ्याथी अमे, रथ चढ्यो रथचढ्याथी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरंगधर साथ ऊपटां दीये, पायचर पायगां संग ऊजे ॥ सजे० ॥ २ ॥ वजत शरणाईयां राग सिंधु शिरे, गुहिर निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर जैरव जणी, युद्ध रस निरखवा जई प्रयुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सुणत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यों द्विगुण फूलें ॥ त्रटक त्रटकी पमे कवच जीचां तणां, जेदीयां तिरवण रोमांच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शस्त्र चिलकार ऊबकार जलनो जिस्यो, गाहीयो गयणवर

पुंडरीकें ॥ खड्ग कल्लोल नृपहंस खेले तिहां, फेर न
हीं जलधि रणमां रतीकें ॥ स० ॥ ५ ॥ सुहड वच
नोपरि वचन प्रतिहत करे, सिंहनादें महा सिंहनादं ॥
भुजयुगा फालणे भुज युगा फालता, करत रण नयें
लीला विवादं ॥ स० ॥ ६ ॥ वीर शिरचाल रण चालमां
उत्सुक्या, ऊर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोभी ॥ ज्वलित
मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिसी गग
न थोभी ॥ स० ॥ ७ ॥ करत ललकार हलकार भड को
पिया, चलत धमकारशुं शेष डोले ॥ कर ग्रही ढाल
धुंताल धुंकल रसें, ढयल ढंढाल करवाल तोले ॥ स० ॥
॥ ८ ॥ जाति भुज वीर्य गुण वंश उदभावता, वंदिजन
प्रबल शूरां जगाडे ॥ उमगिया योध बल बोध करि
आपणा, रण तणी सबल बाजी फजाडे ॥ स० ॥
॥ ९ ॥ अश्व खुरताल पडतालथी ऊपडी, खेह अं
बर चढी सूर ढायो ॥ दिशि हुई धूंधली अरुण रंगें
धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥
सगग शर धार वरषण लगी चिहुं दिशें, बगग बरछी
चले अगग गेडी ॥ रणण रणकार भल्ली (फरसी)
तणा वागिया, सिल्ल सुहडाण नाखे उथेडी ॥ स० ॥
॥ ११ ॥ खड्ग खटकार गजदंत ऊपर पडे, जरर

जरह्र झरे अगनि बुंदा ॥ तप तप्या शुंढ सित्कार जल वर्षणें, तुरत शीतल करे ते गयंदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरशुं वैरी सनमुख उछालें ॥ वहत नभ शस्त्र देखी सुर खेचरा, वज्रशंकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ प्रोढ्या सुभट केइ गांजके गगनमां, ऊरध कीधा जि स्या नट्ट वंशें ॥ उभ्भत आकाश आयास विण गृध्र नें, बलि महोत्सव हुउं तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥ अकक अककाट करि छूटीयां शतघनी, धुमल धूआं धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत तग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥ दमक परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, कमक नर को परी खंक फूटें ॥ गमक गेवरि गर्के नालि मुख आह गया, खमक खग खाटकें फलक त्रूटें ॥ स० ॥ १६ ॥ कलह खय काल सरिखो हुउं आकरो, सिद्ध नृप सै न्य नाशुं दिगंतें ॥ थिर करी बल हवे आप समरंग मों, आवियो राय रोषाल खंतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाक तो सुभटनें युद्ध मंर्के तिहां, सिद्ध रणरंग गज बेसी ताजें ॥ विश्व भूषण गजें शूर चढि धाईयो, वीर संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

दल महा पूर्व परिचित तिहां, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नूप हित हेत लागो उपायें ॥ स० ॥ १ए ॥ आवता वैरी हथियार अध मारगें, लेय सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नूपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी अर्द्ध चंद्रास्त्र बाणें करी, शूरनां वीरनां छत्र छेदें ॥ चम चम नेजा धजा मांहिं सूरत बना, तोभियां चिन्ह नृपनां उमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नूप विहुं शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंमे ॥ करत यतना घणी बेहुंना देहनी, समरनो खेल इंम वारु मंमे ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नूप जांखा पड्या चित्त संकल्पता, समर ऊजा रह्या शस्त्र नांखी ॥ खंम चोथे नली ढाल छंग णीशमी, जाति कमखा तणी कांतें नांखी ॥ स० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीन वदन शोकातुरा, जोतां नीची देठ ॥ निरख्या सिद्धें महीपति, नाख्या जाणे वेठि ॥ १ ॥ इंम इंम कारज साधना, करवी ते सुरराय ॥ इंम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिण गाय ॥ २ ॥ बाण मुखें ठवी लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल खो

जरहर झरे अगनि बुंदा ॥ तप तप्या शुंढ सित्कार जल वर्षणें, तुरत शीतल करे ते गयंदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरशुं वैरी सनमुख उछालें ॥ वहत नन शस्त्र देखी सुर खेचरा, वज्रशंकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ ओड्या सुभट केइ गांजके गगनमां, ऊरध कीधा जि स्या नट्ट वंशें ॥ भमत आकाश आयास विण गृध्र नें, बलि महोत्सव हुउं तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥ झमक झमकाट करि बूटीयां शतघनी, धुमल धूआं धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत तग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥ दमक परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, कमक नर को परी खंक फूटें ॥ गमक गेवरि गमें नालि मुख आह णया, खमक खग खाटकें फलक त्रूटें ॥ स० ॥ १६ ॥ कलह खय काल सरिखो हुउ आकरो, सिद्ध नृप सै न्य नागुं दिगंतें ॥ थिर करी बल हवे आप समरंग णें, आवियो राय रोषाल खंतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाक तो सुभटनें युद्ध मंमें तिहां, सिद्ध रणरंग गज बेसी ताजें ॥ विश्व भूषण गजें शूर चढि धाईयो, वीर संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

दल महा पूर्व परिचित तिहां, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नृप हित हेत लागो उपायें ॥ स० ॥ १९ ॥ आवता वैरी हथियार अध मारगें, लेय सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नृपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी अर्द्ध चंद्रास्त्र बाणें करी, शूरनां वीरनां छत्र छेदें ॥ चम चम नेजा धजा मांहिं मूरत वसा, तोडियां चिन्ह नृपनां उमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नृप विहुं शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंडे ॥ करत यतना घणी बेहुंना देहनी, समरनो खेल इम वारु मंडे ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नृप जांखा पड्या चित्त संकल्पता, समर जना रह्या शस्त्र नांखी ॥ खंड चोथे नवी ढाल उग णीशमी, जाति करखा तणी कांतें चाखी ॥ स० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीन वदन शोकातुरा, जोतां नीची देह ॥ निरख्या सिद्धें महीपति, नाख्या जाणे वेह ॥ १ ॥ इम इम कारज साधना, करवी ते सुरराय ॥ इम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिण ठाय ॥ २ ॥ बाण मुखें ठवी लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल खो

जावतो, चढ्यो गगन ततखेव ॥ ३ ॥ पोहवी हेठो ऊतरी, करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पाखती, ते शर थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी लोटेंगणे, मूके लेख तुरंत ॥ सिद्ध नरींद कन्हे वही, फरी आव्यो उमगंत ॥ ५ ॥ चरित निहाली बाणनां, विस्मित हूआ नरींद ॥ देव सगति विण किम हुवे, अचरिज एह अमंद ॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा, खेले खेल कदापि ॥ परमारथ एहनो इहां, किम जाणीशुं आप ॥ ७ ॥ एम कही निज कर ग्रही, तुरत उखेले लेख ॥ जोतो अक्षर मालिका, लहे परम उल्लेख ॥ ८ ॥ लोक सकल मलिया तिहां, सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशंवद पत्र त्यां, वांचे वसुधा कंत ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ थारानें माहारा करहला, वरता नदीने तीर हमीरा ॥ ए देशी ॥

स्वस्तिश्री जिनपद नमी, जयत्या श्रीमती तंत्र ॥ सनेही ॥ शूरप नृप चरणांबुजें, सुत महबल लिखि पत्र ॥ सनेही ॥ १ ॥ कुशल संदेशो पाठवे, छे अमने सुखशात ॥स०॥ तात शरीर नीरोगता, चाहुं हुं दिनरात ॥स०॥ कु० २ ॥ वीरधवल सुसरा जाणी, प्रणति करुं कर जोडि ॥ स० ॥ तात श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोमि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन्न
चिंतनें, कीधुं सबल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
में नुज वीरज दाखीउं, करवा बाल विलास ॥ स० ॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेट्या तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुन्नदैवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांइ विषाद करो
हवे, पउधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख इस्यो
सुणी, पूस्या हर्ष उठाहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक्ष कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ७ ॥ कुमरीशुं सुतरलजी, मलियो महब
ल आइ ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
ड्या महाराइ ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया डुःख
खाणथी, डुहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या
नरक निवासथी, पमतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप इम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विनें साहमा

पगें, दीठा आवत तेण ॥ स० ॥ सहसा हरखें सामो हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि या हेजें हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांहो मांहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम निवोध ॥ स० ॥ कु० ॥ ॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें, गाल्यो विरह हुताश ॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास ॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलुं, तेथी शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वा हालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ कण एक इ ष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ ॥ स० ॥ वैतालिक (जाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर ढील ॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धनृपें निजपुर प्रत्यें, पध राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंट्या निज निज परिक रें, आव्या जवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती दुःख संजारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोला वी सुसरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥ तुरत करावी महाबलें, अशनादिकनी जक्ति ॥ स० ॥ सैनिक सर्व संतोषियां, जूपालें जली युक्ति ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आदें सहु, बेठां सुखमां त्यांहिं ॥ स० ॥ रुद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चित्तमांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २० ॥ सुत आगें जनका दिकें, नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी दुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति नावतो, तनुजानें पजणंत ॥ १ ॥ हे हे नृपकुल ऊपनी, पोषी लाम विलास ॥ रखमी दि शि दिशि रंक ज्यौं, पमी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध दुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि दुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, नही नावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ सूरपति महीपति बोले ए, पमिया मामा मोले ए, खोले ए, निज मन दुःखनी गांठमी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूमो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कस्युं में अण जा एयुं, जल पीधुं ते विण गएयुं, अतिताएयुं, तुज साथें

मैं डुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, खम जो गुणवंती खरो, आफरो, मननो हवे दूरें करो ए ॥ ४ ॥ जित कोपा तुं सुंदरी, था रलियायत गुणजरी, दिलवरी, करीयें ते हियडे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त णां, मलया ते धरी धारणा, कारणां, डुःखनां तुरत विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामां तुज मती, साहस करुणा रात व्रती, धृतिगति, सूरिस शुजकृत तुज न लां ए ॥ ८ ॥ इम महाबल गुण जांखता, नृपादिक यश दाखता, जणकिता, सलहें महबलने तिहां ए ॥ ए ॥ जनक दिक पूछे तिहां, वत्स कहो सुत छे कि हां, लीधो इहां, पापीके जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, छानो किहां किण जछरे, पण खरें, खबर नहीं छे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेमीनें पूछां खरो, ऊतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करतां ते देखाकशे ए ॥ १२॥ ततक्षण सुजटें आणियो, पग बांधीनें ता णीयो, वाणीयो, डुःख पीड्यो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥ कहे रे डुर्मति शुं कस्यो, पुत्र लेइनें किहां धस्यो, जाशे ऊस्यो, किम तुजथी अम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करवुं घ

टसे तुज शिरें, तत्तो करशुं हिज खरें, पण अवसरें, सु त जावा देशुं नहीं ए ॥ १५ ॥ चीहीनो ते कहे तो आ पुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो सूरें करो ए ॥ १६ ॥ ठेस्रो मुज सकुटुंबनें, जो नवि पा मो विटंबनें, तो मुनें, देतां ढेला ठे नहीं ए ॥ १७ ॥ हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, ति ण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला नो झलकतो ए ॥ १९ ॥ नूपादिक सवि हरखीया, पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण नस्यां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरे सी निर धारिनें, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते कहे बल इति थापना, कीधी ठे करी कल्पना, उछापना, चित्त माने ते कीजीयें ए ॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठमी ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठमी, सो दीनारनी दीठमी, ऊथमी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतवज्र नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें ठेसीयो, घरवाखर लूंटी लीयो, जीवित दीयो, निज नाचित

परिपालवा ए ॥ २६ ॥ शूर कहे वरषांतरे, मलया प्रीतमशुं खरे, इणिपुरें, निश्चयशुं दीसे मली ए ॥२७॥ ज्ञानी वचन साचुं मव्युं, वरषांतें डुःख निर्दव्युं, दूरें टव्युं, संकट सघलुं आजथी ए ॥ २८ ॥ राज्य ग्रह्युं कौतूहलें, सिद्ध नृपें भुजनें बलें, ते तिण वेलें, तातज णी आप्युं वही ए ॥ २९ ॥ सकुटुंबा वे महीपति, व हेता स्नेह रसोन्नति, शुभमति, राज काज करता वहे ए ॥ ३० ॥ चोथे खंमें मीठमी, एकवीशमी रस पूर ठी, इठमी, ढाल कही कांतें भली ए ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कालें तेणे समे, करता उग्रविहार ॥ पारस जिनना शिष्य मुनि, चंडयशा अणगार ॥ १ ॥ ते पुरवरने उपवनें, समवसस्या गुरु राज ॥ केवलधर सुर नर नम्या, वींट्या साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी त्रिहु लोकने, पूज्य कृपारस सिंधु ॥ भव अनंत चांखे यथा, रूपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई वीनव्या, विहुं नृपतिनें वेग ॥ पुरजन वृंदे परिवस्या, आवे नृप सतेग ॥ ४ ॥ पंचाभिगमन साचवी, प्रणमी जिननें जेम ॥ धर्मकथा सुणवा बन्हे, बेठा विनयी तेम ॥ ५ ॥

ढाल बावीशमी ॥ वणजारानी देशी ॥

॥ चित्त बूजो रे कांई छांमो मोहनी निंद, जागो वि षयघारिणीथकी, नवि बूजो रे ॥ चि० ॥ एतो विषमो काल पुलिंद, छल जोवे छानो तकी ॥ न० ॥१॥ चि० ॥ थेंतो सांकमे डेरामांही, सूता काल अनादिना ॥ न० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहिं, खोया फोकट केई दिना ॥ न० ॥ २ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, एहमां स्वाद न को अछे ॥ न० ॥ चि० ॥ रहेशो जो लपटाय, पछतावो होशे पछें ॥ न० ॥ ३ ॥ चि० ॥ वर्जो हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ छां मो मैथुन मूर, परिग्रह मूर्छा मति नजो ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी छंमजो ॥ न० ॥ चि० ॥ प्रेम नाव संचार, तजजो द्वेष नमा मजो ॥ न० ॥ ५॥ चि० ॥ कलहने अन्याख्यान, चा ढी रति अरति तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ पर परिवादादान, न करो माया मृषा रजो ॥ न० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि थ्यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ न० ॥ ॥ चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, ठाण अढारह नित्य थी ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जींतो इंद्रिय गाम, मन मां कम्हुं वश करो ॥ न० ॥ चि० ॥ नावो चित्त सुगम,

शील सुरंगो आदरो ॥ भ० ॥ ८ ॥ चि० ॥ परचो योगा भ्यास, अहनिशि भावो भावना ॥ भ० ॥ चि० ॥ मुगति दीये विलास, कारण एता पावनां ॥ भ० ॥ ए ॥ चि० ॥ कत्रिम ए संसार, तन धन यौवन कारिमां ॥ भ० ॥ चि० ॥ जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ भ० ॥ १० ॥ ॥ चि० ॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां ॥ भ० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें आपे दगां ॥ भ० ॥ ११ ॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, एहिज साथें आवशे ॥ भ० ॥ चि० ॥ भोगवशे दुःख आप, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ भ० ॥ १२ ॥ चि० ॥ भुंरू तणुं जिम ठाण, नरभव धर्म विना तिस्यो ॥ भ० ॥ ॥ चि० ॥ सुलहा भवभव प्राणि, धर्म नहीं मलशे इस्यो ॥ भ० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत दुलंभ, मानव भव पुण्यें लही ॥ भ० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सुलंभ, सफल करो हवे ते वही ॥ भ० ॥ १४ ॥ चि० ॥ आवो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आवशे ॥ भ० ॥ चि० ॥ लाख गमे जंजाल, धर्म मारग विच थावशे ॥ भ० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आप, कहेशो पछी जाण्युं नहिं ॥ भ० ॥ चि० ॥ ॥ टालो भव संताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ भ० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ न० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ न० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंरुनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ न० चि० ॥ कांतिवि जय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ न० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ नगवन् मलया जलथकी, ऊखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उत्कंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पन्नणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहुं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ डुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधि मां गजमीन ॥ का० ॥ पमतां नारंरु मुखथकी, अति डुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मस्तनें वांसे पमी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ

॥ का० ॥ गाढें नवपद त्यां जाएयां, श्रवणें सुएया रे, मीनें मनमां तूठ ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहापोह कस्या थकी, मीनें चकी रे, दीठो गत जव आप ॥ का० ॥ ग्रीवा वाली निरखतां, मन हरखतां रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का० ॥ ॥ ४ ॥ जोतां मलया उलखी, पुत्री डुःखी रे, लागो विचारण मीन ॥ का० ॥ हैहै डुःखें अवधरी, एहमां परी रे, डुर्विधिनें आधीन ॥ का० ॥ ५ ॥ मुजथी कांई न नीपजे, नवि संपजे रे, उपकारकनां काम ॥ का० ॥ तोपण मूकुं इहां थकी, रूकुं तकी रे, जिहां होवे वसतीनुं गाम ॥ का० ॥ ६ ॥ यदपि कदाचित् ए वली, डुःखथी टली रे, पामे वल्लज योग ॥ का० ॥ इम चिंति तेणे माछलें, धरी पाछलें रे, मूकी थल संयोग ॥ ॥ का० ॥ ७ ॥ कंधर वाली निरखतो, एहनें कितो रे, डुःख धरतो ऊख राय ॥ का० ॥ नेहें हियरू ऊरतो, जल पूरतो रे, पाछो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥ गतजव देखी जागीयो, सोजागीयो रे, माछो पामी विवेक ॥ का० ॥ फासु आहार आहारतो, मन धारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ए ॥ पूरी ऊख आयुष तिहां, सुगति इहां रे, ऊपजशे लघु कर्म ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, जव थाक

शे रे, आराधि जिनधर्म ॥ का० ॥ १० ॥ सद्गुरु वचनें सद्दहे, साचुं कहे रे, नूपादिक नविलोग ॥ ॥ का० ॥ वेगवती नव सांजली, कहे एम वली रे, अहो अहो नावी जोग ॥ का० ॥ ११ ॥ लोक कहे एक एक प्रत्यें, जूउं मन ठतें रे, पाल्यो जननी प्रेम ॥ का० ॥ दाऊयो पण लोहारिकें, अधिकाधिकें रे, वानी धारे हेम ॥ का० ॥ १२ ॥ मलया चरित्त सुहामणुं, रलियामणुं रे, कहेतां वाधे प्रीति ॥ का० ॥ ढाल त्रेवीशमी ए सही, मन गह गही रे, कांतिवि जय शुज रीति ॥ का० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूठे वली नर राजिउं, जगवन् करुणावंत ॥ मलया महबल पूर्वजव, जांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥ बालायें वली महबलें, श्यां श्यां कीधां कर्म ॥ जेह थकी यौवन समे, लाधां डुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि जणे महीपति सुणो, थिरकरी चित्र बनाव ॥ मलयाने म हबल तणा, जांखुं गत जवजाव ॥ ३ ॥

ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर जलुं, ॥ जिहां पांकु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी ठाण तुज पुरवरें, एक गृहपति हुतो स

मृद्ध रे ॥ प्रियमित्र नामें आपुत्रिउं, धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध रे ॥ धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध, पूरवन्नव केवली, इम नां खे रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ त्रण दयिता तेहने हूती, रुद्रा वली नद्रा नाम रे ॥ त्रीजी तिम प्रियसुंदरी, नामें तस प्रीतिनुं ठाम रे ॥ ना० ॥ २ ॥ बहेन सगी धुरनी बिन्हें, मांहो मांहे धारे नेह रें ॥ बिहुं उपर प्रिय मित्रनें, नवि बेठो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुंदरी साथें पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते बेहु अंगना, पोषे मनमां अति दोष रे ॥ पो० ॥ ४ ॥ प्रियसुंदरी प्रियमित्रथी, बिहुं कलह करे नित्यमेव रे ॥ प्राहिं सोकलडी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें हुतो मित्र रे ॥ प्रियसुंदरी साथें तेणें, मांडी रतिप्रीति विचित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अवलाने करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीठो तिहां, तव जाग्यो कोप अछेह रे ॥ त० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगें कही, तस चरित्र रहस्यनुं तेण रे ॥ पुरबाहिर काढ्यो परो, निष्ठंठी कोप वशेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बोल्या तिहां केइ वाणिया, जाणे तेह गुह्यनी वात रे ॥ नहीं ए अजाणी अमथकी, पण न करुं कोइ परतां

त रे ॥ प० ॥ ए ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, विरला कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनवदन जांखुं करी, नाठो दिशि धारी एक रे ॥ दुर्वह अटवी मां पड्यो, जूख्यो वली तरस्यो छेक रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ पार लह्यो अटवी तणो, त्रीजे दिन तेणे नेठ रे ॥ आव्यो वही एक गोकुलें, दीठा पशुपालक देठ रे ॥ दी० ॥ १२ ॥ महिषी कुल वन चारता, वेगा तरु बा या ठाम रे ॥ जोजननो अरथी धसी, आव्यो तेह पा सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया, आपे पय महिषी दोहि रे ॥ पामर जन पण आचरे, करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त णुं जाजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ वे समीप सरोवरें, शीतल जल थानक केय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ पंथे वहेतो अनुक्रमें, चिंते चित्त एम सुहव रे ॥ कोइकने आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयह रे ॥ हो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम सामुहो, मलीयो मुनि पुण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन टाणे आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ प्रतिला

नी एह साधुनें, सारुं मुज वंछित काज रे ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ धारी मनशुं एहवुं, कर जोमी आगल आय रे ॥ पन्नणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध अछे मुनिराय रे॥ प० ॥ १९ ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो फासु पय एह रे ॥ द्रव्यादिकनी शुद्धता, निरखे मुनि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ बांध्युं अनर्गल ना वथी, मदनें शुन्न कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी आवियो, सरपालें लई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप कृतारथ मानतो, पीवे पय शेष तिकोय रे ॥ विषम तटें सरोवर तणे, जल पीवा बेठो सोय रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ पग लपट्यो तिहांथी खशी, पमियो जल ऊंमे जाय रे ॥ मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥ म० ॥ २३ ॥ विजय नरेशरने घरें, सुत रत्न पणे उत्पन्न रे ॥ कंदर्प नामे थापियो, तस तात मरण संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो आक्रमी, थई बेठो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खंमें ए कही, कांतें चोवीशमी ढाल रे ॥ कां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं प्रियमित्र त्यां, विलसंतो एकतान ॥ रुद्रा नद्रा नारिशुं, बांधे वैर निदान ॥ १ ॥ अन्य दिनें

प्रिय मित्रने निज ललनां लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय नें टवा, चाल्यो सपरीवार ॥ २ ॥ पंथें वहेतो अधमगें, आव्यो ज्यां वरु हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे त्यां निज डेठ ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अशुभ सुकृत ए मुंरु ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अशुभ अखंरु ॥ ४ ॥ इम कहेती प्रियसुंदरी, जन वाहन थोभारु ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रांरु कुहारि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जेसोदानें गोरीसें ढोला, पनीरे नगारारी ठोर ढोला, जाग मजा जे रे रणसिंघ जागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने इहां हांजी, परिसह मोटो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग्ग ठावे ॥ त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नड उससियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥ चि० ॥ १ ॥ पद अंगुष्ठ नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्यान महोदधि लहेरमां हांजी, झीले मुनि अविकार हांजी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं बाकरी हांजी, जत्तो ए इंठ मांकि हांजी, कहेती एहवुं रे, कोपी मठराली ॥ कुमतें व्यापी रे, आचरणें काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

सेवक प्रत्यें हांजी, मर्यादा वट बांधि हांजी ॥ क० ॥ ३ ॥ साहमां ए इटवाहथी हांजी, जारे लाव हुताश हांजी, ए पापीनें ऊांजियें हांजी, जिम होये अशुन्न विनाश हांजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल एहनें हुवे हांजी, फीटे वली अहंकार हांजी, सुंदरी सेवक एहवां हांजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे में चरणे पाडुका हांजी, पहेरी वे नहीं आज हांजी, इटामां कुण जायशे हांजी, विषम थलें विण काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदाग्रह एहवो हांजी, चालो आगें सदीस हांजी, वचन सुणी पीउ दासनां हांजी, बोल्यो चढावी रीश हांजी ॥ क० ॥ ७ ॥ कहेतां एहवुं रे, कोप्यो मठरालो ॥ कुमतें व्याप्यो रे, आचरणें कालो ॥ अहो सेवक सुंदरी तणा हांजी, बांध्यो वस्त्रशुं पाय हांजी, नूमी जिहां लागे नहीं हांजी, वली कंटक नन्न जाय हांजी ॥ क० ॥ ८ ॥ वाहनथी प्रियसुंदरी हांजी, ऊतरे हेठी तुरंत हांजी ॥ मुनिवर पासें आइनें हांजी, निठुर इम पन्नणंत हांजी ॥ क० ॥ ए ॥ इण अपशुकनें अमतणो हांजी, कदिमत होजो वियोग हांजी ॥ विरह हजो ताहरे सदा हांजी, वाहालानो वली सोग हांजी ॥ क० ॥ १० ॥

पाखंमी तुं पापीउ हांजी, राक्षसनो अवतार हांजी ॥ सब जयंकर सत्वनें हांजी, कुजंग तुज आकार हांजी ॥ क० ॥ ११ ॥ निठुर इम आक्रोशथी हांजी, तप सीनें त्रणवार हांजी, पाषाणे करी आहणे हांजी, करती कोप अपार हांजी ॥ क०॥ १२ ॥ उंघो मुनिना हाथ थी हांजी, ऊमपी लीये निरलज्ज हांजी ॥ निज वाह नमां थापीनें हांजी, टाले कुशुकन कज्ज हांजी ॥ क० ॥ ॥ १३ ॥ कुशुकन फल एहनें हुउ हांजी, चालो ह वे निहचिंत हांजी ॥ इम कहेतां परिवारनें हांजी, सुखें दंपती पंथे वहंत हांजी ॥ क० ॥ १४ ॥ यक्ष जवन पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हांजी, बेग करजोमी बिन्हें हांजी, सारे विधिशुं सेव हांजी ॥ क० ॥ १५ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, तस घर दासी एक हांजी ॥ एहवुं बोली रे, सुंदरी सुगुणा ली ॥ सुमतें व्यापी रे, आचरणा वाली० ॥ कर जोमी दंपती प्रतें हांजी, समजावे इम छेक हांजी ॥ए० ॥ १६ ॥ पापकरम बांध्युं सहा हांजी, आज तुमें त्रिण काज हांजी, उपशम घर तेहवो घणुं हांजी, संताप्यो ऋ षिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो को क रे हांजी, एहवा रुजिनी जेह हांजी ॥ इहजव परजव

मां लहे हांजी, दारिद्र दुःख अछेह हांजी ॥ ए० ॥ ॥ १८ ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमां हांजी, वेष कह्यो वंद् नीक हांजी, आदर करतो वेषनें हांजी, आणे मुगति नजीक हांजी ॥ ए० ॥ १९ ॥ दासी वचनें तेहवां हांजी, पाम्यां ते प्रतिबोध हांजी॥दुर्गति दुःखथी बीह नां हांजी, थरक्या थई गतक्रोध हांजी ॥ ए० ॥ २० ॥ पछतावो करता हीये हांजी, ऊरतां लोचन नीर हां जी, दीन मना थइ आपने हांजी, नींदे वली वली धीर हांजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रशंसता हां जी, पाछां आवे धाम हांजी, तेहिज मुनिपासे जइ हांजी, वंदे पग शिर नाम हांजी, ॥ ए० ॥ २२ ॥ चो था खंड तणी हुई हांजी, ए पणत्रीशमी ढाल हांजी, कांति कहे धन्य ते नरा हांजी, मन वाले ततकाल हांजी ॥ ए० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो धर्मध्वज आज हुं, पाछो फरी पामेश ॥ तोहिज ए थानक थकी, काउस्सग्ग पारेस ॥ १ ॥ क री प्रातज्ञा एहवी, तिमहीज उभो तेह ॥ राग दोष परिणति तजी, पेठो उपशम गेह ॥ २ ॥ गुण निरखी संयम तणा, स लहे दंपती तास ॥ धर्मध्वज पाछो द्रि

ये, करता स्तुति अभ्यास ॥ ३ ॥ निजकृत कुचरित चेष्टना, संभारी सवि राग ॥ गदगद कंठें वीनवें, ध रतां दुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
ल्योजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
मारा लालजी ॥ वारीहो दक्षिणरी हो
राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो थांशु कीधी जेरू मह्वारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो जाउं नामणें साधुजी ॥ राज रूमी नांति हो आदरी, कोप नाख्यो दूरें फेमी॥ मा० ॥ १ ॥ मेंतो थारी क्रोध हो अवगना, पमीयां मोहें बेहु आप ॥ मा० ॥ नव जप ग्राही इहां आकरुं, अलवें बांध्युं नुरुं पाप ॥ मा० ॥ ॥ २ ॥ खमजो मह्वोटी एह ।वराधना, करुणामें रूमे म नवालि ॥ मा० ॥ ताता कूता पूठें हो जो नसे, पण गज न पमे तेहने ख्याल ॥ मा० ॥ ३ ॥ जंबुक जनो कूके हो रोशमां, जोरे सोरें मुखमानें पास ॥ मा० ॥ तोही जो ही मातो हो केसरी, मांमे नहीं हणवानो क्यास ॥ मा० ॥ ४ ॥ दोषें पोष्यो नारी हो आतमा, थाशे केहा असचा हवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीयें, दू

मां लहे हांजी, दारिद्र दुःख अछेह हांजी ॥ ए० ॥
॥ १८ ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमां हांजी, वेष कह्यो वंद
नीक हांजी, आदर करतो वेषनें हांजी, आणे मुगति
नजीक हांजी ॥ ए० ॥ १९ ॥ दासी वचनें तेहवां
हांजी, पाम्यां ते प्रतिबोध हांजी॥दुर्गति दुःखथी बीह
नां हांजी, थरक्या थई गतक्रोध हांजी ॥ ए० ॥ २० ॥
पछतावो करता हीये हांजी, झरतां लोचन नीर हां
जी, दीन मना थइ आपने हांजी, नींदे वली वली
धीर हांजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रशंसता हां
जी, पाछां आवे धाम हांजी, तेहिज मुनिपासे जइ
हांजी, वंदे पग शिर नाम हांजी, ॥ ए० ॥ २२ ॥ चो
था खंड तणी हुई हांजी, ए पणवीशमी ढाल हांजी,
कांति कहे धन्य ते नरा हांजी, मन वाले ततकाल
हांजी ॥ ए० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो धर्मध्वज आज हुं, पाछो फरी पामेश ॥
तोहिज ए थानक थकी, काउस्सग्ग पारेस ॥ १ ॥ क
री प्रतिज्ञा एहवी, तिमहीज उभो तेह ॥ राग दोष
परिणति तजी, पेठो उपशम गेह ॥ २ ॥ गुण निरखी
संयम तणा, स लहे दंपती तास ॥ धर्मध्वज पाछो दि

टां जेथी पातक जाल ॥ मा० ॥ ५ ॥ पारी काउस्सग्ग
त्यां हो इम कहे, कोपां जो में एम अकज्ज ॥ भोला प्रा
णी, भारी हो संयमनां हो लीजें भामणां प्राणीजी० ॥
भावे कोई नाहीं हो लोकमां, थाशे साधु धरम शत
खंड ॥ भो० ॥ ६ ॥ थेंतो खेलो शुद्ध विवेकशुं, पालो
रूडो जिननो धर्म ॥ भो० ॥ छांडो दूरें गाढी ए मूढता.
छेदो भवनां पोषक कर्म ॥ भो० ॥ ७ ॥ पामी सूधी शि
क्षा हो साधुथी, श्रद्धा आणी साचे चित्त ॥ भो० ॥ बार
व्रत भावें हो उच्चर्यां, समकित शुद्ध जाचाचि चित्त ॥
भो० ॥ ८ ॥ भक्तें पानें मुनिने आमंत्रिनें, आव्यां गेहें
दंपती हर्षे ॥ भो० ॥ लीना भीना सार संवेगमां, नाखी
मनथी कुमति निकर्ष ॥ भो० ॥ ९ ॥ आवे पुरमां साधु
ते गोचरी, भमतो भमतो घर घर बार ॥ भो० ॥ तेहनें
गेहें आव्या पुण्यथी, देहाधारी उपशम सार ॥ भो०
॥ १० ॥ निरखी बेहु साधुनें हरखियां, मानें आतम
नें सुकयछ ॥ भो० ॥ फासु आपे हो असना भावशुं,
दंपति मनमां रीजी तछ ॥ भो० ॥ ११ ॥ पाले
बारे व्रत त्यां हो निरमलां, मिथ्यामत अलगो त
छोड ॥ भो० ॥ चोथे खंडें चावी छवीशमी, कांतें भां
खी ढाल मन कोड ॥ भो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुडा नडा नारिनें, शोक्य अने पिउ साथ ॥ म
हा कलह एक दिन हुउं, तेणें निभ्रंछी नाथ ॥ १ ॥
शोक्य धरम जगमां निपख, साले साल समान ॥ स
हे मरण पण नवि सहे, शोक्योमां अपमान ॥ २ ॥
धिग धिग जीवित आपणुं, जनम निरर्थक कीध ॥
कलह टले नहीं को दिनें, डुहग पणे पिउ दीध ॥ ३ ॥
यथाशक्ति दानादिकें, कीधां परनव कज्ज ॥ मरण श
रण हवे आदरी, नांखां डुःखशिर रज्ज ॥ ४ ॥ एक
मनी बे बेहेनकी, चिंती एम एकांत ॥ वनें जई कूवे
पकी, करवा डुःख विश्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ नायतानी देशी ॥

॥ रुडा मरण तिहां लही, जयपुर नृप श्रीचंद्रपाल
रे लाल ॥ तेहनें घर पुत्री पणे, थई कनकवती इति
बाल रे लाल ॥ ॥ १ ॥ नांखे गत नव केवली, निसुणे प
रषद धरी कान रे लाल ॥ वैर न करशो केहथी, जो
होय हियके कांई शान रे लाल ॥ नां० ॥ २ ॥ वीरध
वल इणे राजिये, परणी ते प्रेम रसेण रे लाल ॥
नडा मरी थई व्यंतरी, बीजी परिणाम वशेण रे ला
ल ॥ नां० ॥ ३ ॥ नमती ते वन व्यंतरी, एकदिन

टां जेथी पातक जाल ॥ मा० ॥ ५ ॥ पारी काउस्सग्ग त्यां हो इम कहे, कोपां जो में एम अक्रूर ॥ जोला प्राणी, वारी हो संयमनां हो लीजें जामणां प्राणीजी० ॥ जोवे कोई नाहीं हो लोकमां, थाशे साधु धरम शत खंड ॥ जो० ॥ ६ ॥ थेंतो खेलो शुद्ध विवेकशुं, पालो रुडो जिननो धर्म ॥ जो० ॥ ठंडो दूरें गाढी ए मूढता. छेदो जवनां पोषक कर्म ॥ जो० ॥ ७ ॥ पामी सूधी शिक्षा हो साधुथी, श्रद्धा आणी साचे चित्त ॥ जो० ॥ बार व्रत जावें हो उच्चस्यां, समकित शुद्ध जाचाचि चित्त ॥ जो० ॥ ८ ॥ जक्तें पानें मुनिने आमंत्रिनें, आव्यां गेहें दंपती हर्षें ॥ जो० ॥ लीना जीना सार संवेगमां, नाखी मनथी कुमति निकर्षे ॥ जो० ॥ ए ॥ आवे पुरमां साधु ते गोचरी, जमतो जमतो घर घर बार ॥ जो० ॥ तेहनें गेहें आव्या पुण्यथी, देहाधारी उपशम सार ॥ जो० ॥ १० ॥ निरखी बेहु साधुनें हरखियां, मानें आतम नें सुकयड ॥ जो० ॥ फासु आपे हो असना जावशुं, दंपति मनमां रीजी तड ॥ जो० ॥ ११ ॥ पाले बारे व्रत त्यां हो निरमलां, मिथ्यामत अलगो तछोरु ॥ जो० ॥ चोथे खंडें चावी छवीशमी, कांतें जांखी ढाल मन कोड ॥ जो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुङा नङा नारिनें, शोक्य अने पिउ साथ ॥ म
हा कलह एक दिन हुउ, तेणें निर्भृंडी नाथ ॥ १ ॥
शोक्य धरम जगमां निपख, साले साल समान ॥ स
हे मरण पण नवि सहे, शोक्योमां अपमान ॥ २ ॥
धिग धिग जीवित आपणुं, जनम निरर्थक कीध ॥
कलह टले नहीं को दिनें, डुहग पणे पिउ दीध ॥ ३ ॥
यथाशक्ति दानादिकें, कीधां परजव कज्ज ॥ मरण श
रण हवे आदरी, नांखां डुःखशिर रज्ज ॥ ४ ॥ एक
मनी बे बेहेनमी, चिंती एम एकांत ॥ ढानें जई कूवे
पमी, करवा डुःख विश्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ नायतानी देशी ॥

॥ रुङा मरण तिहां लही, जयपुर नृप श्रीचंड्पाल
रे लाल ॥ तेहनें घर पुत्री पणे, थई कनकवती इति
बाल रे लाल ॥ ॥ १ ॥ जांखे गत जव केवली, निसुणे प
रषद धरी कान रे लाल ॥ वैर न करशो केहथी, जो
होय हियडे कांई शान रे लाल ॥ जां० ॥ २ ॥ वीरध
वल इंणे राजिये, परणी ते प्रेम रसेण रे लाल ॥
नङा मरी थई व्यंतरी, बीजी परिणाम वशेण रे ला
ल ॥ जां० ॥ ३ ॥ जमती ते वन व्यंतरी, एकदिन

पुर पृथिवीगाण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रि यसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ ना॑० ॥ ४ ॥ देखी वैर संजारियुं, कोपें कलकलती चित्त रे ॥ लाल ॥ सुतां बिहुं ऊपर जई, नाखे निशिमां घरजिंति रे लाल ॥ ना॑० ॥ ॥ ५ ॥ शुन्न परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ ना॑० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते, हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी, तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ ना॑० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परजवें जे बांध्युं वैर रे लाल ॥ रुद्रा जद्रा नारिशुं, तस फल इहां लाधां घेर रे लाल ॥ ना॑० ॥ ८ ॥ पूरव वैर संजारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस सांके उद्यम आण रे लाल ॥ ना॑० ॥ ए ॥ पुण्य प्र जावें एहनें, न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूतो निशि देखी रहें, करती उपसर्गह छुष्ट रे लाल ॥ ॥ ना॑० ॥ १० ॥ वस्त्र विजूषण कुमरनां, हरियां इणे क्रोधें व्याप रे लाल ॥ वट कोटरनां मूकीयां, लाधां ते कुमरनें आप रे लाल ॥ ना॑० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलननें पारिखे, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख

सीपुंज मनोहरू, सुरवनमाला अनुकार रे लाल ॥ ॥ जां० ॥ १२ ॥ सूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह रियो निशिमांहिं रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी, संचारी वैर अथाह रे लाल ॥ जां० ॥ १३ ॥ गतज व बहिननी प्रीतथी, थाप्यो जई कनका कंठ रे लाल ॥ कोसी जर्गे पण रस दीये, है विषमी प्रेमनी गंठ रे लाल ॥ जां० ॥ १४ ॥ चोथे खंडे सुंदरू, थई सत्तावी शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी रधवल नृपाल रे लाल ॥ जां० ॥ १५ ॥

दोहा

॥ इणे अवसर विस्मित हीये, वीरधवल नृपाल ॥ पूछे इम केवली प्रत्यें, थापी करतल भाल ॥ १ ॥ स्वयंवर संबंध विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो नहीं मलया प्रत्यें, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हसे कुमर कुमरी मनें, निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र विचित्र ते, भांखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमर मली पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें नव वैर थो, विरच्यो कूड प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें, कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक गुरुनी कथा, भांखे सुगुरु समर्थ ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ जीरे जीरे स्वामी ॥
॥ समो सस्या ॥ एदेशी ॥

॥ वचन सुणी केवली तणां, बोल्या परषद लोको रे ॥ कंदल कंद वधारवा, विष जलधर जोको रे ॥ १ ॥ धिग धिग चित्त नारी तणुं, अनरथ फल आपे रे ॥ कुमति कदाग्रह पोषीनें, रस रीतें उठापे रे ॥ धि० ॥ २ ॥ कहे वली आगें केवली, महबल निशि मांहीं रे ॥ व्यंतरीयें हणवा जणी, अपहारयो उछाहीं रे ॥ धि० ॥ ॥ ३ ॥ महबल मूठी आहणी, नागो विकराली रे ॥ विषम चरित्ता व्यंतरी, न करे वली आली रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ सेवक सुंदर ते मरी, थयो जूत उदंको रे ॥ बाहिर पुहवीगणने, ते वडमां प्रचंडो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जमतो महबल विधिवशें, आव्यो वडतरु हेठ रें ॥ ते जूतें तिहां उलख्यो, निरखी गतजव देठ रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ वड डालें पग एहना, बांध्यो माथे नीचे रे ॥ जिम धरणी अडके नहीं, कंटक नवि खुंचे रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ वचन संजारी एहवुं, प्रियमित्रनुं तेणें रे ॥ करवा पीडा कुमरनें, संच मांड्यो एणें रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ शवना मुखमां अवतरी, इम बोल्यो हसंतो रे ॥ मूढ हसे कांइ मुजानें, देखी बांध्यो एकंतो रे ॥ धि० ॥ ९ ॥

तुं पण एहिज वक्तलें, आगामिणी रातें रे ॥ बंधाशे ऊंचे पगें, नीचे शिर थातें रे ॥ धि० ॥ १० ॥ सहेशे बहु डुःख पापथी, टांग्यो जिम चोर रे ॥ तेपण ते हिज महबलें, सह्यां डुःख कठोर रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ रुडायें एकण दिनें, लोनें लही लागो रे ॥ चोरी पि उनी मुड्रिका, गतजवमां आगो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ मुड्रा सुंदर सेवकें, दीठी लेतां छाने रे ॥ जोतो पियु मुड्रा प्रत्यें, समजाव्यो शानें रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ रुड्रा पासें मुड्रिका, दीठी में बे जातें रे ॥ मांगी लीयो इम हलफल्या, आकुल कांइ थातें रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ व चन सुणी सुंदर तणा, रुड्रा मन रूठी रे ॥ सुंदर सा थें चोरटी, लक्वानें ऊठी रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कोपा कुल बोली इस्युं, जूठ इम कांइ नांखे रे ॥ डुर्मति काप्या नाकना, कांइ शरम न राखे रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ मुड्रा में लीधी किहां, आल एम चढावे रे ॥ मुज स रखी जूंठी नथी, जाणे बे तुं चावे रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ मौन करी सुंदर रह्यो, बीहीतो मनमांहिं रे ॥ प्रिय मित्रें करी ताडना, लीधी मुड्रा त्यांहिं रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ लघुता कीधी शोक्यमां, रुड्रा अपमानी रे ॥ दीन व दन जांखी थई, रही बापडी बानी रे ॥ धि० ॥ १९ ॥

दुर्वचनें बांध्यां जिके, रुड़ा नवें पापो रे ॥ जोगवियां फल तेहनां, कनका थई आपो रे ॥ धि० ॥ २० ॥ सूति पणे ए सुंदरी, जव वैरिणी जाणी रे ॥ कनकवतीनी नासिका, लीधी मुखें ताणी रे ॥ धि० ॥ २१ ॥ हसतां बांधे जे जीवको, तेह रोतां न बूटे रे ॥ अंनरस जा वें परिणमी, चिरकालें ते खूटे रे ॥ धि० ॥ २२ ॥ ढाल कही अमवीशमी, चोथे खंमें ए चावी रे ॥ कांति कहे मन उल्लसी, सुणो श्रोता जावी रे ॥ धि० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कहे सुगुरु नूपति जणी, शेष कथा विरतंत ॥ सावधानता आदरी, परषद सकल सुणंत ॥ १ ॥ म दन धरंतो गतनवें, प्रियसुंदरीशुं राग ॥ कंदर्प नव तेहथी हुउ, मलयाशुं रस लाग ॥ २ ॥ पूर्वे मलया महबलें, लही संकलपें मर्म ॥ दीधुं दान सुसाधुने, पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥ ३ ॥ तेहथी सुकुलादिक तणी, सामग्री लही आंहिं ॥ आराधि विहके नहीं, सुकृत कमाई क्यांहिं ॥ ४ ॥ नवतारक जिनधर्मनें; रीजि नजो अह खीज ॥ उलटो पण सवलो फलें, नूमि पड्यां जो वीज ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठेगणत्रीशमी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रियसुंदरी मुनिवरनें देखी, आप कुलवट कां णि उवेखी रे ॥ हुई साधुनी द्वेषी ॥ बंधु वियोग ह जो नित्य ताहरे, तुंतो दीसे राक्षस जाहरे रे ॥ हु० ॥ ॥ १ ॥ रूपें तुं दीसे जयकारी, प्राण भूतनें दे दुःख भारी रे ॥ हु० ॥ तुज मुख जोतां पुण्य पणासे, म ल मलीन वपुष तुज वासें रे ॥ हु० ॥ २ ॥ ईम क हीनें पाषाण प्रहारें, हण्यो मुनिवरनें त्रण वारें रे ॥ ॥ हु० ॥ महबल पण तिहां मौन करीनें, अनुमोदे दृष्टि धरीनें रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ बहु जणें महापातक बांध्युं, नीबम भव बंधन सांध्युं रे ॥ हु० ॥ पछता वो करतां वली पाछें, बहु खेपव्युं समजी आछें रे ॥ हु० ॥ ४ ॥ खेपवतां दल ऊगर्या जेहवुं, इहां फ ल लहुं तेहथी तेहवुं रे ॥ हु० ॥ त्रिहुं वारें लह्यो बधु वियोगो, न मटे पूरवकृत भोगो रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ कनकाथी लाधो अतिवंको, एणी रात्रिचरनो (राक्ष सीनो) कलंको रे ॥ हु० ॥ वंक विना मूकी वन सी में, रखडी गिरि गहन तटीमें रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ देश विदेश लह्यां दुःख केतां, पार आवे न कहे तेतां रे ॥ हु० ॥ बिहुं जण कर्म तणे अनुसारें, सह्यां संक

ट विविध प्रकारें रे ॥ हु० ॥ ७ ॥ ऊरुपी मुनि रयह रणुं लीधुं, मलयायें तिम वली दीधुं रे ॥ हु०॥ तेहथी पुत्र वियोग लहीनें, फरी पामी संयोग वहीनें रे ॥ हु० ॥ ८ ॥ करी उपसर्ग सुसाधु विराध्यो, अंतें तिम जे आराध्यो रे ॥ हु० ॥ तेहिज हुं छद्मस्थ टलीनें, हुउं केवली तपसीनें रे ॥ हु० ॥ ए ॥ बिहुं जणनो बीजो नव एही, महारे नव एकज तेही रे ॥ हु० ॥ वचन सुणी मनमां कमखाणो, वली बोल्यो इम महीराणो रे ॥ हु० ॥ १० ॥ जगवन् कनकवती तेम असुरी, तव वैर विरोधें प्रसरी रे ॥ हु० ॥ करशे एहुनें वली कांई माठुं, किंवा वैर पुरातन घाठुं रे ॥ हु० ॥ ११ ॥ सूरि जणे असुरी कर ताली, गई वैर विरोध विगाली रे ॥ हु० ॥ कनकवती जमती इहां आवी, विषमो एक दाव उपावी रे ॥ हु० ॥ १२ ॥ एक उपद्रव करशे कोपें, तुज सुतनें वैराटोपें रे ॥ हु० ॥ कनका असुरी दुरित दुरंता, जमशे नव काल अनंता रे ॥ हु० ॥ ॥ १३ ॥ मलया महबलनो नव जांख्यो, एहमां अव शेष न राख्यो रे ॥ हु० ॥ ओगणत्रीशमी चोथे खंडें, कांतें कही ढाल उमंगें रे ॥ हु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलया महबलनुं तिहां, निसुणी चरित विशाल ॥ नव निस्पृह परषद हुई, धरी वैराग्य रसाल ॥ १ ॥ दंपति सहगुरु मुखथकी, निसुणी आप चरित्त ॥ अति वैरागें आदरें, बारे व्रत सुपवित्त ॥ २ ॥ मुनि सेवा करशुं सदा, आणी नक्ति विशेष ॥ ग्रहे अनि ग्रह एहवो, सुगुरु मुखें निर्दोष ॥ ३ ॥ केता संयम आदरे, श्रावकनां व्रत केय ॥ नद्रक नावी केई हुआ, रागादिक नाखेय ॥ ४ ॥ चरित आप संताननां, सांन लीनें बिहुं नूप ॥ नवनिरुक थई ऊमह्या, संयम ग्रहण अनूप ॥ ५ ॥

॥ ढालत्रीशमी ॥ जिनवचनें वैरागीयोहो धन्ना ॥ एदेशी ॥

॥ जिनवचनें वैरागीउ हो राया, इम कहे बे कर जोम ॥ राज्य चिंता करि आपणी हो सामी, तुम पासें मन कोम रे हो मोरा सामी, संयम लेशुं बे ॥ १ ॥ संयम रस पीयूषमां हो सामी, केलि करण मन हुंस ॥ विषयादिक लागे तिसा हो सामी, जेहवा कटुक थल तूसरे ॥ हो० ॥ २ ॥ अवसरविद नाणी कहे हो राया, मा प्रतिबंध करेह ॥ तहत्ति करी ऊठ्या विन्हे हो राया, आव्या निजनिज गेह रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ पो

इणीपरें नृप कीयो हो राया, सूरें महबल राय ॥ सागरतिलकें थापियो हो राया, शतबल अजिषेका य रे ॥ हो० ॥ ४ ॥ वीरधवल वसुधाधवें हो राया, मल यकेतु अजिधान ॥ आप तणे पाटें ठव्यो हो राया, तिहांलिज देई सनमान रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ पद चिंता आ प आपणी हो राया, कीधी जनपद हेत ॥ संयम ले वा संचरे हो राया, निज निज नारी समेत रे ॥ हो० ॥ ॥ ६ ॥ ते केवली पासें जई हो राया, संयम ल्ये श्री कार ॥ हवे हितशिक्षा ग्रहे हो साधु, चरण करण गु णधार रे ॥ हो सोरा साधु, संयम पाले बे ॥ ७ ॥ संयम दूषण टालवा हो साधु, शम दम शौच पवित्र ॥ तृण मणिनें सरिखा गणे हो साधु, गणे समा रिपु मित्र रे ॥ हो० ॥ ८ ॥ गुरु पासें हुआ अज्यसी हो साधु, द्वा दश अंगी जाण ॥ ठठ अठम आदें घणां हो साधु, करता तप शुन्न जाण रे ॥ हो० ॥ ए ॥ महासती पासें ठवी हो साधु, नृपराणी देइ दीख ॥ सामायिक आदें ग्रहे हो साधु, शिवपद साधन शीख रे ॥ हो० ॥ १० ॥ इम केताइ तिहां रही हो साधु, उपगारी गुरु राय ॥ विहार करे वसुधा तलें हो साधु, बिहुं मुनि सेवे पाय रे ॥ हो० ॥ ११ ॥ शोषी तन तप आकरे हो साधु,

सघलां ते व्रत पाल ॥ सुरलोकें थया देवता हो साधु, संलेषण संभालि रे ॥ हो० ॥ १२ ॥ महाविदेहें सिजशे हो साधु, कर्मतणो करी नाश ॥ अक्षय अव्याबाह नुं हो साधु, लहेशे पद सविलास रे ॥ हो० ॥ १३ ॥ चोथे खंडें त्रीशमी हो साधु, ढाल कही अभिराम ॥ कांति विजय कहे माहरो हो साधु, ते मुनिने होजो प्रणाम रे ॥ हो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भगिनी पति भगिनी प्रत्यें, आपूछी अति प्रीति ॥ आवे आप पुरें वही, मलयकेतु वरु रीति ॥ १ ॥ सागर तिलकपुरें ठवी, सेनानी निर्भंग ॥ महबल आवे निजपुरें, शतबल सुत लेई संग ॥ २ ॥ पाले राज्य महाबली, गाले अरियण मान ॥ सेवे श्री जिन धर्मनें, सकुटुंबो महिराण ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ मयणरेहा सती ॥ ए देशी ॥

॥ ते व्यंतर साहायथी रे हां, महबल देश अनेक ॥ साधे महाबली ॥ श्रीजिन वचनां धर्मनी रेहां, करे महोन्नति एक ॥ सा० ॥ १ ॥ पुरपाटण संबाहगां रेहां, थापी जिण प्रासाद ॥ सा० ॥ करे भक्ति मुनिवर तणी रेहां, छंडी पंच प्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥ वी

जो सुत महबल तणो रेहां, हुउ सहसबल नाम ॥ सा० ॥ वर लक्षण गुण सायरू रेहां, वंश वधारण मान ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकदिनें रयणी समे रेहां, मह वल मलया नारि ॥ सा० ॥ श्लोक पुरातन चित्त धरे रेहां, अन्वय अर्थ विचार ॥ सा० ॥ ४ ॥ विधिपदनी वक्तव्यता रेहां, जांखी अदृष्ट सरूप ॥ सा० ॥ धर्मा धर्म पदार्थनो रेहां, कथक अदृष्ट अनूप ॥ सा० ॥ ५ ॥ स्वर्ग मुक्ति गति साधना रेहां, हेतु प्रथमपद वाच्य ॥ सा० ॥ नरकादिक गति कर्षणें रेहां, बीजो हेतु अवा च्य ॥ सा० ॥ ६ ॥ कारण जुगपदनो कह्यो रेहां, एकज पद पर्याय ॥ सा० ॥ जाति प्रमुख अनेक छे रेहां, ते हना वाचक प्राय ॥ सा० ॥ ७ ॥ परिपाको रस ते दीये रेहां, चिंतित होये अकयत्न ॥ सा० ॥ शुज अशुजा दिक जावथी रेहां, द्ये परिणत फल सन्न ॥ सा० ॥ ८ ॥ अवश्यपणाथी तेहनी रेहां, शक्ति कही बलवंत ॥ सा० ॥ पूरवपक्ष विचारतो रेहां, हुइ निज वश तेह तंत ॥ सा० ॥ ए ॥ विषय कषाय वशें पड्या रेहां, ते न लहे तस व्यक्ति ॥ सा० ॥ न्यायें अशुज विजावनी रेहां, चाखे रस परिपक्ति ॥ सा० ॥ १० ॥ जाणो ज वेखे आपथी रेहां, सहज प्रत्यें परतीर ॥ सा० ॥ अ

हो अहो जननी मूढता रेहां, पीवे विष तजी खी र ॥ सा० ॥ ११ ॥ आज लगें नवि उलख्यो रेहां, नि र्मल सहज स्वजाव ॥ सा० ॥ जूली जमी जवमां घणुं रेहां, जिम जलनिधिमां नाव ॥ सा० ॥ १२ ॥ दाव नहिं चूकुं हवे रेहां, करवा निज उचितार्थ ॥ सा० ॥ जीनी परम संवेगमां रेहां, धारी इम श्लोकार्थ ॥ सा० ॥ १३ ॥ महबल पण तव ऊजग्यो रेहां, जवथी विषय विमुक्क ॥ सा० ॥ परिणति संयम सारनी रे हां, हुइ विहुंने अजिमुक्क ॥ सा० ॥ १४ ॥ विद्या शीखे शैशवें रेहां, यौवन साधे जोग ॥ सा० ॥ वृद्ध पणे व्रत आदरे रेहां, अंते अणसण योग ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ नीति पुराणें एहवुं रेहां, जांख्युं नृप कर्त्त व्य ॥ सा० ॥ महबल मन धारी इश्युं रेहां, सजग हुउ मन जव्य ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुत्र सहसबलनें ठवे रेहां, निजपाटें धरी प्रेम ॥ सा० ॥ सागरतिलकें थापीउ रेहां, पहेलो शतबल जेम ॥ सा० ॥ १७ ॥ मलया साथें उछवें रेहां, आवे सुगुरु समीप ॥ सा० ॥ पंच महाव्रत उच्चर्यां रेहां, विधिपूर्वक अवनीप ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ ढाल हूइ एकत्रीशमी रेहां, चोथे खंमे अहो

ष ॥ सा० ॥ कांति कहे सुणतां हुवे रेहां, अध्यातम रस पोष ॥ सा० ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ डुविहा शिक्षा पालतां, विहुं जण तप जप ली न ॥ कहे विहार महीतलें, थया सुगुरु आधीन ॥ १ ॥ गुरु आदेशें बिहुं जणां, जइ नंदननें पास ॥ वारे व्यसनथकी सदा, श्रीजिनधर्म प्रकाश ॥ २ ॥ आप कृतारथ मानता, बे बांधव नृप पूत ॥ मांहो मांहि सुशीखथी, थया नेह संजुत्त ॥ ३ ॥ विहुंनी श्रीजिन धर्मथी, नेदी साते धात ॥ वीजानें पण शीखवे, मा रग ते अवदात ॥ ४ ॥ राजरुषि महबल हवे, वहेतो व्रत असिधार ॥ आगमविद गीतार्थमां, हुवे शिरोमणि सार ॥ ५ ॥ एकाकी विचरण जणी, मागी गुरु आ देश ॥ कुरकी संबल महामुनि, विचरे देशविदेश ॥ ६ ॥ ॥ ढाल बत्रीशमी ॥ रमलां फाटो घाघरो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपशमधर मुनि सेहरो रे, सुरगिरि थिर परें चि त्त रे राजे ॥ सौम्यें रे जेह आगें पूरण चंड्मा रे ला जे ॥ १ ॥ सर्व सहे वसुधा समो रे, अप्रतिहत वा युनें रे तोलें ॥ कूजे रे परिसहथी जेहवो केसरी अ रुोलें ॥ २ ॥ आलंबन इहे नहीं रे, गगनपरें निरुपे

क रे आपें ॥ दीपे रे रवि जींपे ताजा तेजने प्रतापें ॥ ३ ॥ ब्रतनो जार उपाडवा रे, समरथ शकें जेह वो रे धोरी ॥ जाजे रे रागादिकना गढ सिंधुरा बल फो री ॥ ४ ॥ पंकज पत्र तणी परें रे, रहे निर्लेप सदैव रे रूडो ॥ दरियो रे गांजीयें जेहनें आगलें न ऊंडो ॥ ५ ॥ अंजन लेश धरे नहिं रे, निर्मल जेहवो शंख रे छाजे ॥ आवे रे जवसगें सूरिम आदरी रे गाजे ॥ ६ ॥ विहरंतो मुनि एकलो रे, सांज समय एक दि सनें रे टांणे ॥ आव्यो रे पुर सागरतिलकें उद्याणे ॥ ७ ॥ शतबल सुत ऋषि रायनो रे, राज करे तिहां राजवी रे शूरो ॥ वारे खड्ग धारें अरिनें न्यायमां रे पूरो ॥ ८ ॥ ते ऋषि निरखी ओलखी रे, हर्ष जयो वनपाल रे दोमी ॥ आव्यो रे नृपतिनें प्रणमी वीन वे कर जोमी ॥ ए ॥ देव महाबल साधुजी रे, आज जनक तुम पुण्यथी रे आव्या ॥ वनमां रे एकाकी सं यम योगमां रे जाव्या ॥ १० ॥ शतबल नृपति सुणी इस्युं रे, हरषवशें रोमांचयुं रे व्यापे ॥ प्रीतें रे वनपा लकनें मणिजूषणां त्यां आपे ॥ ११ ॥ अवनीपति चिं ते इस्युं रे, आज हुउ छे असूर रे माटे ॥ काले रे वां दीशुं मुकें ऋद्धिनें रे घाटें ॥ १२ ॥ धन्य धरा हुई मा

हरे रे, पावन ए पुर लोक रे वारू ॥ दीधो रे जे पुएयें जनकें आइने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पाडुका रे, मूकीनें नरनाथ रे वंदे ॥ त्यांहि रे अति जक्तें रातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग जेटिनो रे, खोजी ते निशि डुःखथी रे काढें ॥ प्रगम्यो रे हवे प्रगट्यो दिणयर दीपियो प्रगाढें ॥ १५ ॥ ढाल हुई बत्रीशमी रे, चोथे खंमें एह रे चोखी ॥ कांतें रे शुन्न शांतें जांखी रंगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जनपद पुर जटकंत ॥ दैवयोगथी डुक्कणी, तिण पुर आवी रहंत ॥ १ ॥ तेहिज दिन संध्या समे, काननमां गई काम ॥ दृष्टि पड्यो महबल मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम ॥ २ ॥ निरखी रूमें उंलखी, हुई महा जय जीती ॥ तेहिज ए सुत शूरनो, महबल मुनि अवनीत ॥ ३ ॥ मूलथकी ए माहरां, जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां कदे, तो माहारे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह जणी विरचुं इहां, तेहवो कोई उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं, मुज कुचरित्त पलाय ॥ ५ ॥ करुं उपेक्षा किम हवे, अनरथ चांपुं पाय ॥ नहिं मुज जीवत अन्यथा, वली

इण पुर न वसाय ॥ ६ ॥ दुष्ट चरित्रा एहवुं, धारी मन मां पाप ॥ कारज अवसर पख्खती, जई बेठी घर आप ॥

ढाल तेत्रीशमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ ए देशी ॥

सांज विहाणी पडी रातडीजी, व्यापिउं घोर अंधार ॥ तख तख्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिरण निशिचार ॥ सां० ॥ १ ॥ एकरूपें थया विश्वनाजी, जूजुआ वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलसमेजी, तमगुणें आप छल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता सुररमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी तेह अलि बांधियाजी, कमल काराघरें दीन ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ लोक निज निज घर विश्रमेजी, वली मल्या मार्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य पणे तेह जिम जार ॥ सां० ॥ ४ ॥ अगनी धुखंती ग्रही हाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्त्तिधर धर्म ज्यों थिर रह्योजी, काउस्सग्गें झलकंते देह ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जड्यांजी, संत व्यवहार विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, त्यांवि मुनि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं बाहिरंजी, निरखीयो शून्य वन जाग ॥ दुष्ट कनका लही आपणोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां० ॥ ७ ॥

काष्ट अंगारनें कारणेजी, किणहीकें थापिया आण॥ गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते मल्या टां ण ॥ सां० ॥ ७ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी, आवरे साधुनें तेम॥ चिहुं दिसें निरखतां साधुनुंजी, अंग दीसे नहीं जेम ॥ सां० ॥ ए ॥ विंटंतां साधुने काठशुंजी, आणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ दुरक संसारनेंजी, विंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व जव वैरथी तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सलगाकीयो चिहुं दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सां० ॥ ११ ॥ मुनिवरें काउस्सग्ग ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग मरणां त ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योग रस शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंरु चोथे खरी खांतशुंजी, एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे इहांजी, साधशे साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उद्दीप्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि वरनें तन पाखतें, खातो घूमणिघेर ॥ १ ॥ कोमल तनु रु बिराधनुं, चाले वन्हि तपंत॥ मूलथकी कनका तणां, जा णे सुकृत दहंत ॥ २ ॥ विकटोपद्रव पीरुता, सहेतो श्री रुषियोध॥ जागो निज आतम प्रत्यें, देवा इम प्रतिबोध॥

॥ढालचोत्रीशमी॥रागवंगाल॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी

॥ रे जीव क्रोधकूं दूरें डारि, शांतिदशासौं आप कौं तार॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप संजार ॥ मेरे आतमा ॥ हांरे रागादिककी संग निवार ॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर न उपाव, मत जूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ काल अनादिका जटक्या अनंत, अजुअ न पाया जवजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो फिरि न मिले औसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आठे जाव जिहाज, तर ले जवसागर विनु पाज ॥ ज्ञा० ॥ जावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रेर ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वजावें करिकें करार, जैसें पावें जवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ ङुःख पाय तैं नरक निगोद, करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा०॥ ४॥ ता ङुःख आगें या ङुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन ॥ ॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर इन उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काटन आयु, आइ जई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहिर तनकुं जारेंगी आगि, अन्यंतर तन नहीं इन लागि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सबोल, अ

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मेरे सब सौं होय, जीव सकलसौं वैर न कोय ॥ ज्ञा०॥ ७ ॥ आप खमाउं दोषरतीव, मोसौं खमहो सिगरे जीव ॥ ज्ञा०॥ ऐसे धरे मुनि निर्मल ध्यान, क्षपकावलीकै चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकौं प्रजारे निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्ल ध्यानानलको प्रयोग, अंतर बाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसौं नव उपग्राही कर्म्म, नस्म करें तिनुमें तजी नर्म्म ॥ ज्ञा० ॥ अंतगरु केवली व्है के साध, पायो सुगतिपद नयो हे अबाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, नवकौं जलां जलि दे निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खंमें राग बंगाल, चोतीसमी पूरी नइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कांतिविजय कहे देखहु खेल, समतासौं नयो कर्म उखेल ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय हुताशनें, हुउ जिव्हारें तेथ ॥ नाठी कनका पापिणी, बीहिती केथ अनेथ ॥ १ ॥ अहो दुष्टता नारिनी, विधि विरची विषसींची ॥ मारे अलवें अपरनें, तस रस सरवस खींचि ॥ २ ॥ मति जेहनी पग हेवले, दाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

करतां तेहनें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु हणतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ भांख्यो आगम मां इस्यो, तिर्थंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ भृष्ट हुई शुभ कर्मथी, दुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां, अष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवस्यो, अवनीपति सविलासो रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल भक्ति विलुद्धो रे ॥ जनक वदन जोवा भणी, उत्कंठित मन सूधो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आडंबरें, काननमां जब आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह भस्म मय थयो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयाथकी, महीपति दुःखमांहें भमियो रे ॥ भक्तें प्रीतें रे भोलव्यो, धसके धरा तल पमियो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें मार्यो रे राजवी, मूर्च्छांणो मन ऊणो रे ॥ सजग हुउं उपचारथी, पामे तव दुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ परिकर दुःखियो रे नृपदुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करता पट अभिषेको रे ॥ ॥ आ० ॥ ६ ॥ नृपति पभणे रे पापीये, किणे ए की

थुं अकाजो रे ॥ निर्जय निःकारण वैरीयें, उपसर्ग्यों मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ जवज्रमणथी रे डुर्मति, बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियकुं रे तेहनुं, वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ चरण तुमा रां रे तातजी, पामीनें पण डुहिलां रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥ आ० ॥ ए ॥ मीट तुमारी रे रस जरी, न पमी माहारे अंगें रे ॥ वचन तुमरां रे नवि सुएयां, वेशी क्षण एक रंगें रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी गंहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख हुउं मुज जेतो रे ॥ इण वेला मुज पापथी, थयो डुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हुं अनाथो रे ॥ सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांइ न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी, एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लहुं दी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूस्यो रे जनकनें, विलपे इंम जूपालो रे ॥ कांतें चोथा रे खंमनी, कही पणती समी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरित लोचन आंसुयें, खेदाकुल जूपाल ॥ निजजन नें इम आदिसे, करि भृकुटीनो चाल ॥ १ ॥ पग अनुसारें निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीनें पाप फल, आवे उदय विकट्ट ॥ २ ॥ आप हृदय ठाणे ठव्यो, बीजो डुष्ट परिणाम ॥ डुःप्रधर्ष रस सींचतां, ऊग्युं कटक विराम ॥ ३ ॥ मुनि हिंसा शाखाशतें, पाम्यो अति विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, वाध्यो चिहुं परवार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अभिमुख हूउं समक्ष ॥ हिंसकनें फलशे हवे, पोष्यो पातक वृक्ष ॥ ५ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ लाछलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी ततकाल, ऊठ्या नर मछराल, आज हो डुष्टा रे जण रूठा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां इत उत भूम, मांके सबली धूम, आज हो धारे रे अनुसारे पगनें तेहनेंजी ॥ २ ॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत कुंज निवेश, आज हो दीठी रे त्रिय धीठी पेठी खाकमांजी ॥ ३ ॥ नीचे मुख जयजीत, श्याम वसन अविनीत, आज हो बेठी रे उपरांठी काया गोपवीजी ॥ ४ ॥ सुहसें साही केश, काढी बाहिर देश, आज हो आणी रे कलुषाणी सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ भूपें तासी

जोर, पामंती मुख सोर, आज हो पूछे रे कहे शुं छे कारण वैरनुंजी ॥ ६ ॥ हणिउं तें महाजाग, मुनिवरनें इंणे जाग, आज हो जाखें रे तुज पाखें न करे को इस्युंजी ॥ ७ ॥ हणी घणी जूपाल, सींची तरुनी माल, आज हो जांखे रे सवि दाखे करणी आपणीजी ॥ ८॥ रुठो जूप तिवार, नानाविध देई मार, आज हो मारी रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥ए॥ आप चरितने योग, पामी फलनो जोग, आज हो छठी रे दुःख पूठी नरकें जपनीजी ॥ १० ॥ नरक तणा संताप, सहेशे अति दुःख आप, आज हो वक्रें रे जवचक्रें जमशे वापरी जी ॥ ११ ॥ चोथे खंके रसाल, बत्रीशमी एह ढाल ॥ आज हो कांतें रे जलि जांतें जांखी शास्त्रथीजी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूमिपाल निज तातनो, शोक अतीव करंत ॥ समजाव्यो सचिवादिकें, पण क्षण नवि छांमंत ॥ १ ॥ जाणी तेहवुं तातनुं, दुस्सह मरण विराम ॥ पमियो शोकसमुद्रमां, जूप सहसबल ताम ॥ २ ॥ शतबल दशशतबल बिन्हें, जनक शोक चित्त धारि ॥ लखमण राम तणी परें, तपे अरतिनें जार ॥ ३ ॥ कृष्णदेव वलिजद्रनें, द्वारावतीनें दाह ॥ शोक हुउ पितृनो जि

स्यो, तिस्यो हुउ इहां श्रांह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजरा जनें, जिसी अजाम्ी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो, विषम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सात्त्रीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ ए देशी॥

॥ एहवें निर्मल चरित्त पवित्ता, सत्य शील संतोष विचित्ता ॥ पालंती व्रत एक चित्ता, साध्वी मलया तप जुत्ता हो राज, महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्में नवि पमि बोहे हो राज ॥ म० ॥ १ ॥ एकादश अंगनी जाण, पामी शुन्न अवधिनाण ॥ नावंती थिर अप्पाण, संयम तव योग विहाण हो राज ॥ म० ॥ २ ॥ संदेह नविकना टाले, कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें नाले, महाबल निर्वाण निहाले हो राज ॥ म० ॥ ३ ॥ निज नंदन प्रतिबोधेवा, नवताप डुरंत हरेवा ॥ आवी तिण पुरि ततखेवा, होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज ॥ म० ॥ ४ ॥ साधुयोग वसतीनें ठामें, पशु पंकग रहित सुधामें ॥ साध्वीनें गण अनिरामें, विंटी रही आइ सुकामें हो राज ॥ म० ५ ॥ शतबल नृपति अति नक्तें, वांदे श्रावकनी युक्तें ॥ समजावा साध्वी युगतें, जिणथी पामे वली मुक्तें हो राज ॥ म० ॥ ६ ॥ राजेंद्र पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो, पाम्यो शिवसुखमह

मूरो हो राज ॥ म० ॥ ७ ॥ उपसर्ग्यो कनकवतीयें, न कस्युं मन कलुष व्रतीयें ॥ जवसागर तरतां तीयें, अवलंबन दीधुं त्रीयें हो राज ॥म० ॥ ७ ॥ धन पुत्र कलत्र गृह जार, जस कारण तजीयें सार ॥ तप लोच क्रिया व्यवहार, साधीजें विविध प्रकार हो राज ॥ म० ॥ ए ॥ सेवे जे गिरि वन घांटा, सहियें कटुक वचनना कांटा ॥ उपसर्ग उरगनी आंटा, खमीयें थई धीरजना सांटा हो राज॥म० ॥ १० ॥ डुर्लज ते पद तातें लाधुं, नीगमीयुं जवजय बाधुं ॥ हवे कां मन शोकें दाधुं, करे कांई वपुष ए आधुं हो राज ॥ म० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य हुउ मुनिराय, तिणें हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय, कांई शोक करे इणे ठाय हो राज ॥ म० ॥ १२ ॥ पोताना वाल्हो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शोक के हर्षज होई, कहे हियमे विचारी जोई हो राज॥म०॥ ॥ १३ ॥ विश्वानल पीमा तातें, सांसही होशे एह वातें ॥ चिंता म करे तिलमातें, जय अरथी खिति सहे गातें हो राज ॥ म० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहेलुं तिहां डुःख सहे बाधें ॥ निज कारज सिद्धि आराधे, तव आयत फल सुख लाधे हो राज ॥ म० ॥ १५ ॥ पहेलुं डुःख सघले दीसे, पाछें सुख संजव हीसे ॥ ई

म जाणीने विश्वावीशें, मन नाखे शोकमां कीसें हो राज ॥ म० ॥ १६ ॥ नेट्या नहीं चरण पिताना, मत कर इम नरि चिंताना ॥ पहेली परे हवणां दाना, तुज नक्तिना गुण नहीं ठाना हो राज ॥ म०॥ १७ ॥ शोक मूकीने हवे नूप, संसारनो नावि सरूप ॥ दृढ धारी विवेक अनूप, तज दूरें ए नवकूप हो राज ॥ म० ॥ १८ ॥ दुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुकार ॥ लखमी जिम वीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार हो राज ॥म०॥ १ए ॥ तुज सरिखा जो इम करशे, शोकाकुल हियरुं नरशे ॥ बापमलो किहां संचरशे, धीरज थानक विण फिरशे हो राज ॥म०॥ २० ॥ इम धर्म तणो उपदेश, निसुणी प्रतिबुज्यो नरेश ॥ ठंमे सवि शोक कलेश, संवेग लह्यो सुविशेष हो राज ॥ म० ॥ २१ ॥ प्रणमे नित्य नित्य नूपाल, महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥सामत्री शमी ए कही ढाल, चोथेखंम कांति रसालहोराज ॥ म०

॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना मुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥ करे महोन्नति धर्मनी, धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शतबल मुनि निर्वृतिथलें, मांम्यो नवल प्रासाद ॥ तात तणी प्रतिमा तिहां, थापे तजी विषवाद ॥ २ ॥

उत्सव रंग वधामणां, वर्त्तावे निशिदीश ॥ ल्ये लाहो लखमी तणो, अवसरविद अवनीश ॥ ३ ॥ सकल नगर लोकां प्रत्यें, करी महा उपगार ॥ नृपनें पूछी महत्तरा, तिहांथी करे विहार ॥ ४ ॥ पुहवीठाण महापुरें, लघु सुत बोधण काम ॥ समवसरी मलया महा, सती नमी नृप ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥ जांजरीया मुनिवर
धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीपति साधवी मुखेजी, निसुणी रे श्रीश्रुत धर्म ॥ सपरिवार जिन धर्ममांजी, थिर थयो प्रीछीनें मर्म ॥ १ ॥ गुणवंतो रे महीपति, जावी सहसबल नाम ॥ ए आंकणी ॥ दिन केताइक अंतरेंजी, शतबल नामें नरिंद ॥ महत्तरा वंदन जाणीजी, थयो उतकंठ असंद ॥ गु० ॥ २ ॥ लघु बांधवना प्रेमथीजी, आकरष्यो उमगंत ॥ आवे तिहां परिवारशुं जी, बे बांधव त्यां मिलंत ॥ गु० ॥ ३ ॥ बे बांधव दिन प्रत्यें जइजी, वांदी महत्तरा पाय ॥ सुणे धरमनी देशनाजी, मन थिरभावें ठहराय ॥ गु० ॥ ४ ॥ समकितधारी व्रतधरुजी, पूजितदेव त्रिकाल ॥ दानें पोषे पात्रनेंजी, जीवदया प्रतिपाल ॥ गु० ॥ ५ ॥ य

थाशक्ति तप आचरेजी, साहमीनी करे नक्ति ॥ दान
शाला मांके घणीजी, वारे अधर्म प्रसक्ति ॥ गु० ॥ ६ ॥
मारि शब्द जनपद थकीजी, काढे दूर तदंत ॥ वीतरा
ग आणा धरेजी, धारे चित्त विकसंत ॥ गु० ॥ ७ ॥
गाम नगर पुर पाटणेजी, थापे जिनना प्रासाद ॥ जि
नत्रवनें जिन बिंबनेंजी, पूजे अति आल्हाद ॥ गु० ॥
॥ ८ ॥ अठाइ महोत्सव करेजी, रथ यात्रा विरचं
त ॥ तीर्थ यात्रा आदें घणांजी, सुकृत अनेक करंत
॥ गु० ॥ ए ॥ धर्मनारना धुरंधरुजी, मांहो मांहि
सनेह ॥ शासननी उन्नति वधीजी, करता रहे तिहां
बेह ॥ गु० ॥ १० ॥ नृप अनुजाइ पुरतणाजी, लोक
सकल सेवे धर्म ॥ लोकोत्तर धर्मैं तिहांजी, ढांक्यो
लौकिक नर्म ॥ गु० ॥ ११ ॥ शुद्ध धर्ममां थापिनेंजी,
पुरजनने समजाई ॥ आपूछी बिहुं पुत्रनेंजी, अने
थि महत्तरा जाई ॥ गु० ॥ १२ ॥ घणा वरस लगें
पालीयुंजी, चारित निरतीचार ॥ तपोयोगध्यानें करी
जी, लघु कस्या डुरितना नार ॥ गु० ॥ १३ ॥ अंतें अण
सण आदरेजी, श्रीसती मलया नाम ॥ आराधीनें ऊ
पनीजी, अच्युत कल्पें ताम ॥ गु० ॥ १४ ॥ बावीश
सागर देवीनुंजी, पालीने निरुपम आय ॥ महाविदेहें

अनुक्रमेंजी, ऊपजशे शुनगाय ॥ गु० ॥ १५ ॥ बोधिन्नाव लहेशे तिहांजी, सुगुरु संयोग लहेवि ॥ शुद्ध चारित्र तिहां पमिवजीजी, लेहेशे मुगति सुखहेवि ॥गु० ॥१६॥ ढाल कही अमत्रीशमीजी, चोथा खंमनी एह ॥ कांति कहे मलया इहांजी, पामी नवतणो ठेह ॥ गु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनथकी, पामी मलया पार ॥ ते माटे संसारमां, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप रीक्षक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानाभ्यास ॥ डुहिलम संकट ऊरे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥ २ ॥ संकटमां पण पालीयुं, जिम मलयायें शिल ॥ तिम वली बीजो पालशे, ते लेहेशे शिवलील ॥ ३ ॥ महाबलें जिम सांसह्यो, मोहा विषम उपसर्ग ॥ तिम वली जे सहेशे खरो, लेहेशे ते अपवर्ग ॥ ४ ॥ जिम प्रथम व्रत आदस्यां, दंपतीयें दृढ चित्त ॥ आदरवां तिम नावथी, बीजे पण सुपवित्त ॥ ५ ॥ कीधी मुनि आशातना, दंपतीयें धुर जेम ॥ डुख हेतु जाणी तिसी, करशो मां कोई तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामाजीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ नावे नावे रे नवि करजो ज्ञान अन्यास ॥ ज्ञानें

संकट कोमि पलाये, ज्ञानें कुमति न बाधे ॥ ज्ञानें सु जॅश लहे जगमांहीं, ज्ञानें शिवपद साधे रे ॥ नवि क रजो ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां, मुगति हेतु जिन नांख्युं ॥ तोपण योगक्षेमनुं हेतु, पहेलुं ज्ञानज दाख्युं रे ॥ न० ॥ २ ॥ पासतणा नि र्वाण दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे हुई सत्य शील सलूणी, मलया सुंदरी सुविवेक रे ॥ न० ॥ ३ ॥ श्लोक एकनो नाव विचारी, तेह लही नवपार ॥ ते कारण शिवसाधन साचुं, ज्ञानज एक उदार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ शंख नरेश्वर आगें पहेलुं, श्री केशीगणधारें ॥ मलय चरित नांख्युं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें रे ॥ न० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व लेई, श्रीजय तिलक सूरींदें ॥ नूतन मलयचरित्त संक्षेपें, नांख्युं अति आनंदें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति नामें, त्रण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि इम संबं ध सूधो, धुर अधिकारें लीधो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीत पगण गणनायक गिरुआ, श्रीविजयप्रन्न सूरि ॥ गुण वंता गौतम गुरु तोलें, महीमां महिमा सनूर रे ॥ न० ॥ ७ ॥ तास शिष्य कोविदकुल मंकन, प्रेमविजय बु ध राया ॥ कांतिविजय तस शिष्यें इणि परें, विध विध

नाव बनाया रे ॥ न० ॥ ए ॥ संवत सर मुनि मुनि
धु (१७७५) वर्षे, रही पाटण चोमास ॥ श्रीविजयद
मा सूरीश्वर राज्यें, गाई मलया उल्लास रे ॥ न० ॥ १०
अखा त्रीज तणे शुन दिवसें, रास हुउं सुप्रमाण ।
बालकक्रीमानी परें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे
॥ न० ॥ ११ ॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यून
धिक कांई नांख्युं ॥ संघ सकलनी साखें तेहनुं, मि
छाडुक्कम दाख्युं रे ॥ न० ॥ १२ ॥ उत्तमना गुण
परिचय करतां, होय समकितनो शोध ॥ उत्तर लान
अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे ॥ न० ॥ १३ ॥
पाटण नगरनो संघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी
चिहुं खंमें थई सर्व संख्यायें, ढाल एकाणुं कीधी
॥ न० ॥ १४ ॥ जे नवि नावें नणशे गुणशे, लेहेशे
जयमाल ॥ उंगुणचालीशमी कही कांतें, चोथा खं
नी ढाल रे ॥ न० ॥ १५ ॥ सर्व श्लोक संख्या ॥ ३४००

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलय
दरीचरित्रेपंमितकांतिविजयगणिविरचितेप्राकृतप्रबं
शीलावदातपूर्वनववर्णनोनामाचतुर्थखंमः परिसमाप्तः